



सम्पदा भारती



रक्षा सम्पदा संगठन
Defence Estates Organisation

17वां अंक



रक्षा सम्पदा महानिदेशालय



‘सम्पदा भारती’ पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविता, कहानी आदि में प्रस्तुत विचार रचनाकारों का सृजन-क्षेत्र है। उनसे किसी प्रकार की समानता संयोग मात्र है।

संपर्क सूत्र
राजभाषा अनुभाग, रक्षा सम्पदा महानिदेशालय
रक्षा सम्पदा भवन, उलान बाटर मार्ग
दिल्ली छावनी - 110010
दूरभाष: 011 - 25674970
फैक्स: 011 - 25674965
ई-मेल: rajbhasha-dgde@gov.in
dgdehindi2013@gmail.com

सम्पदा भारती

17 वां अंक

प्रधान संरक्षक

जी एस राजेस्वरन
महानिदेशक, रक्षा सम्पदा

संरक्षक एवं परामर्शदाता

राजेंद्र पवार
अपर महानिदेशक (राजभाषा)

संपादक

चारू तिवारी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सम्पादन सहयोग

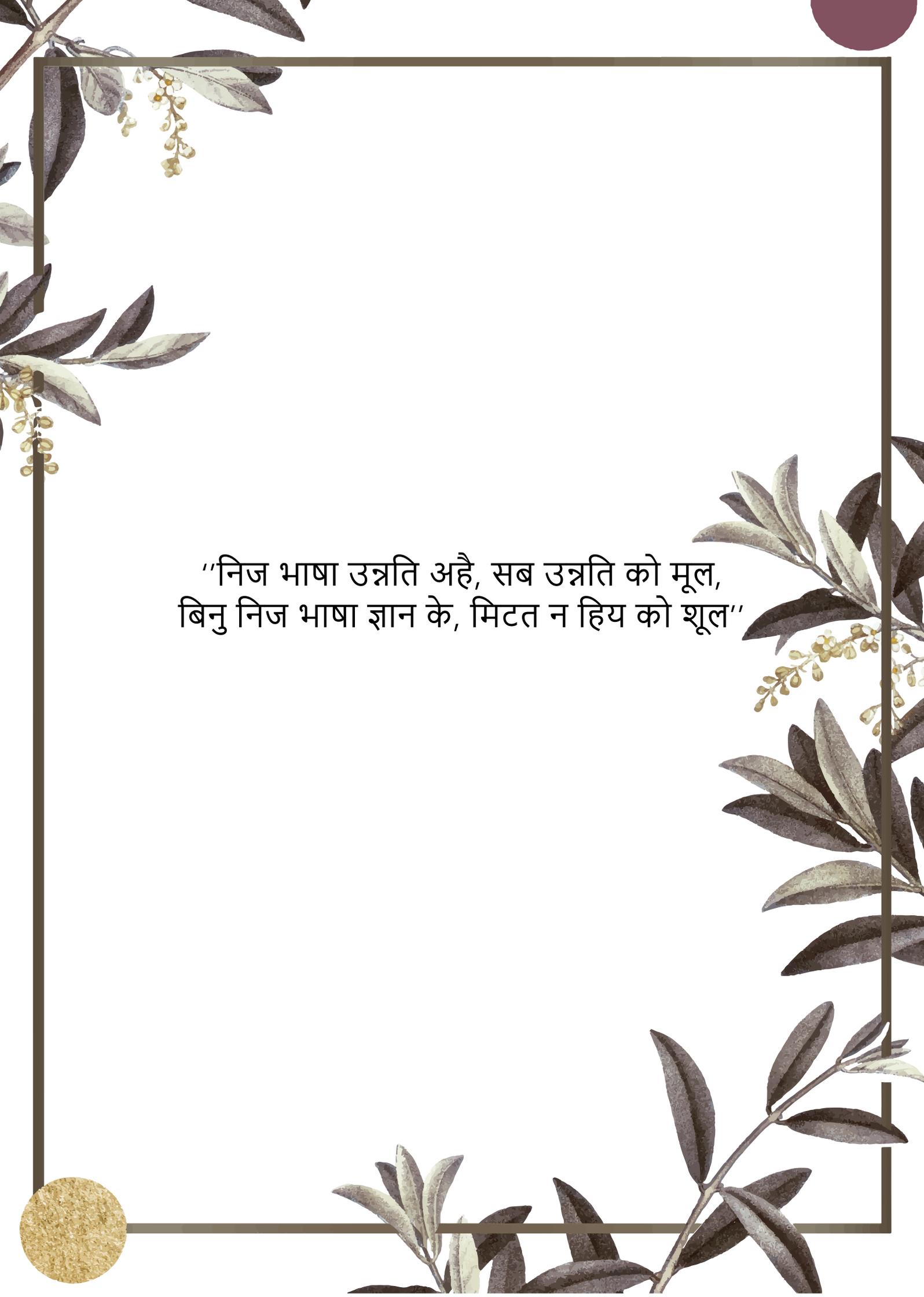
तेजराज सिंह, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
प्रतिभा पारूल, डाटा एंट्री ऑपरेटर

कार्यालय सहयोग

सुनील कुमार, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
भल्ला राम मीना, एम टी एस

साज-सज्जा एवं प्रकाशन

प्रदीप मिश्र, प्रोग्रामर (सूचना प्रौद्योगिकी अनुभाग)



“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल”



सत्यमेव जयते



एक संवाद : महानिदेशक रक्षा सम्पदा

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय की वार्षिक गृह पत्रिका 'सम्पदा भारती' के 17वें अंक के प्रकाशन की हार्दिक बधाई।

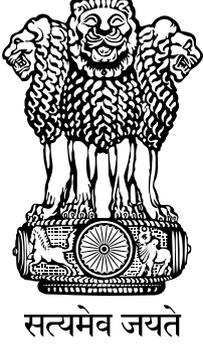
किसी भी लोकतान्त्रिक देश की पहचान वहाँ व्याप्त स्वातंत्र्य भाव बोध से होती है। इसमें भाषा की भूमिका प्रमुख है। भाषागत सरलता, जमीन से जुड़ी भावप्रवणता हमारी भाषाओं के पल्लवन, विकसन के महत्वपूर्ण सोपान है। भाषाओं की पुष्टि, क्षेत्र विशेष में व्याप्त ठोस सांस्कृतिक उन्नयन के साथ स्थानीय नागरिकों के भाषा - प्रयोग के प्रति प्रबल आग्रह के साथ और गहरी होती जाती है। यही बात हिन्दी पर भी लागू है। हम अपने कार्यालयीन दैनिक कार्य में हिन्दी का प्रयोग जितना करेंगे उतना ही सरल, सहज ढंग से उसमें कार्य करने की ओर प्रवृत्त होंगे। इस क्षमता से हम हिन्दी के साथ अपने परिचय को और भी प्रगाढ़ कर सकते हैं। शर्त सिर्फ यही कि इस तादात्म्य, तारतम्य में व्यवधान की अनुमति कम से कम दें।

इस दृष्टि से यदि देखें तो महानिदेशालय की नवप्रकाश्य पत्रिका 'सम्पदा भारती' कार्यालय की राजभाषायी दायित्व निर्वहन का एक सफल नमूना है। पत्रिका का कलेवर, भाषा, शैली, शिल्प सभी भाषा के उच्चतम मानकों को बनाए रखने की दिशा में अग्रसर है। कार्यालयीन कामकाज की दृष्टि से भाषा मानकों पर खरा उतरना थोड़ा दुष्कर कार्य है, किन्तु मुझे खुशी है कि हमारे रचनाकारों ने पूरे आत्मविश्वास के साथ भाषा आभिजात्य के प्रति संवेदी होते हुए अपनी प्रतिभा दर्शाई है।

मैं पत्रिका सम्पादन से जुड़े अधिकारियों/कार्मिकों के प्रयासों की सराहना करता हूँ और सभी रचनाकारों को भी उनकी रचनाओं के लिए साधुवाद देता हूँ।

जय हिन्द!

जी. एस. राजेस्वरन
जी.एस. राजेस्वरन



संदेश : वरिष्ठ अपर महानिदेशक महोदया

आप सब को रक्षा सम्पदा महानिदेशालय महानिदेशालय की गृह पत्रिका सम्पदा भारती के 17वें अंक के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएँ।

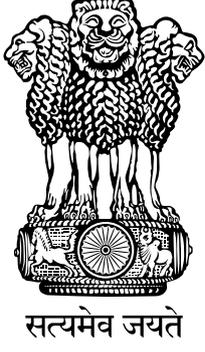
भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का महात्मय यहाँ के नागरिकों की भाषा, विचार, परिवेश, वेशभूषा सभी के वैचित्र्य को समेटते हुए 'एक विराट मत' में निहितार्थ है।

हमारी भाषाओं का विकास देश भर में व्याप्त सांस्कृतिक बोधभाव के साथ हुआ है। इसमें भाषाओं की शब्दाव-लियों, पदों, वाक्य - विन्यासों और व्याकरणिक नियमों को स्थानीय पहचान के साथ जोड़ते हुए आत्मसात करना शामिल है।

मेरा मानना है कि किसी भी भाषा की दुरूहता उसके स्वीकारीकरण में अवरोध का काम करती है। हमें हिन्दी में काम काज करते हुए यह ध्यान रखना है कि भाषा के संस्थागत ढांचे पर आघात किए बगैर सरल सहज भाषा में कार्य व्यापार किया जाए। हमारे कार्मिक हिन्दी प्रयोग के दौरान शब्दों, वाक्य विन्यासों और भाषा शैली से परिचित होते हैं और सरल सहज ढंग से अपना कार्य मौलिक हिन्दी में करने का प्रयास करते हैं। मुझे खुशी है कि महानिदेशालय अपने भाषागत दायित्वों का निर्वहन गंभीरता से कर रहा है। यह पत्रिका के कलेवर, साज सज्जा तक में दिखाई पड़ता है। आवश्यकता इन प्रयासों को बनाए रखने की है।

अंत में रचनाकारों को शुभेच्छाएँ एवं सम्पदा भारती पत्रिका के सम्पादन से जुड़े अधिकारियों कार्मिकों को साधुवाद।


मौना बलिमने शर्मा



संदेश : अपर महानिदेशक राजभाषा

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय की वार्षिक गृह पत्रिका "सम्पदा भारती" के 17वां अंक का प्रकाशन हम सभी के लिए हर्ष का क्षण है। पत्रिका के माध्यम से सभी से जुड़कर हम अपनी राजभाषा के प्रति दायित्व निर्वहन की झलक व्यापक मंच पर सामने ला पाते हैं। महानिदेशालय ने विगत 17 वर्ष से सम्पदा भारती पत्रिका का प्रकाशन सफलतापूर्वक किया है, जो एक तरह से राजभाषा की संवर्धन दिशा में ठोस उपाय है।

मैं इस बात से पूरा इत्तफाक रखता हूँ कि भारतीय संस्कृति में उत्तम जीवन के परिचालक मानक, जो पवित्र, शांतचित्त और संतुष्ट होने के साथ आनंदमय भी हो, हमारी पत्रिका के रचना कलेवर में भी लाने के प्रयास लगातार किये जाते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन में यदि कार्मिकों की भागीदारी सक्रिय रूप से दिखाई दे तो समझना चाहिए हम सही दिशा में काम कर रहे हैं। पत्रिका के सुलभ मंच पर यह संवाद पुरजोर तरीके से मुखर होता है। राजभाषा के विकास और उसमें पैठ को आसान बनाने में सभी के सम्मिलित और समर्पित प्रयास नए मानक समर्पित करने में सहायक होंगे। ऐसा मेरा विश्वास है।

हिन्दी के समुचित प्रयोग में महानिदेशालय द्वारा किए जा रहे उपाय सही दिशा में जा रहे हैं इसकी एक झलक माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा रक्षा सम्पदा संगठन के अधीनस्थ कार्यालयों के राजभाषायी निरीक्षण कार्यक्रमों की सफलता में देखी जा सकती है।

अपने स्तर पर भी महानिदेशालय सभी नीतिगत मामलों जैसे प्रोत्साहन योजनाएँ, कार्यशालाओं का आयोजन, अधीनस्थ कार्यालयों का लक्ष्यानुसार निरीक्षण इत्यादि कार्यनिष्पादन कर रहा है साथ ही 'नराकास' कार्यालय सूची में 'उत्कृष्ट कार्यालयों की सूची' में अपना स्थान सुरक्षित कर हमारे दावों को ये तथ्य और भी पुख्ता कर रहा है।

ये प्रयास जारी रहने चाहिए तभी राजभाषा नीति के सुदृढ़ अनुपालन में महानिदेशालय की महती भूमिका एक उदाहरण बन सकेगी। अंत में पत्रिका रूपाकार से जुड़े सम्पादक मण्डल को उनके प्रयासों के लिए साधुवाद!

सभी रचनाकारों को भी उनकी रचनाओं के लिए हार्दिक शुभकामनाएं!

जय हिन्द!

राजेंद्र पवार
राजेंद्र पवार



संपादकीय

साथियो

कथा काल खंड एक छोटी अवधि तक ही सीमित नहीं होता, समय सीमाओं से परे उसकी समसमायिकता किसी न किसी रूप में प्रत्येक काल खंड में परिलक्षित होती है। भावों का संस्कार पर अमिट प्रभाव पड़ता है। कठिन अनुशासन में आबद्ध बाल मन पर ये संस्कार पहले तो रूटीन परिपाटी के रूप में अपना प्रभाव डालते हैं फिर मन भाव के साथ रूढ़ हो मस्तिष्क में भी ठोस नियम के रूप में आरूढ़ हो जाते हैं। साहित्य इसी मन भावप्रवणता के संरक्षण और संवर्धन का कार्य करता है। बाल मन की रुढ़ियों, परम्पराओं का अनवरत क्रम बड़े होने पर उसके लिए रचना संसार खोलता है जो उसकी रचनाधर्मिता को पुष्पित पल्लवित करता है।

कार्यालयों की गृह पत्रिकाएँ भी उसी मानव मन की सर्जनात्मक गतिविधि का विस्तार करती हैं। क्योंकि कार्यालयी समय पश्चात् हमारा कार्मिक भी तो एक सामान्य जन की भाँति दैनादिन कार्यकलाप सम्पन्न करता है। और इस समय का पूरा उपयोग करते हुए वह भाषा विशेष की संरचना और शब्दों के जादू में डूबता हुआ रचना संसार बनाता है। यहाँ बात हिन्दी की हो रही है। हिन्दी की सरलता सहजता उनकी रचना प्रतिभा को उजागर करने में पूरा सहयोग देती है।

मुझे हर्ष के साथ गर्व की भी अनुभूति हो रही है कि हम 'सम्पदा भारती' पत्रिका का 17 वां अंक प्रकाशित कर रहे हैं। इसे महानिदेशालय की झलक के रूप में देखा जाना चाहिए। पत्रिका में शामिल लेखों के शीर्षक ही उनकी versatility को दर्शा रहे हैं। यहाँ कुछ लेख मानसिक स्वास्थ्य, Artificial Intelligence पर आधारित हैं वहीं यात्रा संस्मरणों के वृतांत से तो हम उसी प्रदेश विशेष में रचनाकारों के साथ भ्रमण कर रहे हैं। यह हमारे लेखकों की सुदृढ़ लेखनी का ही कमाल है कि पूरा तथ्य वाक वैतक्य के साथ उभर कर सामने आया है।

पत्रिका का समापन क्रांतिकारी कवि 'दुष्यंत कुमार' की कविताओं से किया गया है। यह हमारी ओर से उनको याद करने का एक निमित्त मात्र है। इन महान कवियों की याद बनाए रखने, उन्हें अपनी यादों में सहेजने का इससे अच्छा माध्यम हो नहीं सकता। यह हमारा दायित्व भी है और अधिकार भी।

अंत में पत्रिका के रूपाकार में समर्पित सभी रचनाकारों समेत राजभाषा अनुभाग का भी आभार। आप सबके अनथक प्रयासों से ही हम ये यात्रा सुगमता पूर्वक कर पा रहे हैं।

धन्यवाद !

चारु तिवारी
सहायक निदेशक

माननीय रक्षा राज्य मंत्री का महानिदेशालय, रक्षा सम्पदा का दौरा



अनुक्रमणिका

क्र सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	भाषा का व्यवहार्य जन्य प्रयोग : कुछ कारक	तेजराज सिंह	12
2.	भारत के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर	रोहित	13
3.	आधुनिक जीवन शैली	सुनील कुमार	14
4.	महिलाओं को वोट देने का अधिकार	शशि गोदवाल	15
5.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य (लेख)	दीपक कुमार तिवारी	17
6.	लानीनो और एलनिनो (लेख)	पवन कुमार तिवारी	22
7.	हमारी महिला पुरोधा (लेख)	प्रतिभा पारूल	25
8.	परकटी आंटी (कहानी)	कुलदीप कौर	26
9.	नसीहत में फजीहत (कहानी)	दिपेन्द्र कुमार मीना	27
10.	लोकतंत्र की विजयगाथा (लेख)	भल्ला राम मीना	28
11.	पहली तनखाह (कहानी)	हेमंत कुमार पांडे	29
12.	पत्तल (लेख)	सौरभ सूद	30
13.	कोविड -19 महामारी : प्रभाव एवं बचाव (लेख)	विक्रम सिंह	31
14.	कहने की महत्ता (लेख)	चारू तिवारी	32
15.	रास्ता कैसा भी हो कट जाएगा (कविता)	तेजिंदर दत्त फुलारा	33
16.	साहसी खरगोश गुल्लू पांडा (लंबी कविता)	मनीष कुमार श्रीवास्तव	34
17.	लहरों- सी उलझन (कविता)	मनीष कुमार श्रीवास्तव	35
18.	प्रयास (लघु कविता)	अरूण कुमार	35
19.	बचपन (लघु कविता)	अरूण कुमार	36
20.	उम्र का तकाजा (कविता)	अमोल भगवान मोरे	37
21.	सूरज की किरणें (लघु कविता)	शालिनी	37
22.	शिक्षित बेरोजगारी एक विकट समस्या (लेख)	संदीप बी. मेश्राम	38
23.	सच्चा सुख (कहानी)	प्रोमिला सिंह	39
24.	चुटकुले	रूपाली सोलोमन	40
25.	गाँव में नीम कम हो रहे हैं परंतु कड़वाहट बढ़ रही है (लेख)	निलेश साहू	41
26.	समस्याएँ (कहानी)	सूरज सैनी	42
27.	माँ वैष्णो देवी की प्रथम यात्रा और अनुभव (संस्करण)	पूनम रस्तोगी	43

क्र सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
28.	आश्रित ज़िंदगी का कोई अस्तित्व नहीं होता (लेख)	संजय कुमार श्रीवास्तव	44
29.	दुनिया का आठवां खूबसूरत आश्चर्य : भारतीय लोकतंत्र (लघु कहानी)	आराधना साव	45
30.	अभिव्यक्ति (कविता)	अचला शौरी	46
31.	ठंडी छाव	पूजा पांडे	47
32.	उदयपुर की यात्रा	नरेश कुमार	48
33.	प्रेरक प्रसंग (कहानी)	तेजिंदर दत्त फुलारा	50
34.	समय, सेहत और संबंध (लेख)	कविता	51
35.	नारी सशक्तिकरण (लेख)	राजकुमार	52
36.	धरती का जन्नत - कश्मीर (यात्रा वितंत)	साहिना खातून	53
37.	मुस्कराता हुआ हर चेहरा (कविता)	विपिन कुमार	55
38.	बस इतना ही काफी है (कविता)	राजश्री रसाल	56
39.	बचपन की वो यादें (कविता)	संजय शंकर चौरे	57
40.	मसालों की दुनिया (स्वाद से सेहत तक) (लेख)	सीमा बक्शी	58
41.	बच्चों के लिए स्मार्ट फोन एक अभिशाप (लघु लेख)	मधुलिका श्रीवास्तव	60
42.	ज़िंदगी की रफ्तार (कविता)	ईशा सरीन डडवाल	61
43.	प्रेम से बढ़ा कोई नहीं (लघु कहानी)	सुजाता चट्टोपाध्याय	62
44.	एवरेस्ट बेस कैम्प में बिताए हुए कुछ दिनों का अनुभव (यात्रा वृतांत)	के.र.दत्ता	63
45.	भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र एक चिंतन (लघु कहानी)	अशोक पासवान	66
46.	गुड़िया मेरी तुम सुरक्षित हो (कविता)	अश्विनी शामगीर गोस्वामी	67
47.	यारो हम मार्केट जाएंगे (कविता)	नरेंद्र चौहान	68
48.	डिजिटल दुनिया में खोया परिवार (लघु लेख)	प्रगति पोरवाल	69
49.	महाराणा संग्राम सिंह: मेवाड़ का शेर (लेख)	प्रदीप मिश्र	70
50.	कविता संग्रह	राजभाषा अनुभाग	74
51.	हिन्दी पखवाड़ा – 2023 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता		78
52.	राजभाषा अनुभाग के कार्यकलाप		80

भाषा का व्यवहार्य जन्य प्रयोग : कुछ कारक

भाषा का व्यवहार प्रयोग जन्य होता है। भाषा में सोचना, बोलना, लिखना जितना ज्यादा होगा उसका विकसित रूप शब्दों, वाक्यों, पद विन्यास, तुकबंदी सभी में मुखर होता चला जाएगा। अर्थात् भाषा का भाषिक प्रयोग ही उसकी दिशा-दशा तय करता है। भाषा के बाहरी स्वरूप में चाहे कितने ही उतार - चढ़ाव आए, पर मूल बना रहे तो, उसकी व्यावहारिक संरचना पर कोई भी आघात इतना घातक नहीं होगा कि उसके स्वरूप के पैमाने बदल दे। भाषा का 'नाद' शोर नहीं है लयता भाषा के रूपाकार को गहरे तथ्य तक जोड़ती है। सामान्य जन इस लयात्मकता के सहारे भाषा के रूप-विधान को आत्मसात करता उसके व्याकरण में आबद्ध होता हुआ अपने को मुखरित करता है।

भारत विशाल भू-भाग में स्थित विपुल आबादी वाला देश है। संविधान में उल्लिखित अष्टम अनुसूची अनुसार 22 भाषाओं में लिखा और वाचिक साहित्य भारतीय साहित्य हो गया। जम्मू कश्मीर से कन्याकुमारी तक, हर क्षेत्र अलग-अलग रीति रिवाजों, सांस्कृतिक परम्पराओं और मातृभाषाओं को चित्रित करता है। अनेक भाषाएँ और प्राचीन लिपियाँ हमेशा से ही यहाँ विद्यमान रही हैं। 2011 की जनगणना विश्लेषण रिपोर्ट के अनुसार, भारत में 19,500 से अधिक भाषाएँ या बोलियाँ मातृभाषा के रूप में बोली जाती हैं। इनमें 1635 तर्क संगत मातृभाषाएँ, 234 पहचान योग्य मातृभाषाएँ और 22 प्रमुख भाषाएँ हैं इनमें से 29 भाषाओं में दस लाख से अधिक देशी वक्ता है, 60 भाषाओं में 100,000 से अधिक और 122 भाषाओं में 10,000 से अधिक देशी वक्ता है।

इन सर्वोपरि भाषाओं में स्वतन्त्रता प्राप्ति पश्चात यदि शासकीय भाषा की बात करे तो हिन्दी को प्रारम्भ से ही राजभाषा के पद पर आसीन रखने में संविधान सभा की सहमति रही। यहाँ सवाल भाषा के स्वीकारीकरण अथवा उसके परिमार्जन का नहीं है बल्कि भाषा के विकास को अंतर्निहित करने वाले भाषा के मूल स्वरूप कारकों की पहचान तथा उनके विकसन को प्रोत्साहित करना भी जरूरी रहा। ये बात वैसे सभी भाषाओं पर लागू है। शुरू से ही संविधान सभा हिन्दी की व्यवहार्य प्रयोगजन्य सुभीता को ध्यान में रखकर इस एकमत राय पर चली कि संघ की शासकीय भाषा हिन्दी ही होगी। भाषा प्रयोग में यह तथ्य ध्यान रखना चाहिए कि भाषा के परिमार्जन विषय पर समाज में ही कितने अंतर्विरोध, जड़ताएँ गुँथी हुई हैं उनके आलोक में ही प्रयोगजन्य व्यवहार्य भाषा को समझकर ही किसी भी भाषा-विकास शाखा में आगे बढ़ा जा सकता है।

हम और आप भाषा के किस रूप को पहचानते हैं, मानते हैं यह इस बात पर निर्भर है कि हम किस परिवेश में रह रहे हैं। हमारे आस-पास का समय किस बोली, भाषा को तरजीह देता है। हम सभी अपने इस सांस्कृतिक बिंब में उलझते हुए भी भाषा के स्वीकृत रूप को आगे बढ़ाते हैं ज्यादा सोचते नहीं। एक साधारण श्रोता, वक्ता के रूप में तो यह धारणा भाषा को लेकर सही है किन्तु जब बात भाषा के विशुद्ध मानक रूप की आती है वहाँ भाषाविज्ञों की भूमिका और गंभीर हो जाती है। भाषा विज्ञ अपने परिवेश काल से आक्रांत हुए बगैर भाषा की उत्तरोत्तर वृद्धि हेतु जिम्मेदार कारकों के सृजन, उनके चयन प्रयोग और अनुप्रयोग के प्रति आग्रह को लगातार ध्यान में रखते हुए इस वृहद कार्य को पूरा करते हैं। भाषा विकास के क्षेत्र में भाषाविज्ञों के योगदान को किसी भी कोण से नकारा नहीं जा सकता।

भाषा के इस व्यवहार्यजन्य प्रयोग बाध्यता के पैमाने को भाषाविद की राय सहमति के साथ ठोस रूपाकार मिलता है। भाषाविद मानक और परिष्कृत भाषा मानकों के रूप-विधान का गठन कर उसके व्याकरणिक उदबोध को बांधता है, नियमों में आबद्ध करता है। हिन्दी की वैश्विक स्थिति पहले देशज स्तर पर ही इतनी गुँथी और जटिल सामाजिक परिवेश से जुड़ती रही है कि अस्तित्व के एकाधिकार को लेकर लगातार प्रश्न चिन्हों से दो-चार होती रही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व ही हिन्दी के विकास और उसके परिष्कार का आग्रह विद्वानों की चिंता का सबब बन गया था। इसलिए संविधान सभा ने एक राय से हिन्दी को संघ की शासकीय भाषा के रूप में मान्यता दी और शासकीय भाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग का आग्रह राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर पूरे प्रभावों के साथ विकसित हो रहा है।

भाषिक प्रतिमानों के प्रबल आधारों को अपनाते हुए प्रत्येक भारतीय, चाहे उसकी मातृभाषा कोई भी हो, भाषा की सामाजिक और भाषिक पहचान के प्रति सचेत रहते हुए हमेशा ही उसके परिष्कृत version को लेकर थोड़ा possessive भी रहता है। भाषा दायरे के व्याकरणिक फ्रेम में उसका आग्रह सांस्कृतिक और तत्सम विधान को ही लगातार पुष्ट करता रहता है। शायद यही किसी भी भाषा प्रेमी के सचेत भाषा प्रेम और लगातार प्रयोगजन्य व्यवहार्य को पुष्ट करने वाले प्रतिमान है।

यदि हिन्दी की बात करें तो सभी पूर्वाग्रहों, और जटिलताओं को दरकिनार करते हुए हिन्दी की विकास दिशा में ठोस पूर्वापाय किए गए, जिनसे साहित्यिक और गैर साहित्यिक क्षेत्रों में हिन्दी के पल्लवन का कार्य सुदृढ़ रूपाकार लेता चला गया। यह आरंभ से ही होता आया। हालांकि शासकीय रूप में हिन्दी के प्रयोग का आग्रह स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से पूर्व ही शुरू हो गया था जब हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने हिन्दी के प्रयोग पर बल दिया। आज हम जिस हिन्दी को पहचानते

है वह देशज हिन्दी के परिष्कृत रूप में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर भाषा की स्वीकार्यता को गहरे तक अपनाने में दिखती है।

तेजराज सिंह
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

भारत के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर

डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर (1891-1956) का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के महु छावनी में हुआ था। उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा सतारा, महाराष्ट्र में पूरी की और बॉम्बे के एल्फिंस्टन हाई स्कूल से अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी की। उनकी शिक्षा काफी भेदभाव का सामना करते हुए हासिल की गई थी, क्योंकि वे अनुसूचित जाति (तब 'अछूत' माने जाते थे) से थे। अपने आत्मकथात्मक नोट 'वेटिंग फॉर ए वीजा' में, उन्होंने याद किया कि कैसे उन्हें अपने स्कूल में आम पानी के नल से पानी पीने की अनुमति नहीं थी, उन्होंने लिखा था, "कोई चपरासी नहीं, कोई पानी नहीं"।

डॉ. अम्बेडकर ने 1912 में बॉम्बे विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान में बी.ए. की डिग्री प्राप्त की। कॉलेज में उनके बेहतरीन प्रदर्शन के कारण, 1913 में उन्हें बड़ौदा राज्य के तत्कालीन महाराजा (राजा) सयाजीराव गायकवाड़ द्वारा छात्रवृत्ति प्रदान की गई, ताकि वे न्यूयॉर्क, यूएसए में कोलंबिया विश्वविद्यालय में एम.ए. और पी.एच.डी. कर सकें। 1916 में उनकी मास्टर थीसिस का शीर्षक था "ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रशासन और वित्त"। उन्होंने "भारत में प्रांतीय वित्त का विकास: शाही वित्त के प्रांतीय विकेंद्रीकरण में एक अध्ययन" पर अपनी पी.एच.डी. थीसिस प्रस्तुत की।

कोलंबिया के बाद डॉ. अम्बेडकर लंदन चले गए, जहाँ उन्होंने अर्थशास्त्र का अध्ययन करने के लिए लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स एंड पॉलिटिकल साइंस (LSE) में पंजीकरण कराया और कानून की पढ़ाई के लिए ग्रेज़ इन में दाखिला लिया। हालाँकि, धन की कमी के कारण, उन्हें 1917 में भारत लौटना पड़ा। 1918 में, वे मुंबई (तत्कालीन बॉम्बे) के सि-डेनहैम कॉलेज में राजनीतिक अर्थव्यवस्था के प्रोफेसर बन गए। इस दौरान, उन्होंने साउथबोरो समिति को सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की मांग करते हुए एक बयान प्रस्तुत किया।

1920 में, कोल्हापुर के छत्रपति शाहूजी महाराज से वित्तीय सहायता, एक मित्र से व्यक्तिगत ऋण और भारत में अपने समय की बचत के साथ, डॉ. अम्बेडकर अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए लंदन लौट आए। 1922 में, उन्हें बार में बुलाया गया और वे बैरिस्टर-एट-लॉ बन गए। उन्होंने LSE से MSc और DSc भी पूरी की। बाद में उनकी डॉक्टरेट थीसिस "रुपये की समस्या" के रूप में प्रकाशित हुई।

भारत लौटने के बाद, डॉ. अम्बेडकर ने बहिष्कृत हितकारिणी सभा (बहिष्कृतों के कल्याण के लिए समाज) की स्थापना की और 1927 में महाड़ सत्याग्रह जैसे सामाजिक आंदोलनों का नेतृत्व किया, जिसका उद्देश्य भारतीय समाज की ऐतिहासिक रूप से उत्पीड़ित जातियों के लिए न्याय और सार्वजनिक संसाधनों तक समान पहुँच की मांग करना था। उसी वर्ष, उन्होंने एक मनोनीत सदस्य के रूप में बॉम्बे विधान परिषद में प्रवेश किया।

इसके बाद, डॉ. अम्बेडकर ने 1928 में संवैधानिक सुधारों पर भारतीय सांविधिक आयोग, जिसे 'साइमन कमीशन' के नाम से भी जाना जाता है, के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत किये। साइमन कमीशन की रिपोर्टों के परिणामस्वरूप 1930-32 के बीच तीन गोलमेज सम्मेलन हुए, जहाँ डॉ. अम्बेडकर को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया।

1935 में, डॉ. अम्बेडकर को गवर्नमेंट लॉ कॉलेज, मुंबई का प्रिंसिपल नियुक्त किया गया, जहाँ वे 1928 से प्रोफेसर के रूप में अध्यापन कर रहे थे। इसके बाद, उन्हें वायसराय की कार्यकारी परिषद में श्रम सदस्य (1942-46) के रूप में नियुक्त किया गया।

1946 में वे भारत की संविधान सभा के लिए चुने गए। 15 अगस्त 1947 को उन्होंने स्वतंत्र भारत के पहले कानून मंत्री के रूप में शपथ ली। इसके बाद वे संविधान सभा की प्रारूप समिति के अध्यक्ष चुने गए और उन्होंने भारत के संविधान के प्रारूपण की प्रक्रिया का नेतृत्व किया। संविधान सभा के सदस्य महावीर त्यागी ने डॉ. अम्बेडकर को "मुख्य कलाकार" के रूप में वर्णित किया, जिन्होंने "अपनी ब्रश को एक तरफ रख दिया और जनता के देखने और टिप्पणी करने के लिए चित्र का अनावरण किया"। डॉ. राजेंद्र प्रसाद, जिन्होंने संविधान सभा की अध्यक्षता की और बाद में भारतीय गणराज्य के पहले राष्ट्रपति बने, ने कहा: "अध्यक्षता पर बैठकर और दिन-प्रतिदिन कार्यवाही को देखते हुए, मैंने महसूस किया है कि प्रारूप समिति के सदस्यों और विशेष रूप से इसके अध्यक्ष डॉ. अम्बेडकर ने अपने खराब स्वास्थ्य के बावजूद

किस उत्साह और समर्पण के साथ काम किया है, जैसा कि कोई और नहीं कर सकता। हम कभी भी ऐसा निर्णय नहीं ले सकते जो उतना सही हो जितना कि जब हमने उन्हें प्रारूप समिति में रखा और उन्हें इसका अध्यक्ष बनाया। उन्होंने न केवल अपने चयन को उचित ठहराया है, बल्कि अपने काम को और भी चमकदार बना दिया है।”

1952 में पहले आम चुनाव के बाद वे राज्य सभा के सदस्य बने। उसी वर्ष उन्हें कोलंबिया विश्वविद्यालय से मानद डॉक्टरेट की उपाधि भी प्रदान की गई। 1953 में उन्हें हैदराबाद स्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय से भी मानद डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई।

1955 में लम्बी बीमारी के कारण डॉ. अंबेडकर की तबीयत बिगड़ गई और 6 दिसंबर 1956 को दिल्ली में नींद में ही उनका निधन हो गया।

रोहित
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

आधुनिक जीवन शैली

जीवन ईश्वर का एक सुंदर उपहार है। यह एक ऐसी संपत्ति है जिसका हम सभी को ध्यान रखना चाहिए। साथ ही यह एक ऐसा आशीर्वाद है जो जीवन में एक बार मिलता है हर जीव को मनुष्य जीवन नहीं मिलता इसलिए यह आवश्यक है कि इस जीवन को स्वस्थ जीवन शैली अपनाकर अच्छा बनाए, नकारात्मकता से दूर रहे जीवन जीने की शैली वास्तव में स्वयं के प्रति दृष्टिकोण को परिभाषित करती है। आधुनिक जीवन शैली का हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। शारीरिक रूप से हमारे शरीर में मोटापा, हृदयरोग, डायबिटीज़ और उच्च रक्तचाप एवं व्यायाम न करने के कारण मानसिक तनाव, अनिद्रा, चिंता जैसी समस्याएं भी बढ़ रही हैं अगर समय रहते हुए इन समस्याओं का निदान नहीं किया गया तो ये विकराल रूप में प्रस्तुत होगी जिससे अहित ही होगा। स्वस्थ जीवन शैली एक अच्छे जीवन की नींव है हालांकि इस जीवनशैली को हासिल करने में ज्यादा मेहनत नहीं लगती लेकिन कई लोग व्यवसायिक प्रतिबद्धताओं, दृढ़संकल्प की कमी और व्यक्तिगत मुद्दों जैसे कई कारणों से इसका पालन नहीं कर पाते हैं। आजकल एक स्वस्थ जीवन शैली का पालन करने के लिए बहुत दृढ़ संकल्प लेना पड़ता है पूरे दिन के दौरान इतने सारे कार्यों को एक साथ पूरा करते हुए हमारा स्वास्थ्य का संतुलन अक्सर बिगड़ जाता है। स्वस्थ जीवन शैली का पालन करने एवं उसे किस तरह से हासिल किया जा सकता है यह समझना महत्वपूर्ण है। स्वस्थ जीवन शैली को अपनाने के कुछ सुझाव हैं। रोजाना दौड़ना, टहलना, खेल खेलना, नाचना, तेज चलना या व्यायाम करना। सभी खाद्य पदार्थों/समूहों (कार्बोहाइड्रेट्स प्रोटीन, वसा, विटामिन और खनिज) को अपने आहार में नियमित शामिल करना। हर सुबह जल्दी उठने एवं व्यायाम करने की आदत बनाए ताकि आपका स्वास्थ्य एवं दिनचर्या अच्छा हो। स्वस्थ जीवन शैली के लिए आवश्यक है आप स्वास्थ्य के लिए हानिकारक आदतों जैसे धूम्रपान करना, नशा करना, जंक फूड, आदि के प्रयोग से बचें। उन लोगों के साथ घुले-मिले जो आप की तरह स्वस्थ जीवन शैली का पालन कर रहे हैं। सुबह जल्दी उठने एवं जल्दी सोने का प्रयास करें। सुनिश्चित करें कि आप 7-8 घंटे की नींद ले बहुत ज्यादा या बहुत कम न सोए। जितनी तेजी से विज्ञान ने तरक्की कर हमें सुविधाएं उपलब्ध करवाई हैं उतनी ही तेजी से तरह-तरह की बीमारियों ने शरीर में घर बनाया है। अवसाद, तनाव, मानसिक असंतोष जैसे मानसिक एवं मोटापा, जोड़ो का दर्द, कब्ज, माइग्रेन, बवासीर, उच्चरक्तचाप, हृदयरोग, डायबिटीज़ जैसे शारीरिक गंभीर रोग आधुनिक जीवन शैली की देन हैं। आजकल आधुनिक समृद्धि और संपन्नता से बच्चों को खुश रखने की प्रवृत्ति बढ़ी है। माना जाने लगा है कि जीवन में आर्थिक समृद्धि से सब कुछ पाया और उपलब्ध किया जा सकता है। इस मान्यता ने मनुष्य को मात्र एक यंत्र में परिवर्तित कर दिया है। इस यांत्रिक जीवन में समृद्धि भी अनंत है। मानव अस्तित्व का मुख्य उद्देश्य एकमात्र योग है। उसका प्रादुर्भाव योग में रहने के लिए हुआ है। योग साधना को यदि अपने जीवन का अभिन्न अंग बना दिया जाए तो यह मानव की खोई हुई राजसत्ता की पुनःप्राप्ति का आश्वासन देता है। यह अनंत सत्य के साथ जीवन जीने की कला सिखाता है। यह सभी शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक कष्टों से मुक्ति दिलाता है।

सुनील कुमार
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

महिलाओं को वोट देने का अधिकार

आप सभी को पता है कि अभी हाल ही में लोक सभा चुनाव हुए हैं, जिसे हम सबने एक पर्व की तरह मनाया है और वोट डाल कर अपना योगदान भी दिया। क्या आप जानते हैं कि आपके मत/वोट कि क्या अहमियत है?

कोई भी जागरूक नागरिक यह जानता है कि लोकतंत्र में वोट की क्या कीमत है? वोट का अधिकार वह बुनियादी अधिकार है, जो लोकतंत्र में हमारी हिस्सेदारी और हमारे नागरिक अधिकारों को सुनिश्चित करता है।

परंतु आज मैं आप से साझा करना चाहूंगी कि महिलाओं को वोट डालने का अधिकार कब और कैसे मिला। हालांकि ये जानकारी मैंने नेट से ली है क्योंकि मुझे लगता है कि एक महिला होने के नाते हमें पता होना चाहिए कि आज जो हम महिलाएं मतदान के लिए जाती हैं उनके हक का क्या इतिहास रहा है। इतिहास गवाह है कि यह बुनियादी अधिकार भी महिलाओं को लगभग 100 वर्षों की लंबी लड़ाई के बाद हासिल हुआ था। पूरी दुनिया में चला विमेनज सफरेज मूवमेंट के नाम से जाना गया। न्यूजीलैंड में इस अधिकार की लड़ाई 1808 के आसपास शुरू हुई, जब महिलाओं ने इस अधिकार के लिए आवाज उठानी शुरू की। 1969 में मैरी मुलर ने नाम बदलकर एक पैम्फलेट छापकर बांटा, जिसका शीर्षक था – “न्यूजीलैंड के मर्दों से एक अपील” Sign up for our exclusive newsletters. Subscribe to check out our popular newsletters. Dropdown अगले बीस सालों तक यह मूवमेंट बढ़ता गया और मैरी मुलर अब अपना नाम और पहचान छिपाए बगैर, सफरेज मूवमेंट का चेहरा बन गई।

दुनिया का कोई भी मुल्क अपवाद नहीं है, जिसने लंबे संघर्ष और लड़ाई के बगैर ही महिलाओं को सीधे वोट का अधिकार दे दिया हो। 18वीं सदी के अंत से लेकर 20वीं सदी के अंत तक दुनिया के विभिन्न मुल्कों में विमेन सफरेज मूवमेंट का दौर चला। संसदीय चुनावों में महिलाओं को वोट देने का अधिकार देने वाला दुनिया का पहला देश न्यूजीलैंड था, जहां 1893 में संविधान में महिलाओं के मतदान के अधिकार को उनके बुनियादी सवैधानिक अधिकारों में शामिल किया गया। हालांकि महिलाओं की राजनीति में और चुनाव लड़ने की शुरुआत 1919 से पहले वहाँ भी नहीं हुई। दुनिया का दूसरा देश था, साउथ ऑस्ट्रेलिया, जिसने 1894 में महिलाओं को वोट देने और चुनाव में खड़े होने का अधिकार दिया।

न्यूजीलैंड के लार्ड ग्लासगो ने 19 सितंबर को एक बिल पर हस्ताक्षर किए थे, जिसके तहत महिलाओं को वोट करने का कानूनी अधिकारी मिला था। हालांकि तब वह ब्रिटिश उपनिवेश था। इसके लिए केट शेपर्ड ने एक लंबा आंदोलन चलाया, जिनकी तस्वीर वहाँ के 10 डॉलर के नोट पर छपी है।

भारतीय महिलाओं को वोटिंग अधिकार क्यों नहीं देना चाहते थे अंग्रेज़?

शुरुआत में महात्मा गांधी ने वोटिंग का अधिकार पाने में महिलाओं का समर्थन नहीं किया। उनका कहना था कि “औपनिवेशिक शासकों से लड़ने के लिए उन्हें पुरुषों की मदद करनी चाहिए।

साल 1921 में बॉम्बे और मद्रास (आज की मुंबई और चेन्नई) पहले प्रांत बने जहां सीमित तौर पर महिलाओं को वोट देने के अधिकार दिए गए, बाद में 1923 से 1930 के बीच सात अन्य प्रान्तों में भी महिलाओं को वोटिंग का अधिकार मिला।

इतिहासकार गेराल्डिन फोर्ब्स लिखती हैं कि भारतीय महिला संगठनों को महिलाओं को मतदान का अधिकार पाने के लिए एक मुश्किल लड़ाई लड़नी पड़ी थी। डॉ.फोर्ब्स ने अपनी किताब ‘वुमेन इन मॉडर्न इंडिया’ में लिखा है कि ब्रितानी हाउस ऑफ कॉमन्स ने महिलाओं के लिए वोटिंग के अधिकार की मांग करने वाले कई भारतीय और ब्रितानी महिला संगठनों की मांग को नजरअंदाज किया।

महिलाओं से भेदभाव और उनका पर्दे में रहना इस फैसले के पीछे उनकी आसान दलील थी।

महिलाओं को मतदान का अधिकार दिलवाने के लिए अबला बॉस और कामिनी रॉय सबसे आगे रही और लंबी लड़ाई लड़ी। जिनके कारण ही महिलाओं को पहली बार 1921 में वोट डालने का अधिकार मिला। इन्होंने महिलाओं को मताधिकार दिलाने के अलावा महिला शिक्षा और विधवाओं की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए काम किया।

देश में जब महिलाओं को मताधिकार मामले पर बात चल रही थी तब अबला बॉस और कामिनी रॉय अन्य प्रभावी महिलाओं जैसे – सरोजिनी नायडु, जिन रामदासा, रमाबाई रानडे, मार्गरेट काजीन्स के साथ उस प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा बन चुकी थी, जो कि 1917 में एडविन मांटग्यु से मिला था।

भारतीय महिलाओं को वोट देने का अधिकार उसी दिन मिल गया था जिस दिन इस देश का जन्म हुआ था।

साल 1947 में भारत की वयस्क महिलाओं को किस तरह चुनाव में वोट देने का अधिकार मिला गहन शोध के बाद लेखिका डॉक्टर ओर्निट शनि ने इस विषय पर एक किताब लिखी है।

वो कहती हैं कि करीब 10 लाख लोगों की मौत और एक करोड़ 80 लाख लोगों के घरों की तबाही के लिए जिम्मेदार बंटवारे की त्रासदी में झुलस रहे एक देश में ये फैसला लिया जाना उस वक्त "किसी भी औपनिवेशिक राष्ट्र के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी"।

आजाद भारत में वोटों की संख्या पाँच गुना तक बढ़कर करीब 17 करोड़ 30 लाख तक पहुँच गई थी। इसमें से करीब 8 करोड़ यानि आधी आबादी महिलाओं की थी। इनमें से करीब 85 फीसदी महिलाओं ने कभी वोट ही नहीं डाला था।

आज भी कुछ महिलाएँ वोट डालने नहीं जाती जबकि इस अधिकार को पाने के लिए कितना संघर्ष किया गया। इसलिए हमें मतदान करने के लिए अपने आसपास के लोगों को जागरूक करना चाहिए कि मतदान हमारा अधिकार है।

शशि गोदवाल
कार्यालय अधीक्षक
पश्चिमी कमान चंडीगढ़

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य

परिचय:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence या AI) एक तेजी से उभरती हुई तकनीक है जिसने विज्ञान, प्रौद्योगिकी और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में क्रांति ला दी है। आज के युग में, AI का प्रभाव लगभग हर क्षेत्र में देखा जा सकता है, चाहे वह चिकित्सा हो, शिक्षा हो, परिवहन हो, या यहां तक कि मनोरंजन हो। इस निबंध में, हम AI के विकास, इसके वर्तमान उपयोगों, संभावित खतरों और भविष्य की संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का परिचय:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ है कंप्यूटर सिस्टम या मशीनों में मानवीय बुद्धिमत्ता की नकल करना। इसमें मुख्यतः तीन पहलू शामिल होते हैं: मशीन लर्निंग (Machine Learning), प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (Natural Language Processing), और रोबोटिक्स (Robotics)। इन तकनीकों का उपयोग करके मशीनें सीख सकती हैं, सोच सकती हैं, और समस्याओं का समाधान कर सकती हैं, जो पहले केवल मानव मस्तिष्क द्वारा ही संभव था।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास:

AI का विकास 1950 के दशक में शुरू हुआ जब एलन ट्यूरिंग ने यह प्रस्तावित किया कि एक मशीन को बुद्धिमान बनाने के लिए क्या आवश्यक है। इसके बाद, 1956 में डार्टमाउथ सम्मेलन में, जॉन मैकार्थी और उनके साथियों ने "कृत्रिम बुद्धिमत्ता" शब्द का प्रयोग किया और इस क्षेत्र में अनुसंधान की नींव रखी।

AI के विकास के महत्वपूर्ण चरणों में शामिल हैं:

1. प्रारंभिक विकास (1950-1970): इस अवधि में AI के बुनियादी सिद्धांत और एल्गोरिदम विकसित किए गए। प्रारंभिक AI कार्यक्रम जैसे कि शतरंज खेलने वाले कंप्यूटर और तर्क प्रणालियाँ विकसित की गईं।
2. AI का पहला दशक (1970-1980): इस अवधि में AI अनुसंधान में उत्साह कम हो गया और वित्तपोषण में कमी आई। यह स्थिति मुख्य रूप से अवास्तविक अपेक्षाओं और परिणामों की कमी के कारण उत्पन्न हुई।
3. नवीनतम प्रगति (1980-वर्तमान): 1980 के दशक के बाद से, AI अनुसंधान ने नए आयाम प्राप्त किए। कंप्यूटिंग शक्ति में वृद्धि, बिग डेटा का उपयोग, और नए एल्गोरिदम के विकास ने AI को अत्यधिक सक्षम और व्यावहारिक बना दिया है।

वर्तमान में AI का उपयोग:

आज AI का उपयोग कई क्षेत्रों में हो रहा है:

1. **चिकित्सा:** चिकित्सा क्षेत्र में AI का उपयोग रोग निदान, चिकित्सा छवियों का विश्लेषण, और व्यक्तिगत चिकित्सा योजनाएँ तैयार करने में हो रहा है। AI-आधारित सिस्टम रोगों का प्रारंभिक निदान करने और उपचार के सुझाव देने में सक्षम हैं। उदाहरण के लिए, IBM का Watson AI कैंसर के उपचार में सहायक साबित हुआ है।
2. **शिक्षा:** शिक्षा में AI का उपयोग व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव प्रदान करने, छात्रों की प्रगति का ट्रैक रखने, और शिक्षण सामग्री को अनुकूलित करने में हो रहा है। AI-आधारित ट्यूटर और शिक्षण सहायक छात्र अनुभव को बेहतर बना रहे हैं।
3. **परिवहन:** परिवहन क्षेत्र में, AI का उपयोग स्वायत्त वाहनों, यातायात प्रबंधन, और लॉजिस्टिक्स में हो रहा है। सेल्फ-ड्राइविंग कारें और स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम AI के महत्वपूर्ण अनुप्रयोग हैं। उदाहरण के लिए, टेस्ला की स्वायत्त कारें AI का उपयोग करके सड़क पर सुरक्षित ड्राइविंग करती हैं।
4. **वाणिज्य:** ई-कॉमर्स और खुदरा क्षेत्र में AI का उपयोग ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने, मांग पूर्वानुमान, और आपूर्ति

श्रृंखला प्रबंधन में हो रहा है। AI-आधारित सिफारिश प्रणाली जैसे कि अमेज़न और नेटफ्लिक्स पर देखी जाती हैं, ग्राहक की पसंद को समझकर उत्पादों और सेवाओं की सिफारिश करती हैं।

5. मनोरंजन: मनोरंजन उद्योग में AI का उपयोग सामग्री निर्माण, संपादन, और दर्शकों की प्राथमिकताओं को समझने में हो रहा है। AI-आधारित एल्गोरिदम संगीत, फिल्मों, और अन्य मनोरंजन सामग्री को व्यक्तिगत उपयोगकर्ताओं के अनुसार अनुकूलित करते हैं।

AI के संभावित खतरे:

हालांकि AI ने अनेक क्षेत्रों में अद्वितीय लाभ प्रदान किए हैं, इसके साथ ही कुछ संभावित खतरे और चुनौतियाँ भी हैं:

1. नौकरी का नुकसान: AI और स्वचालन के कारण कई उद्योगों में नौकरियों का नुकसान हो सकता है। मशीनें और रोबोट मानव श्रमिकों की जगह ले सकते हैं, जिससे बेरोजगारी की समस्या बढ़ सकती है।

2. निजता का उल्लंघन: AI-आधारित सिस्टम का उपयोग डेटा संग्रह और विश्लेषण में होता है, जिससे व्यक्तिगत गोपनीयता का उल्लंघन हो सकता है। डेटा सुरक्षा और निजता के मुद्दे महत्वपूर्ण हैं और इन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है।

3. भेदभाव और पूर्वाग्रह: AI एल्गोरिदम में निहित पूर्वाग्रह समस्याग्रस्त हो सकते हैं। यदि AI को प्रशिक्षित करने के लिए उपयोग किया गया डेटा भेदभावपूर्ण है, तो AI भी भेदभावपूर्ण निर्णय ले सकता है।

4. स्वतंत्रता का खतरा: अत्यधिक AI विकास और इसके उपयोग में स्वतंत्रता का खतरा उत्पन्न हो सकता है। सैन्य और निगरानी उद्देश्यों के लिए AI का उपयोग मानव स्वतंत्रता और सुरक्षा के लिए खतरा बन सकता है।

5. अनैतिक उपयोग: AI का अनैतिक और हानिकारक उपयोग भी एक गंभीर चिंता का विषय है। उदाहरण के लिए, डीपफेक्स (Deepfakes) और साइबर अपराधों में AI का उपयोग किया जा सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का भविष्य:

AI का भविष्य अत्यधिक संभावनाओं से भरा हुआ है। इसमें निम्नलिखित प्रमुख क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की संभावना है:

1. स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार:

- AI चिकित्सा अनुसंधान में तेजी ला सकता है और नई उपचार विधियों की खोज में सहायक हो सकता है।
- AI-आधारित स्वास्थ्य निगरानी उपकरण और व्यक्तिगत चिकित्सा सलाह स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक सटीक और कुशल बना सकते हैं।

2. शिक्षा का सुधार:

- AI का उपयोग व्यक्तिगत शिक्षण अनुभव प्रदान करने के लिए किया जा सकता है, जिससे प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा दी जा सकेगी।
- AI-आधारित ट्यूटर और शिक्षण सहायक शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावी और सुलभ बना सकते हैं।

3. पर्यावरण संरक्षण:

- AI का उपयोग जलवायु परिवर्तन की निगरानी और पूर्वानुमान में किया जा सकता है, जिससे पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों को अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा।
- AI-आधारित कृषि तकनीकें और संसाधन प्रबंधन प्रणाली पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में सहायक हो सकती हैं।

4. स्वायत्त वाहन और स्मार्ट शहर:

- AI का उपयोग स्वायत्त वाहनों और स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम में किया जा सकता है, जिससे यातायात दुर्घटनाओं और जाम की समस्याओं को कम किया जा सकेगा।
- स्मार्ट शहरों में AI का उपयोग संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन और नागरिक सेवाओं में सुधार के लिए किया जा सकता है।

5. नए उद्योग और रोजगार अवसर:

- AI नए उद्योगों और रोजगार के अवसर पैदा कर सकता है। इसके साथ ही, AI-आधारित नई तकनीकों के विकास और उनके अनुप्रयोगों के कारण नए व्यवसायिक मॉडल उभर सकते हैं।
- AI से संबंधित कौशल की मांग बढ़ेगी, जिससे नए प्रशिक्षण और शिक्षा के अवसर उत्पन्न होंगे।

चुनौतियाँ और समाधान:

1. नियम और नीति निर्माण:

- AI के नैतिक और सुरक्षित उपयोग के लिए प्रभावी नियम और नीतियों का निर्माण आवश्यक है। सरकारों और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को मिलकर AI के उपयोग के लिए दिशा-निर्देश और नियम बनाने होंगे।

2. शिक्षा और प्रशिक्षण:

- AI के बढ़ते प्रभाव के साथ, शिक्षा और प्रशिक्षण में बदलाव की आवश्यकता है। लोगों को AI से संबंधित कौशल और ज्ञान प्रदान करना महत्वपूर्ण है ताकि वे बदलती कार्यस्थल आवश्यकताओं के साथ तालमेल बना सकें।

3. निजता और सुरक्षा:

- डेटा सुरक्षा और निजता के मुद्दों को गंभीरता से लेना होगा। AI-आधारित सिस्टम का उपयोग करते समय डेटा गोपनीयता और सुरक्षा के उपाय सुनिश्चित करने होंगे।

4. नैतिकता और पारदर्शिता:

- AI एल्गोरिदम की पारदर्शिता और नैतिकता सुनिश्चित करना आवश्यक है। AI सिस्टम को पूर्वाग्रह और भेदभाव से मुक्त रखने के लिए विशेष प्रयास करने होंगे।

5. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:

- AI के विकास और उपयोग के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग महत्वपूर्ण है। विभिन्न देशों के बीच तकनीकी ज्ञान का आदान-प्रदान और सहयोगी प्रयास AI के सकारात्मक उपयोग को बढ़ावा देंगे।

निष्कर्ष:

अंत में, AI का भविष्य हमारे हाथों में है। यदि हम इसे जिम्मेदारी और समझदारी से उपयोग करें, तो यह तकनीक हमारे समाज को नई ऊँचाइयों तक ले जा सकती है और हमें एक अधिक सुरक्षित, स्वस्थ, और समृद्ध भविष्य प्रदान कर सकती है। AI के साथ मिलकर, हम नई संभावनाओं और अवसरों की एक दुनिया का निर्माण कर सकते हैं, जो आज तक केवल हमारी कल्पनाओं में ही संभव था।

दीपक कुमार तिवारी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

हिन्दी पखवाड़ा 2023 के उद्घाटन समारोह की झलकियाँ



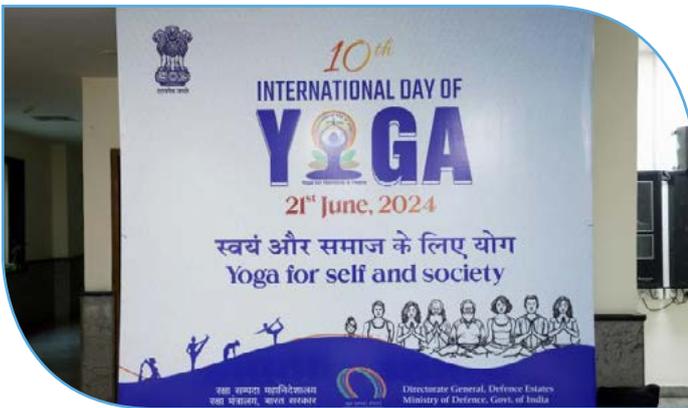
स्वच्छता ही सेवा के आयोजन (22/09/2023) की झलकियाँ



गणतंत्र दिवस समारोह - 2024 की झलकियाँ



योग दिवस - 2024 की झलकियाँ



लानीनो और एलनिनो: पर्यावरण पर प्रभाव

परिचय:

लानीनो और एलनिनो दो प्रमुख जलवायु घटनाएँ हैं जो प्रशांत महासागर के तापमान में बदलावों के कारण उत्पन्न होती हैं। ये घटनाएँ वैश्विक मौसम पैटर्न और पर्यावरण को गहरे स्तर पर प्रभावित करती हैं। दोनों घटनाओं के प्रभाव बहुआयामी हैं, जिनमें वर्षा, सूखा, तूफान, तापमान में परिवर्तन और समुद्री जीवन पर व्यापक प्रभाव शामिल हैं। इस निबंध में हम लानीनो और एलनिनो की घटनाओं के विस्तृत विवरण और उनके विविध प्रभावों का अध्ययन करेंगे।

एलनिनो

एलनिनो एक जलवायु घटना है जिसमें प्रशांत महासागर के मध्य और पूर्वी भाग की समुद्री सतह का तापमान सामान्य से अधिक हो जाता है। यह घटना हर 2 से 7 वर्षों के बीच होती है और इसके परिणामस्वरूप वैश्विक मौसम पैटर्न में महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं।

एलनिनो के प्रभाव

1. वर्षा और सूखा

- दक्षिण अमेरिका: एलनिनो के दौरान दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट पर भारी वर्षा होती है, जिससे बाढ़ और भूस्खलन जैसी आपदाएँ आम हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, 1997-98 के एलनिनो के दौरान पेरू और इक्वाडोर में भारी बाढ़ आई थी, जिससे व्यापक विनाश हुआ।

- ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया: वहीं, ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया में सूखा पड़ता है, जिससे कृषि और जल आपूर्ति पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। 1982-83 के एलनिनो के दौरान ऑस्ट्रेलिया में सूखे के कारण फसलों को भारी नुकसान हुआ था।

2. तूफान और चक्रवात:

- उत्तरी अमेरिका: एलनिनो के कारण उत्तरी अमेरिका में अधिक शक्तिशाली तूफान और चक्रवात आ सकते हैं। 1997-98 के एलनिनो के दौरान कैलिफोर्निया में भारी वर्षा और बाढ़ आई थी।

- अटलांटिक महासागर: अटलांटिक महासागर में तूफानों की संख्या में कमी आ सकती है, जिससे संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी तट पर तूफानों की संभावना कम हो जाती है।

3. मत्स्य उद्योग पर प्रभाव:

- एलनिनो के कारण समुद्री जल के तापमान में वृद्धि होती है, जिससे मछलियों के प्रजनन और खाद्य श्रृंखला पर प्रभाव पड़ता है। यह स्थिति मत्स्य उद्योग को भारी नुकसान पहुंचा सकती है। उदाहरण के लिए, पेरू का मत्स्य उद्योग 1997-98 के एलनिनो के दौरान गंभीर रूप से प्रभावित हुआ था।

4. पर्यावरणीय प्रभाव:

- वर्षावन: एलनिनो के कारण वर्षावनों में सूखे की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, जिससे जंगलों में आग लगने की संभावना बढ़ जाती है। 1997-98 के एलनिनो के दौरान इंडोनेशिया के वर्षावनों में बड़े पैमाने पर आग लगी थी।

- पारिस्थितिकी तंत्र: एलनिनो के कारण वन्य जीवों और पौधों के आवास में परिवर्तन हो सकते हैं। सूखे के कारण जल निकायों में पानी की कमी हो सकती है, जिससे जलीय जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

लानीनो :

लानीनो एलनिनो का उलटा है, इसमें प्रशांत महासागर के मध्य और पूर्वी भाग की समुद्री सतह का तापमान सामान्य से

कम हो जाता है। यह घटना भी हर 2 से 7 वर्षों के बीच होती है और इसका प्रभाव भी वैश्विक स्तर पर देखा जा सकता है।

लानीनो के प्रभाव:

1. वर्षा और सूखा:

- ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया: लानीनो के कारण ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया में भारी वर्षा होती है, जिससे बाढ़ और भूस्खलन की स्थिति उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए, 2010-11 के लानीनो के दौरान ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड में ऐतिहासिक बाढ़ आई थी।

- दक्षिण अमेरिका: वहीं, दक्षिण अमेरिका के पश्चिमी तट पर सूखा पड़ता है, जिससे कृषि और जल आपूर्ति पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। 2010-11 के लानीनो के दौरान अर्जेंटीना में सूखे के कारण फसलें बर्बाद हो गई थीं।

2. तूफान और चक्रवात:

- अटलांटिक महासागर: लानीनो के कारण अटलांटिक महासागर में तूफानों की संख्या में वृद्धि हो सकती है, जिससे उत्तरी अमेरिका और कैरिबियन देशों पर अधिक प्रभाव पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, 2020 के लानीनो के दौरान अटलांटिक तूफान सीजन में रिकॉर्ड संख्या में तूफान आए थे।

3. मत्स्य उद्योग पर प्रभाव:

- लानीनो के कारण समुद्री जल के तापमान में कमी होती है, जिससे मछलियों के प्रजनन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यह स्थिति मत्स्य उद्योग के लिए लाभदायक हो सकती है। उदाहरण के लिए, पेरू के मत्स्य उद्योग को लानीनो के दौरान लाभ हुआ है, जब मछलियों की पैदावार बढ़ी है।

4. *पर्यावरणीय प्रभाव:

- वनस्पति: लानीनो के कारण भारी वर्षा के कारण जंगलों में पेड़-पौधे तेजी से बढ़ सकते हैं, जिससे वन्य जीवों का आवास सुधर सकता है। 2010-11 के लानीनो के दौरान दक्षिण-पूर्व एशिया के वर्षावनों में वनस्पति वृद्धि में वृद्धि देखी गई थी।

- पारिस्थितिकी तंत्र: लानीनो के कारण वनस्पति और अन्य पारिस्थितिकी तंत्र में परिवर्तन हो सकते हैं। जल निकायों में पानी की मात्रा बढ़ सकती है, जिससे जलीय जीवन को लाभ हो सकता है।

वैश्विक प्रभाव:

लानीनो और एलनिनो दोनों ही वैश्विक जलवायु पर गहरा प्रभाव डालते हैं, और इनके प्रभाव केवल प्रशांत महासागर तक सीमित नहीं रहते। इनके कारण होने वाले मौसम पैटर्न के परिवर्तन से संपूर्ण पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार की आपदाएँ और मौसम परिवर्तन हो सकते हैं।

1. एशिया: एलनिनो और लानीनो का एशिया पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। भारत में मानसून की स्थिति पर इन घटनाओं का सीधा प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, 2015 में एलनिनो के कारण भारत में मानसून कमजोर रहा, जिससे सूखा पड़ा और कृषि उत्पादन में कमी आई।

2. अफ्रीका: अफ्रीका में भी इन घटनाओं का व्यापक प्रभाव देखा जाता है। एलनिनो के कारण अफ्रीका के पूर्वी हिस्सों में सूखा और अकाल जैसी स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। 2015-16 के एलनिनो के दौरान इथियोपिया में गंभीर सूखा पड़ा, जिससे खाद्य संकट पैदा हुआ।

3. उत्तर अमेरिका: उत्तर अमेरिका में एलनिनो और लानीनो दोनों ही मौसम पैटर्न को प्रभावित करते हैं। एलनिनो के दौरान कैलिफोर्निया में भारी वर्षा और बाढ़ आती है, जबकि लानीनो के दौरान सूखा पड़ सकता है। 2016-17 के एलनिनो के दौरान कैलिफोर्निया में भारी वर्षा हुई थी, जिससे बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हुई।

4. दक्षिण अमेरिका: दक्षिण अमेरिका के विभिन्न हिस्सों में भी इन घटनाओं का गहरा प्रभाव होता है। ब्राजील और अर्जेंटीना जैसे देशों में एलनिनो और लानीनो के कारण कृषि उत्पादन में उतार-चढ़ाव देखा जाता है। 2015-16 के एलनिनो के दौरान ब्राजील में सूखा पड़ा, जिससे कृषि उत्पादन में कमी आई।

कृषि पर प्रभाव:

लानीनो और एलनिनो दोनों ही कृषि पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। मौसम पैटर्न में होने वाले बदलावों के कारण फसलों की पैदावार में कमी या वृद्धि हो सकती है।

1. फसलों की पैदावार: एलनिनो के कारण सूखे और बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, जिससे फसलों की पैदावार में कमी आ सकती है। उदाहरण के लिए, 2015-16 के एलनिनो के दौरान भारत और अफ्रीका में फसलों की पैदावार में भारी कमी आई थी।

2. सिंचाई: लानीनो के दौरान भारी वर्षा के कारण जल स्रोतों में पानी की मात्रा बढ़ सकती है, जिससे सिंचाई के लिए जल उपलब्धता बढ़ जाती है। 2010-11 के लानीनो के दौरान दक्षिण-पूर्व एशिया में जल स्रोतों में पानी की मात्रा बढ़ गई थी, जिससे किसानों को लाभ हुआ।

3. फसल विविधता: मौसम में होने वाले बदलावों के कारण किसान विभिन्न प्रकार की फसलों की खेती करने के लिए मजबूर हो सकते हैं। इससे फसल विविधता में वृद्धि हो सकती है, जो पारिस्थितिकी तंत्र के लिए लाभकारी हो सकती है।

निष्कर्ष:

लानीनो और एलनिनो जैसी जलवायु घटनाएँ वैश्विक पर्यावरण और मानव समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती हैं। इन घटनाओं का प्रभाव केवल मौसम तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि ये कृषि, जल आपूर्ति, मत्स्य उद्योग और संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र पर भी गहरा असर डालती हैं। एलनिनो के कारण होने वाले सूखा, बाढ़, और तापमान में वृद्धि जैसी परिस्थितियाँ खाद्य सुरक्षा और वन्य जीवों के आवास को प्रभावित करती हैं, जबकि लानीनो के कारण भारी वर्षा और ठंड की स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं जो भी समान रूप से विनाशकारी हो सकती हैं।

वैश्विक स्तर पर इनके प्रभाव को देखते हुए यह आवश्यक है कि हम इन घटनाओं के प्रति अधिक जागरूक और तैयार रहें। समय पर चेतावनी प्रणाली, आपदा प्रबंधन योजनाएँ, और सामुदायिक तैयारियों में सुधार करके हम इन जलवायु घटनाओं के नकारात्मक प्रभाव को काफी हद तक कम कर सकते हैं। इसके साथ ही, जलवायु परिवर्तन के इस युग में इन घटनाओं का अध्ययन और इनके प्रभावों की समझ विकसित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इन घटनाओं के प्रभाव से निपटने के लिए सरकारों, वैज्ञानिकों, और आम जनता को मिलकर काम करना होगा। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, सतत विकास की नीतियाँ, और पर्यावरण संरक्षण के उपाय अपनाकर हम इन जलवायु घटनाओं से उत्पन्न चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। जलवायु परिवर्तन की इस चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में, लानीनो और एलनिनो के प्रभाव को समझना और उनसे निपटने के उपाय करना हमारे भविष्य के लिए अनिवार्य है।

पवन कुमार तिवारी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

हमारी महिला पुरोधा

सृजनात्मक क्षेत्र का दायरा विशाल है। किसी भी जाति, धर्म, लिंग से परे सृजन क्षेत्र प्रत्येक सृजनकर्ता को विपुल आकाश प्रदान करता है, अपनी बात कहने और दूसरों तक उसे पहुंचाने की, इस कहने, सुनने, पहुंचाने में जिस सृजन-यात्रा का भ्रमण स्वयं रचनाकार करता है और अपनी कृति के माध्यम से पाठक को भी करवाता है, वही तो असल में उसकी स्वयंसिद्धि है। रचनाकार को वैभव-धन की लिप्सा इतनी नहीं होती जितनी अपनी कृति के प्रति एक ईमानदार राय की। उसका परिक्षेत्र इसी दायरे के आस-पास घूमता है। कालजयी रचनाएँ सृजित करता है।

इस पृष्ठ भूमि का मंतव्य जिसका इशारा हमारा शीर्षक भी कर रहा है हमारे साहित्य की महान महिला साहित्यकार उनकी सृजन यात्रा से पाठकों का परिचय करना है। ये महिला रचनाकार मानवीय भाव-पक्ष को केंद्र बनाती हुई अपने नजरिए से उसकी नई परिभाषा गढ़ती है। पाठकों के समक्ष जो दृश्य उभर कर सामने आता है वह सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक सभी परिवेशों को इस ढंग से उजागर करता है कि बिलकुल गूँथे हुए भाव-पक्ष भी हल्की सी भाषा व्यंजना, लक्षणा और शब्द-वैचित्र्य का सहारा लेकर स्पष्ट रूप से सामने आ जाते हैं। इस खुलने में पाठक की हैरानी का कोई ठिकाना नहीं रहता, वह पूरे मनोयोग से प्रत्येक खंड को आत्मसात करने में फिर से डूब जाता है।

कथ्य की इस पृष्ठभूमि में महान साहित्यकार लब्ध प्रतिष्ठ सुभद्रा कुमारी चौहान (15 अगस्त, 1904 से 15 फरवरी, 1948) हैं। सुभद्रा जी मात्र कवियत्री नहीं थी, वे एक स्वतंत्रता सेनानी भी थी। सुभद्रा कुमारी चौहान को एक कवयित्री के रूप में अधिक जाना जाता है, इन्होंने प्रसिद्ध कविता 'झाँसी की रानी' लिखी थी। लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि वे नागपुर में गिरफ्तार होने वाली पहली महिला सत्याग्रही थी और 1923 और 1942 में ब्रिटिश शासन के खिलाफ विरोध प्रदर्शनी में शामिल होने पर उन्हें दो बार जेल भी जाना पड़ा था। वे एक अग्रणी लेखिका और स्वतंत्रता सेनानी थी, जिन्होंने पुरुष-प्रधान युग में राष्ट्रीय ख्याति हासिल की।

1904 में प्रयागराज के निहालपुर में जन्मी सुभद्रा जी सदैव पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं के उत्थान की पक्षधर रहीं। मात्र 9 वर्ष की आयु में उनके द्वारा लिखी कविता 'नीम का पेड़' प्रकाशित हुई। 15 वर्ष की आयु में विवाह के पश्चात वे पति लक्ष्मण सिंह के साथ मिलकर गांधी जी द्वारा संचालित अहिंसक आंदोलन में हिस्सा लेने लगीं। 1922-23 में झण्डा आंदोलन का संचालन कर वे पहली महिला सत्याग्रही के रूप में जेल गईं। जब उन्हें दूसरी बार जेल की सजा हुई, तब वे अपनी बेटी ममता, जो उनकी गोद में थी, को अपने साथ जेल लेकर गईं। इसके समानान्तर अपनी कविताओं से उन्होंने भारत के जनमानस में देशभक्ति का संचार किया। उनकी कविताओं का परिक्षेत्र राष्ट्रीय भावनाओं तक ही सीमित नहीं था। मानवीय पक्ष को उजागर करती कविताएँ भी उतनी ही जोश-खरोश से पाठकों को आंदोलित करती हैं।

ऐसी महान कवयित्री को शतः नमन!

प्रतिभा पारूल
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

“परकटी आंटी”

वो विधवा थी पर श्रृंगार ऐसा कर के रखती थी कि पूछो मत। बिंदी के सिवाय सब कुछ लगाती थी। पूरी कॉलोनी में उनके चर्चे थे। उनका एक बेटा भी था जो अभी नौवीं कक्षा में और बेटी पाँचवीं कक्षा में पढ़ रहे थे। पति रेलवे में थे उनके गुजर जाने के बाद रेलवे ने उन्हें एक छोटी से नौकरी दे दी थी। उनके जलवे अलग ही थे। 1980 के दशक में बॉय कटिंग रखती थी। सभी कालोनी की आंटियां उन्हें ‘परकटी’ कहती थी।

‘गोपाल’ अभी 16 साल का ही था, लेकिन घर बसाने के सपने देखने शुरू कर दिए थे। गोपाल का आधा दिन आईने के सामने गुजरता था और आधा परकटी आंटी की गली के चक्कर काटने में।

गोपाल का नव व्यस्क मस्तिष्क इस मामले में काम नहीं करता था कि समाज क्या कहेगा ? यदि उसके दिल की बात किसी को मालूम हो गई तो? उसे किसी की परवाह नहीं थी। परकटी आंटी को दिन में एक बार देखना उसका जूनून था। उस दिन बारिश अच्छी हुई थी। गोपाल स्कूल से लौट रहा था। साइकिल पर ख्वाबों में गुम उसे पता ही नहीं लगा कि अगले मोड़ पर कीचड़ की वजह से कितनी फिसलन थी। अगले ही क्षण जैसे ही वह अगले मोड़ पर मुड़ा साइकिल फिसल गई और गोपाल नीचे। उसी वक्त सामने से आ रहे स्कूटर ने भी टक्कर मार दी। गोपाल का सर मानो खुल गया हो। खून का फव्वारा फूटा। गोपाल दर्द से ज्यादा इस घटना के झटके से स्तब्ध था। वह गुम सा हो गया।

भीड़ में से कोई उसकी सहायता को आगे नहीं आ रहा था। खून लगातार बह रहा था। तभी एक जानी पहचानी आवाज गोपाल नाम पुकारती है। गोपाल की धुंधली दृष्टि देखती है कि परकटी आंटी भीड़ को चीर पागलों की तरह दौड़ती हुई आ रही थी। परकटी आंटी ने गोपाल का सिर गोद में लेते ही उसका माथा जहाँ से खून बह रहा था उसे अपनी हथेली से दबा लिया। आंटी की रंगीन ड्रेस खून से लथपथ हो गई थी। आंटी चिल्ला रही थी “अरे कोई तो सहायता करो, यह मेरा बेटा है, कोई हॉस्पिटल ले चलो हमें।”

गोपाल को अभी तक भी याद है। एक तिपहिया वाहन रुकता है। लोग उसमें उन दोनों को बैठाते हैं। आंटी ने अब भी उसका माथा पकड़ा हुआ था। उसे सीने से लगाया हुआ था। गोपाल को टांके लगा कर घर भेज दिया गया। परकटी आंटी ही उसे रिक्शा में घर लेकर आई।

गोपाल अब ठीक है। लेकिन एक पहली उसे समझ नहीं आई कि उसकी वासना कहाँ लुप्त हो गई। जब परकटी आंटी ने उसे सीने से लगाया तो उसे ऐसा क्यों लगा कि उसकी माँ ने उसे गोद में ले लिया हो। वात्सल्य की भावना कहाँ से आई। उसका दृष्टिकोण कैसे एकक्षण में बदल गया। क्यों वह अब मातृत्व के शुद्ध भाव से परकटी आंटी को देखता था।

(2017) आज गोपाल एक रिटायर्ड अफसर है। समय बिताने के लिए कम्प्युनिटी पार्क में जाता है। वहाँ बैठा वो आज सुन्दर औरतों को पार्क में व्यायाम करते देख कर मुस्कराता है। क्योंकि उसने एक बड़ी पहली बचपन में हल कर ली थी। वो आज जानता है, मानता है, और कई लेख भी लिख चुका है कि महिलाओं का मूल भाव मातृत्व का है। वे चाहे कितनी भी अप्सरा सी दिखें दिल से हर महिला एक ‘माँ’ है। वह ‘माँ’ सिर्फ अपने बच्चे के लिए ही नहीं है। वो हर एक लाचार में अपनी औलाद को देखती है।

दुनिया के हर छोटे मोटे दुःख को एक महिला दस गुणा महसूस करती है क्योंकि वह स्वतः ही कल्पना कर बैठती है कि अगर यह मेरे बेटे या बेटी के साथ हो जाता तो ? इस कल्पना मात्र से ही उसकी रूह सिहर उठती है। वो रो पड़ती है। और दुनिया को लगता है कि महिला कमजोर है।

गोपाल मुस्कराता है, मन ही मन कहता है कि “हे, विश्व के भ्रमित मर्दों! औरत दिल से कमजोर नहीं होती, वो तो बस ‘माँ’ होती है।”

कुलदीप कौर
डाटा एंटी ऑपरेटर
कार्यालय - प्रधान निदेशालय, रक्षा सम्पदा
पश्चिमी कमान चंडीगढ़

नसीहत में फजीहत

बाल-मन के भोलेपन को समेटे हुई सरल भाषा में लिखी गई यह कहानी बड़ों को अच्छी नसीहत देती है।

“मन्नू कहाँ जा रहे हो” मन्नू की माँ ने अपने लाडले बच्चे से पूछा। “माँ, मैं कनिका के पास जा रहा हूँ। वो कई दिनों से मुझे बुला रही है, पर मैं नहीं गया। आज फिर उसने खेलने के लिए बुलाया है।” तीन साल के मन्नू ने अपनी माँ से बड़े ही भोलेपन से कहा। माँ ने उसे नसीहत दी कि “तुम उससे लड़ोगे नहीं। उसके खिलौनों को तोड़ोगे नहीं और उसके घर पर कुछ भी खाओगे नहीं। बस खेलने के बाद जल्दी घर आ जाना।”

मन्नू को माँ की इजाजत मिल गई। फिर क्या था? अपने घर से बाहर निकलते ही वह उछल कूद करते हुए कनिका के घर की ओर दौड़ पड़ा। जो उसके घर के सामने था। कनिका मानो उसके आने की प्रतीक्षा ही कर रही थी। उसे देखते ही दौड़ कर दरवाजे पर आई और मन्नू आ गया, मन्नू आ गया, कह कर चिल्लाने लगी।

दोनों बच्चे बड़ी तन्मयता के साथ नए खिलौने से खेल रहे थे। कभी-कभी आपस में झड़प भी हो जाती, जिसके बीच हाथापाई भी हो जाती। तो कनिका की माँ “क्या कर रहे हो? क्यों लड़ रहे हो? लड़ते नहीं” कह कर शांत करा देती थी। उनका खेल फिर शुरू हो जाता था।

बच्चों का खेल चल ही रहा था कि थोड़ी देर में ठंडी ठंडी हवा चलने लगी और बारिश होने लगी। कनिका के पापा भी रविवार का अवकाश होने के कारण घर पर ही थे। उन्होंने अपनी पत्नी से कहा, “बरसात हो रही है। ऐसे में गर्मा-गर्म पकौड़े और चाय हो जाए तो मजा ही आ जाये।” “बहुत अच्छा, अभी बनाती हूँ”, कह कर कनिका की माँ चाय और पकौड़े बनाने में लग गई।

थोड़ी देर में गर्मा-गर्म पकौड़े और चाय तैयार हो गए। कनिका की माँ ने उसके पापा, कनिका और मन्नू को पकौड़े खाने को दिये। कनिका बड़ी खुशी से पकौड़े खाने लगी। मन्नू ने खाना शुरू नहीं किया। उसे अपनी माँ की बात याद आ रही थी कि किसी के घर कुछ नहीं खाना। वो चाहते हुए भी पकौड़े नहीं खा रहा था। उसने सोचा कि क्यों न माँ से पूछ लिया जाए। वो घर के दरवाजे पर आया और वही से चिल्ला कर पूछने लगा, “माँ, माँ मैं पकौड़े खा लूँ क्या।” माँ ने उसे आने को कहा। “नहीं माँ, पहले बताओ, क्या मैं पकौड़े खा लूँ। मन्नू ने अपना प्रश्न दोहराया। उसकी माँ ने कहा, “नहीं पहले यहाँ आओ।” तीसरी बार जब मनु ने वही सवाल पूछा तो माँ ने उत्तर देना मुनासिब नहीं समझा और घर के अंदर चली गई। मन्नू को पकौड़े खाने थे तो खाये। थोड़ी देर में बारिश बंद हो गयी और मन्नू अपने घर आ गया। माँ ने उसकी पिटाई कर डाली कि मोहल्ले वालों के सामने उसने उनकी बेइज्जती कर दी। मन्नू के पापा उसकी माँ पर बरस पड़े कि बच्चों पर इतनी पाबंदी क्यों लगाई? मन्नू के पापा और उसकी माँ आपस में लड़ते और झगड़ते रहे। थोड़ी देर में मन्नू और कनिका बारिश में भीगते हुये खेलते रहे जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

दिपेन्द्र कुमार मीना
वरिष्ठ लिपिक
प्रधान निदेशालय, रक्षा संपदा
दक्षिण - पश्चिम कमान, जयपुर

लोकतंत्र की विजय गाथा

देश इस वर्ष लोकतंत्र के पावन पर्व का महोत्सव मना रहा है। इस लेख के छपते-छपते चुनाव भी हो चुके होंगे, नई सरकार का गठन भी हो चुका होगा। पर पाठको, क्या आप जानते हैं भारत के लोकतंत्र का पहला अध्याय कब लिखा गया था। इस व्यवहार को वास्तविकता पर लाने की असल modus operandi क्या थी, कितने संसाधनों से इसे आयोजित किया गया था? आइए जरा इस पर चर्चा कर लें।

भारत के लोकतंत्र में पहले ऐतिहासिक आम चुनाव न केवल मील का पत्थर है बल्कि इन्होंने देश के लोकतान्त्रिक मिजाज को भी एक आधार दिया। जिसके बल पर पिछले सात दशक से ज्यादा समय से भारत लोकतंत्र की राह से सुदृढ़ तरीके से आगे बढ़ता गया। तमाम विरोधाभासों, असंतोष, अमीर-गरीब की खाई, आर्थिक असमानता, बेरोजगारी जैसे गंभीर मुद्दों का आधार स्त्रोत चुनाव ही रहे हैं चुनावों के दौरान ही मुद्दों की लड़ाई सड़कों पर लड़ी जाती है, जिन्हें वाणी संसद में मिलती है।

चुनावों की महत्ता से इन्कार नहीं किया जा सकता, ये बात हम सबके समझने की हैं। चुनाव रूपी विवरणी से ही लोकतंत्र की मर्यादा, उसके निजी स्वरूप सभी की रक्षा का दम हम भर सकते हैं। हम सबको देश के नागरिक के रूप में इसके महात्म्य को समझकर पूरी गंभीरता के साथ इस महाआयोजन में अवश्य अपनी भागीदारी निभानी होगी। तभी एक सच्चे नागरिक के रूप में हम देश, समाज, मानवता के प्रति अपने दायित्व को भली-प्रकार निभा पाएंगे।

देश के पहले आम चुनाव वर्ष 1952 में आयोजित हुए। इसे बूथ, बैलेट और साझेदारी का उत्सव कहें, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के शब्द 'हम सबका पहला परीक्षण' को कौन भूल सकता है। उनके द्वारा 22 नवम्बर 1951 को रेडियो में सांय 8:30 बजे उदृत शब्द – "वयस्क मताधिकार रूप में यह हमारा पहला चुनाव है। आज स्थापित यह मानक आने वाले समय के लिए उदाहरण का कार्य करेगा और भावी चुनावों का संचालन करेगा"। इस उत्सव की महत्ता रेखांकित करते हैं। मद्रास, आज के चेन्नई में, ये चुनाव 1952 की पूरी जनवरी में हुए, और चुनाव से पूर्व, जनता को किस तरह से चुनाव में वोट डालना है और उनके वयस्क मताधिकार क्या है इस बाबत पूर्णरूपेण जागरूक किया गया। इसके लिए रेडियो प्रसारण, सिनेमा हॉलों में डाक्यूमेंटरी, पत्रिकाओं जैसे साधनों का सहारा लिया गया। उस समय चूंकि 20% जनता ही शिक्षित थी, इसलिए मतदान केन्द्रों पर मतदान चुनाव चिन्ह अंकित मतदान पेटियाँ मुहैया कराई गईं किए गया जिससे जिस भी उम्मीदवार को मत दिया जाता उसके मत पत्र संबन्धित मतदान पेटियों में डाल दिए जाते थे।

उस समय मतगणना में काफी समय लगता था और जनता को परिणाम केवल समाचार पत्रों के जरिए ही पता चलता था।

तंजावुर-त्रिचिर की महिलाएं अपने मत के प्रति जागरूक थीं। वे कोशिश करती थी कि उनका मत पसंदीदा उम्मीदवार को जाए।

पहले आम चुनाव में कोई भी उम्मीदवार हो सकता था और इससे आम जनता को आत्मविश्वास मिलता था। चुनाव के प्रति sense of belonging की भावना उत्पन्न होती थी। चुनाव के कारण आपस में जुड़ी जनता रात भर रैलियों में भाग लेती थी।

मद्रास इन्फोर्मेशन मैगजीन के अनुसार प्रचार नियमों (1951-52 के प्रकाशन) में एक नियम था कि उम्मीदवार यदि मतदान दिवस को अपने मतदान केंद्र के 100 मीटर के दायरे के भीतर किसी भी स्थान यहाँ तक कि निजी स्थान पर भी अपना प्रचार करता है तो उसे बिना वारंट गिरफ्तार किया जा सकता था और 250 रू (आज के 20,000 से ज्यादा) का दंड लगाया जाता था। मतदान पेट्टी के साथ छेड़छाड़ करने वाले व्यक्ति को भावी चुनावों में मतदान के अधिकार से वंचित किया जा सकता था।

उत्तर भारत की ज्यादातर महिलाएं अपने नाम से मतदाता सूची में पंजीकृत नहीं होती थी, इसके बजाय 'फलाने की बेटी' 'फलाने की माँ', नाम से उनका पंजीकरण किया जाता था। इस चुनाव में 2.8 लाख महिलाओं के नाम सूची से हटा दिए गए थे जिसके कारण महिलाएं गुस्सा हो गईं। परिणाम यह हुआ कि उनके गुस्से की गंभीरता को समझते हुए मतदाता सूची में उनके ही नाम से पंजीकरण होने लगा।

1952 के चुनाव से पूर्व जनता को दिए अपने सम्बोधन में मद्रास के मुख्य चुनाव अधिकारी 'एस वेंकटेश्वरन' ने महिलाओं से मतदान केन्द्रों पर शर्म छोड़ कर खुलकर आने की अपील की।

उनका कहना था, 'हमारे चुनाव तब तक अधूरे है जब तक इनमें हमारी महिलाओं, जो देश की मतदाता है, भागीदारी नहीं होगी और वे मतदाता के रूप में पूरी सजगता और समझदारी से अपना मत नहीं डालती। चतुर मतदाता पूरी चतुराई से मामले को समझते हुए मत देता है और हमारी महिलाएं इसमें कहीं पीछे नहीं हैं।

साथ ही उन्होंने इस चुनाव में गोश (Gosha) महिला मतदाताओं (जो इस्लामिक परम्पराओं का पालन सख्ती से करती हैं) के लिए सम्पूर्ण महिला स्टाफ की तैनाती की भी घोषणा की। दूसरे शब्दों में केवल महिला मतदाता ही इन मतदान केन्द्रों पर मत डाल पाए, ऐसी व्यवस्था की गई। ये लोकतांत्रिक परंपरा को बनाए रखने उसमें समाज के प्रत्येक हिस्से की भागीदारी को शामिल करने जैसे उपाय शामिल थे।

भल्ला राम मीना
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

पहली तनख्वाह

अरे मनोरमा, मेरे खाते में ये अस्सी हजार रूपए किसने ट्रांसफर किए? सुबह-सुबह समाचार पत्र और चाय का आनंद लेते धीरज बाबू ने मोबाइल पर आए क्रेडिट मैसेज को पढ़कर अपनी पत्नी से पूछा।

फिर आगे संदेश का विस्तार देखते हुए बोले, 'अरे मनोरमा, ये पैसे तो अंजली ने मेरे खाते में डाले हैं।'

अंजली, धीरज और मनोरमा की पुत्र वधू है। पिछले महीने ही उनके इकलौते पुत्र अमित का विवाह उससे हुआ है। दोनों बेंगलुरु में सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं।

'अरे जी, इसमें परेशानी की क्या बात है, बहू को फोन लगाकर, उसी से पूछ लीजिए ना।' नाश्ता परोसते हुए मनोरमा बोली।

'हेलो! अंजली बिटिया, तुमने मेरे खाते में पैसे क्यों डलवाए!' धीरज बाबू ने अधीर होकर फौरन ही फोन लगा दिया था।

'पापा जी चरण स्पर्श! पापा, शादी के बाद ये मेरी पहली तनख्वाह है। कहते हैं कि विवाह के पश्चात हर बेटी का एक नया जन्म होता है, उसे एक नया जीवन मिलता है और साथ ही सास-ससुर के रूप में उसे नए माता-पिता भी मिलते हैं। पापा, मैंने अपनी नौकरी की पहली सैलरी अपने जन्म देने वाले माता-पिता को भेंट की थी और अब अपने नए जीवन की पहली तनख्वाह अपने नए माता-पिता को सौंप रही हूँ।

'बेटी तेरी बात सुनकर मन गदगद हो गया। रिश्तों की अहमियत को भावनाओं के इतने सुंदर रंग दिए जा सकते हैं, बेटी आज हमने तुझसे सीखा। कहते-कहते धीरज बाबू की आंखे भर आईं।

हेमंत कुमार गोयल
डाटा एंट्री ऑपरेटर

पत्तल

पत्तल और एक सामाजिक पहल.....
जिस पर विचार करना हमारा सामाजिक कर्तव्य है.....

एक बहुत छोटी सी बात है पर हमने उसे विस्मृत कर दिया। हमारी भोजन संस्कृति, इस भोजन संस्कृति में बैठकर खाना और उस भोजन को 'दोने पत्तल' पर परोसने का बड़ा महत्व था। कोई भी मांगलिक कार्य हो उस समय भोजन एक पंक्ति में बैठकर खाया जाता था और वो भोजन पत्तल पर पूरे भारत वर्ष में परोसा जाता था

ये प्रथा आज भी हमारे हिमाचल प्रदेश के तकरीबन सभी जिलों में जारी है। परंतु आज आधुनिकता ने इसे कई क्षेत्रों में खत्म करना शुरू कर दिया है और उसकी जगह पर्यावरण के प्रतिकूल प्रभाव देने वाले कागज तथा प्लास्टिक से बनी पत्तलों ने ले लिया है जो बहुत ज्यादा घातक है।

पत्तल, जो विभिन्न प्रकार की वनस्पति के पत्तों से निर्मित होती थी आधुनिकता के युग ने गुमनाम जैसी कर दी। क्या हमने कभी जानने की कोशिश की कि भोजन पत्तल पर परोसकर ही क्यों खाया जाता था। क्योंकि अनेक प्रकार के पेड़ों के पत्तों से बनी पत्तल में गुण भी अलग अलग होते हैं। तो आइए जानते हैं कि किन पत्तल में भोजन करने से क्या फायदा होता है? लकवा से पीड़ित व्यक्ति को अमलतास के पत्तों से बनी पत्तल पर भोजन करना फायदेमंद होता है।

जिन लोगों को जोड़ों के दर्द की समस्या है उन्हें करज के पत्तों से बनी पत्तल पर भोजन करना चाहिए। जिनकी मानसिक स्थिति सही नहीं होती है। उन्हें पीपल के पत्तों से बनी पत्तल पर भोजन करना चाहिए। पलाश के पत्तों से बनी पहल में भोजन करने से खून साफ होता है और बवासीर के रोग में भी फायदा मिलता है। केले के पत्ते पर भोजन करना तो सबसे शुभ माना जाता है यह पत्तल मां लक्ष्मी के आगमन का मार्ग प्रशस्त करता है। इसमें बहुत से ऐसे तत्व होते हैं जो हमें अनेक बीमारियों से भी सुरक्षित रखते हैं। हमारे हिमाचल प्रदेश में टोर (tour) नामक बेल के पत्तों से पत्तल बनाई जाती है। जो औषधीय गुणों के साथ अत्यंत शुभ मानी जाती है। पत्तल में भोजन करने से पर्यावरण भी प्रदूषित नहीं होता है क्योंकि पत्तल आसानी से नष्ट हो जाती है। पत्तलों के नष्ट होने के बाद जो खाद बनती है वो खेती के लिए बहुत लाभदायक होती है।

पत्तले प्राकृतिक रूप से स्वच्छ होती है इसलिए इस पर भोजन करने से हमारे शरीर को किसी भी प्रकार की हानि नहीं होती है। अगर हम पत्तलों का अधिक से अधिक उपयोग करेंगे तो गांव के लोगों को रोजगार भी अधिक मिलेगा क्योंकि पेड़ सबसे ज्यादा ग्रामीण क्षेत्रों में ही पाये जाते हैं। अगर पत्तलों की मांग बढ़ेगी तो लोग पेड़ भी ज्यादा लगायेंगे जिससे प्रदूषण कम होगा। प्लास्टिक डिस्पोजल के कारण जो हमारी मिट्टी, नदियों, तालाबों में प्रदूषण फैल रहा है पत्तल के अधिक उपयोग से वह कम हो जायेगा।

सौरभ सूद
निदेशालय, रक्षा सम्पदा,
पश्चिमी कमान, चंडीगढ़

कोविड-19 महामारी: प्रभाव एवं बचाव

सर्वप्रथम कोरोना नामक वायरस वर्ष 1930 में एक मुर्गी में पाया गया। मुर्गी को सांस लेने में कठिनाई हुई और उसकी शारीरिक हालत बहुत खराब हो गई। वर्ष 1940 तक यह वायरस अन्य जानवरों में फैला। वर्ष 1960 में इससे मानव भी संक्रमित हो गया। तत्पश्चात वर्ष 2019 में यह वायरस चमगादड़ के माध्यम से चीन में आया। इस बार यह वायरस ऐसा फैला कि पूरी दुनिया इसकी चपेट में आ गई। दिसंबर, 2019 में पहली बार यह वायरस चीन के वुहान जिले में पाया गया। सामान्यतया कोरोना नाम से जाने जानी वाली महामारी जो वर्ष 2019 में फैलना शुरू हुई जिसके चलते इसे कोविड-19 नाम से पहचाना गया। कोरोना-19 महामारी का संक्रमण एक ऐसे वायरस के कारण हुआ जिसके कारण जुकाम, सांस लेने में तकलीफ इत्यादि समस्याएं हुईं। यह एक प्राण घातक बीमारी साबित हुई तथा इससे बचके रहना ही इसकी दवा सिद्ध हुई।

यह एक ऐसी बीमारी है जो मनुष्य के श्वसन तंत्र को सीधे प्रभावित करती है और इतनी प्रभावशाली है कि अगर इसका समय रहते उपचार न किया जाए तो मनुष्य के प्राणों पर बन आती है। इस महामारी का प्रकोप केवल भारत में ही नहीं बल्कि समूचे विश्व में रहा है। इसके कारण वैश्विक हालात इतने बुरे हो गए थे कि उसके उत्तरोत्तर प्रभाव आज भी नजर आ रहे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) द्वारा इसे महामारी घोषित किया गया। कोविड-19 वायरस बहुत ही सूक्ष्म आकार का होता है। किन्तु इस सूक्ष्म वायरस ने आग की तरह फैलकर भारतवर्ष सहित पूरे विश्व को हिला कर रख दिया और देखते ही देखते विश्वव्यापी महामारी का रूप ले लिया। इसके शुरुआती लक्षण फ्लू जैसे ही होते हैं जो धीरे-धीरे पूरे शरीर पर कब्जा करके विकराल रूप धारण कर लेता है। कोविड-19 महामारी की चपेट में पूरा विश्व आ चुका है। इस वायरस का प्रमुख भागीदार चीन को माना जा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार इस महामारी के मुख्य लक्षण- बुखार, खांसी, सांस लेने में तकलीफ, नाक बहना तथा गले में खरास इत्यादि होते हैं। यह एक संक्रामक बीमारी है जो एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य तक प्रवाह करता है।

इस महामारी से बचने के लिए विश्व के लगभग सभी देशों ने जनता कर्फ्यू लगाया और अपने नागरिकों से घर में ही रहने का अनुरोध किया गया। वायरस जनित इस प्राणघाती महामारी को रोक पाना नामुमकिन सा लग रहा था। भारत सरकार ने भी अपने नागरिकों के जीवन रक्षा हेतु पूरे देश में संपूर्ण लॉकडाउन लगाया। आपातकालीन स्थिति को लॉक-डाउन कहते हैं जिसका सीधा अर्थ है- सम्पूर्ण तालाबंदी। इस भयावह स्थिति में घर से बाहर निकलने पर रोक लगी थी। जब लॉकडाउन बृहत्तर स्तर पर लागू हुआ तो इसने कर्फ्यू का रूप धारण कर लिया। भारत में दिनांक 24 मार्च, 2020 को लॉकडाउन लगाया।

कोविड काल के दौरान और उसके बाद में विभिन्न देशों की ओर से कई वैक्सीन मार्केट में आने से वर्तमान में इसका प्रसार एवं विस्तार धीरे-धीरे कम हो रहा हुआ है। आज विश्व के कई देशों द्वारा कोविड से सुरक्षा हेतु विभिन्न प्रकार की वैक्सीन तैयार कर ली गई हैं- जैसे कोविशील्ड, कोवैक्सीन, स्पुतनिक-V, स्पाइवैक्स, जायकोव-डी इत्यादि। हमारे देश में निर्मित कोवैक्सीन, कोविशील्ड जैसी वैक्सीन देश के जन-मानस की जीवन रक्षा के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुई हैं। हमारे वैज्ञानिकों के अथक प्रयासों के फलस्वरूप ही इन प्रभावशाली वैक्सीनों का उत्पादन संभव हो पाया है।

भारत सरकार ने कोविड-19 मामलों के उचित प्रबंधन के लिए, स्वास्थ्य सुविधाओं की तीन स्तरीय व्यवस्था को लागू किया, जैसे हल्के या पूर्व-लक्षण वाले मामलों के लिए आइसोलेशन बेड के साथ कोविड देखभाल केंद्र, मध्यम मामलों के लिए ऑक्सीजन सुविधायुक्त आइसोलेशन बेड के साथ समर्पित कोविड हेल्थ सेंटर (डीसीएचसी), गंभीर मामलों के लिए आईसीयू बेड के साथ समर्पित कोविड हॉस्पिटल (डीसीएच)। कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी), रक्षा, रेलवे, अर्धसैनिक बल, इस्पात मंत्रालय, इत्यादि के अधीन तृतीयक देखभाल अस्पतालों को केस प्रबंधन के लिए लगाया गया।

संक्षेप में सरकार कोविड जनित समस्याओं को tackle करने तथा इस क्षेत्र में सुरक्षा पूर्णोपाय अपनाने की ओर गंभीर रही है। यह समय की मांग भी है।

विक्रम सिंह
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

कहने की महत्ता

मैं साहित्य की विद्यार्थी रही हूँ। हमेशा से ही किताबों की दुनिया में डूबना अच्छा लगता रहा है। बहुत पहले पाठ्यक्रम में चंद्रधर शर्मा गुलेरी की एक कहानी 'उसने कहा था' लगी थी। सन् 1906 में लिखी यह कहानी हिन्दी साहित्य की 'कहानी' परिभाषा में सम्मिलित सभी मानकों पर खरी उतरती हुई हिन्दी की पहली कहानी' मानी गई थी।

इस कहानी का नायक अपने बचपन की परिचित कन्या के वर्तमान से टकराता है और उस पहचान के वशीभूत कन्या, जो आज सुगृहिणीत्व का दायित्व निभा रही है युद्ध पर जाते पति के प्रेम वशीभूत हो नायक से मांग बैठती है- 'जैसा भेज रही हूँ वैसे ही वापस मिले।' बिना परिणाम, परिस्थितियों का भान किए उसका यह कहना नायक को अदम्य कर्तव्यनिष्ठा में बांध देता है।

इस दायित्व की अर्न्तधारा को प्रतिक्षण महसूस करते नायक का प्रत्येक कारण उस एक वाक्य के आस पास सिमट गया है।

प्रथम विश्वयुद्ध की ज्वलंत विभीषका में दुश्मनों के साथ युद्ध में नायक अपने प्राणों का बलिदान देते हुए अपने बचपन की सखा के पति को बचा लेता है किन्तु शहीद होते-होते भी उसे कह उठता है- 'आपको न बचाता तो क्या करता। आपको तो बचाना ही था। उसने जो कहा था'।

इस लेख का शीर्षक भी 'उसने कहा था' ही है। इस शीर्षक और कहानी के वर्णन के पीछे मेरा जो मंतव्य है, वो यही कि, 'कुछ कहना हमेशा जरूरी होता है। आप दूसरों को उनके कर्तव्यबोध की कड़ी में अपनी वचनबद्धता एकनिष्ठा में बांध लेते हैं। चाहे आपके कहने का मोल उस समय इतना न हो कि दूसरा उस पर ध्यान दें, किन्तु कहीं न कहीं दूसरे के अवचेतन मन में एक दायित्व बोध तो पैदा कर ही देता है।

यही बात हमारे पूरे परिवेश पर भी लागू है। अपनी बात कहना, उसे दूसरे के दायित्व पद से बांधना हमेशा ही हमारे लिए श्रेयस्कर है। इस तरह से पूरी ज़िम्मेदारी का भार हम अपने ऊपर नहीं ले पाते इसमें दूसरे की भागीदारी भी सम्मिलित हो जाती है।

तो आइए अपनी बात कहना, दूसरों को उनके कर्तव्य बोध में बांधना क्यों न अभी से शुरू कर दें।

चारू तिवारी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

“रास्ता कैसा भी हो कट जाएगा”

रास्ता कैसा भी हो, कट जाएगा,
हल मुश्किलों का निकल जाएगा,
होगी अगर रात तो दिन भी होगा जरूर,
इन चिरागों के आगे अंधेरा टिक न पाएगा,
रास्ता कैसा भी हो, कट जाएगा,
हल मुश्किलों का निकल जाएगा,

झूठ तो झूठ है, झूठ से बच कर रहो,
सामने सच के झूठ टिक ना पाएगा,
क्या पता किस मोड़ पर रूठ जाए ज़िंदगी,
मौत से न कोई जीत पाएगा,
रास्ता कैसा भी हो, कट जाएगा,
हल मुश्किलों का निकल जाएगा,

माना गम हैं बहुत और गमजदा है तू
हौसला रख ये वक्त भी गुजर जाएगा,
लोग देते नहीं साथ तो कोई बात नहीं 'फुलारा'
दौर मुफ़लिसी का गुजर जाएगा,
रास्ता कैसा भी हो, कट जाएगा,
हल मुश्किलों का निकल जाएगा,

तेजिंदर दत्त फुलारा
प्रवर श्रेणी लिपिक (यूडीसी)
रक्षा सम्पदा कार्यालय,
देहरादून

(साहसी खरगोश गुल्लू पांडा)

देशी-विदेशी से जन्मा था वो खरगोश हमारा
भूरा-सफेद रंग था उसका, लगता था बड़ा प्यारा
आँखों पर भूरे धब्बे और कानों को उठाए
लगता था मानो उसे कुछ दिया सुनाई
कमरे में वह सुबह-शाम सरपट दौड़ लगाता था
'गुल्लू पांडा' कोई उसे, कोई 'लडू बाबू बुलाता था
इस खरगोश के अलावा भी कुछ और खरगोश थे साथ
पर सभी खरगोशों की आपस में बनती नहीं थी बात
उनके बीच इसीलिए बना दी गई थी दूरी
सुरक्षा के लिए उनकी, यह करना था बहुत जरूरी
उनकी सुख-सुविधा का हरदम ध्यान रखा जाता था
एक-दूसरे से उन्हें नहीं मिलने दिया जाता था
पर एक दिन बड़ी खरगोशनी ने गुल्लू को ऐसे सताया
पहुँच कर उसके हाते में गुल्लू बहुत पछताया
खरगोशनी ने नन्हे पर ऐसा प्रहार किया
तोड़कर उसकी कमर उसे लाचार किया
देखकर उसकी दयनीय दशा छोटी बहन घबराई
दौड़-भाग कर ले उसे डॉक्टर को दिखाई
जाँच कर खरगोश की तब डॉक्टर बोला,
"टूट गई है इसकी रीढ़ की हड्डी,
बस कुछ दिनों का मेहमान है,
सेवा करो इसकी जब तक इसके तन में प्राण है"
सुनकर बहन ने खरगोश को और कहीं दिखाया
पर सबने उस खरगोश का इलाज मुश्किल बताया
घर पर लाकर तब भैया ने उसका किया उपचार
मरहम-पट्टी, दवा लगाकर उसे किया तैयार
नन्हे उस खरगोश ने भी अपना साहस दिखाया
खाता-पीता रहा वह मन भर, तनिक नहीं घबराया
घिसट-घिसट कर चलते हुए यूँ ही वर्ष बिताया
गुजर गया वह फिर एक दिन एक वर्ष के बाद
पर दे गया एक शिक्षा सबको अपने जाने के बाद
जीवन में संघर्ष तो आम है
इसमें शरीर को कभी मिलता नहीं विराम है
पर ऐसा हो जीवन जिससे किसी को कुछ मिले
न हो यदि खुशी की बातें, साहस के पल तो मिले

मनीष कुमार श्रीवास्तव
क.अ.अ.
निदेशालय, दक्षिण कमान

(लहरों-सी उलझन)

जीवन की आपाधापी में कैसी ये उलझन है ?
समंदर की अशांत लहरों-सी दिल की ये धडकन है
गुजरी हुई यादें जब मन पर छा जाती,
टकराकर दिल से इसे तब कमजोर बनाती
उलझन के इस पल में बीत रहे हैं कल
लहरों-सी यादें अब हो गई हैं प्रबल
है फिर भी मन में यह आस अभी
पहुँचूंगा मंजिल के पास कभी
कर पाऊंगा अपने रास्ते तय
लक्ष्य पर अपनी कभी होगी विजय
जीवन के मझधार में भी अपना जीवन सादा है
हो उलझनों के थपेड़े मगर मन से मजबूत वादा है

मनीष कुमार श्रीवास्तव
क.अ.अ.
निदेशालय, दक्षिण कमान

प्रयास

प्रयास कर हल निकलेगा।
आज नहीं तो कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा सध
मरुस्थल से भी अमृत निकलेगा।
बंजर भूमि से भी फल निकलेगा।
हिम्मत जुटा हिम्मत को आग दे फौलाद का भी बल निकलेगा।
जिंदा रख दिल में उम्मीदों को
गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा।
कोशिश रख जारी कुछ कर गुजरने की
जो है आज थमा थमा सा
चल निकलेगा।

अरूण कुमार
टीजीटी
छावनी बोर्ड स्कूल, रुड़की

बचपन

एक बचपन का जमाना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था।
चाहत चाँद को पाने की थी
पर दिल तितली का दीवाना था
खबर न थी कुछ सुबह की
न शाम का ठिकाना था
थक कर आना स्कूल से
पर खेलने भी जाना था
माँ की डांट खानी थी
परियों का फसाना था
बारिश में कागज की नांव थी
हर मौसम सुहाना था
हर खेल में साथी थे
हर रिश्ता निभाना था
गम की जुबान न होती थी
न जख्मों का पैमाना था
क्यों हो गए इतने बड़े
इससे अच्छा तो वो बचपन का जमाना था ।

अरूण कुमार
सहायक अध्यापक
छावनी बोर्ड जूनियर स्कूल
आर.ए. बाजार, तोपखाना, मेरठ छावनी

उम्र का तकाजा

खतरे के निशान से ऊपर बह रहा हैं उम्र का पानी
वक्त की बरसात है कि थमने का नाम नहीं ले रही...
आज दिल कर रहा था, बच्चों की तरह रूठ ही जाऊँ पर....
फिर सोचा, उम्र का तकाजा है, मनाएगा कौन....
रखा करो नज़दीकियाँ, ज़िंदगी का कुछ भरोसा नहीं ॥
फिर मत कहना चले भी गए और बताया भी नहीं...
चाहे जिधर से गुजरिए, मीठी सी हलचल
मचा दीजिये....
उम्र का हरेक दौर मजेदार है,
अपनी उम्र का मजा लीजिए मजा लीजिए....

अमोल भगवान मोरे
कनिष्ठ लिपिक
छावनी बोर्ड अहमदनगर

सूरज की किरणें

सूरज की किरणें छूने चले,
सपनों के रंग बुनने चले।
हर सुबह नयी उम्मीद लेकर,
हम चलते अपने रास्ते
चाहे कितनी भी हों कठिनाइयाँ,
हम न हारेंगे, करेंगे संघर्ष।
सपनों की ऊँचाइयों को छूने,
हर पल तैयार रहेंगे, हर मुश्किल को झेलने।
सपनों का रंग बिखेरते चलें,
हर दिन नयी मंजिल की ओर बढ़ते चलें।
सूरज की किरणें छूने चले,
सपनों के रंग बुनने चले।

शालिनी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

शिक्षित बेरोजगारी एक विकट समस्या

शिक्षित बेरोजगारी का अर्थ होता है किसी राष्ट्र अथवा देश में एक वर्ग जो माध्यमिक, उच्च माध्यमिक एवं कुशल शिक्षा प्राप्त होते हुए भी रोजगार प्राप्त नहीं हो पाता एवं उसे उसकी शिक्षा के अनुरूप रोजगार प्राप्त नहीं हो पाता और यह अनुपात जब समाज में बढ़ता जाता है तो इसे शिक्षित बेरोजगारी कहा जाता है।

आज के युग में जहाँ बढ़ती जनसंख्या एक विशाल समस्या बनती जा रही है, वहीं शिक्षित बेरोजगारी जैसी समस्या भी विकराल रूप धारण करती जा रही है। एक ओर जहाँ युवा वर्ग नई-नई आशाओं और प्रतिभाओं के साथ प्रत्येक वर्ष अपने सपनों को साकार करने के लिए अपना भाग्य आजमा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर भ्रष्टाचार के बादल उनके सपनों पर पानी फेरने का काम कर रहे हैं। शिक्षित बेरोजगारी का मुख्य कारण रोजगार उस मात्रा में उत्पन्न न होना है, जिस मात्रा में एक वर्ग शिक्षा तथा दक्षता प्राप्त करके योग्य होता है। अधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण बहुत सारे प्रतिभावान शिक्षा प्राप्त करके अपने लिए एक अच्छी नौकरी की तलाश में इधर-उधर भटक रहे हैं। शिक्षित बेरोजगारी का दूसरा कारण दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली है। अब तक की शिक्षा सैद्धान्तिक रही है, रोजगारमूलक नहीं। तकनीकी / रोजगारपरक शिक्षा के अभाव में शिक्षित युवक डिग्री पाकर इधर-उधर भटकते हैं। सरकार द्वारा इस समस्या पर गंभीरता से विचार करते हुए नये-नये उपायों के तहत प्रतिभावान और हर तबके के लोगों को नये-नये कौशल से अवगत कराया गया है। इसके अंतर्गत भारत सरकार द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत का नया अभियान चलाया जा रहा है। कई बैंकों द्वारा नई प्रतिभाओं को ऋण की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है ताकि वे स्वयं का रोजगार उत्पन्न कर सकें।

सरकार को चाहिए कि कुछ ऐसे मार्गदर्शन शिविर का आयोजन करें जिसमें युवा स्वयं अपनी प्रगति का मार्ग बना सके।

साथ ही, शिक्षित बेरोजगारी को खत्म करने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों में जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण के अतिरिक्त शिक्षा प्रणाली में सुधार/सैद्धान्तिक शिक्षा के स्थान पर व्यवहारपरक / रोजगारमूलक शिक्षा प्रदान करने की ओर भी ध्यान दिया जाए। इस तरह से विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के नये अवसर सृजित होंगे तथा युवाओं को रोजगार मिलेगा तथा भारत आत्मनिर्भर बनेगा।

संदीप बी. मेश्राम
आशुलिपिक-1
प्रधान निदेशालय, रक्षा सम्पदा,
दक्षिण कमान

सच्चा सुख

किशन एक छोटे से गाँव में अपने परिवार के साथ रहता था। वह गाँव में अपनी उदारता व अच्छे व्यवहार के लिए जाने जाते थे। सभी उनका आदर और सम्मान करते थे। सबकी मदद के लिए वे हमेशा तैयार रहते थे। उनका एक बेटा था रोहित। बचपन से ही वह अपने पिता के इस व्यवहार को देखता था परंतु कहता कुछ नहीं था। धीरे धीरे पढ़ लिख कर वह शहर में नौकरी करने लगा।

एक दिन जब वह अपने घर गाँव आया हुआ था। पिता को लेकर वह घूमने निकला। रास्ते में एक गरीब व्यक्ति मिला जो बीमार भी लग रहा था। वह पेड़ के नीचे बैठा था। किशन ने गाड़ी रुकवाकर उससे कहा आप यहाँ क्यों बैठे हो। उस व्यक्ति ने कहा मेरा कोई नहीं है, घर भी नहीं है और कई दिन से कुछ खाया भी नहीं है बुखार भी है। किशन ने उसे कुछ खाने की वस्तुएँ व कुछ रुपए दवाई के लिए दिए।

रोहित ने ये सब देख कर कहा पिताजी आप कब तक इन गरीबों पर अपना धन व समय बर्बाद करते रहोगे। अपनी हालत के जिम्मेदार खुद हैं। इंसान को अपना धन व समय अपनी इच्छाओं और सपनों को पूरा करने में लगाना चाहिए। किशन ने आश्चर्य से अपने पुत्र को देखा और सोचा कि इसके विचार ऐसे क्यों हैं। यह सही समय है पुत्र को जीवन की सच्ची शिक्षा देने का।

किशन ने चुपचाप गाड़ी में बैठकर कहा बेटा आज मैं तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ, एक राजा था। वह बहुत सम-रिधशाली, शक्तिशाली था। उसके पास सारे ऐशों आराम, रूपया पैसा था। परंतु उसे मन की खुशी ना थी। एक दिन उसने अपने सभी मंत्रियों को बुलाया और उनसे पूछा कि मेरे पास सब कुछ है परंतु फिर भी मैं खुश नहीं हूँ मुझे खुशी कहा मिलेगी। सभी मंत्रियों ने अपनी समझ से अपना- अपना जवाब दिया पर राजा संतुष्ट न हुआ।

एक दिन राजा अपने नगर में भ्रमण कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि एक किसान बहुत खुश है। राजा ने उससे पूछा तुम तो इतने गरीब हो फिर भी इतने खुश कैसे हो। किसान ने उत्तर दिया कि मेरी खुशी आस पास के लोगों की खुशी में है। मैं यथा संभव सबकी मदद करता हूँ। मदद के बाद उनके चेहरे पर जो मुस्कान आती है उसे देखकर मुझे सुख की अनुभूति होती है। जिससे मैं खुश रहता हूँ। राजा ने उसकी बात सुनी विचार किया और उसे अपने जीवन में अपनाने की ठानी अब राजा भी रात में अपने नगर में घूम कर गरीब, मजबूर लोगों की मदद करने लगा। धीरे-धीरे राजा ने महसूस किया वह अब खुश था। रोहित ने कहानी सुनी परंतु कुछ कहे बिना ही आगे बढ़ गया।

समय बीता रोहित वापस जाकर अपनी नौकरी में व्यस्त हो गया। एक दिन ऑफिस जाते समय उसने देखा सड़क पर भीड़ जमा थी शायद कोई दुर्घटना हुई थी उसने पास जाकर देखा एक बूढ़ी औरत जमीन पर पड़ी थी वह रो रही थी उसको बहुत चोटें आई थी भीड़ बस देख रही थी। उसने पास जाकर उठाया गाड़ी में बैठाया और डॉक्टर के पास ले जाकर मरहम पट्टी कारवाई। जब डॉक्टर को फीस देने लगा तो डॉक्टर ने फीस लेने से मना किया। कारण जानने के लिए रोहित ने उसकी तरफ देखा तो पाया ये उसी के गाँव का लड़का था जिसकी मदद उसके पिता किया करते थे। डॉक्टर ने रोहित की व उसके पिता की बहुत तारीफ की और धन्यवाद भी किया। बुड़ी औरत ने भी रोहित को खूब आशीर्वाद दिया तथा उसके सुखी जीवन की दुआ दी। रोहित को बड़ा ही सुख का अनुभव हो रहा था उसकी आँखों में आँसू छलक आए थे। आज वास्तव में उसे अपने पिता पर गर्व व उनकी बात समझ में आ गई थी।

रोहित ने आगे भी अपने पिता की सोच को अपने जीवन में अपनाने का प्राण लिया। साथ – साथ डॉक्टर व अन्य कई लोगों को उस मुहिम से जोड़कर एक ट्रस्ट बनाया। जो गरीब, बेसहारा व मजबूर लोगों की मदद करे।

हमें भी उनकी तरह अपने जीवन में मदद को अपनाना चाहिए हमारी छोटी सी मदद किसी का जीवन सुधार सकती है किसी की मदद से जो सुख प्राप्त होता है वही सच्चा सुख है।

प्रोमिला सिंह
सहायक अध्यापक
छावनी बोर्ड प्रा.स्कूल
बी.आई. बाजार लाल कुर्ती मेरठ छावनी

चुटकुले

1. साइंस टीचर: क्लास में सो रहे हो क्या
राजू: नहीं टीचर गुरुत्वाकर्षण से सर नीचे गिर रहा है।
2. टीचर : 15 फलों के नाम बताओं
टीटू ; आम, अमरूद, केला
टीचर : शाबाश 12 फलों के नाम और बताओं
टीटू : एक दर्जन केले।
3. अध्यापक : ताजमहल किसने बनाया?
चिटू : जी कारीगर ने
अध्यापक : मेरा मतलब बनवाया किसने था?
चिटू : जी ठेकेदार ने।
4. टीचर : टीटू स्वर और व्यंजन में फर्क बताओं ?
टीटू : सर स्वर मुंह से बाहर निकलते है और व्यंजन मुंह के अंदर जाते है।
5. टीचर : पप्पू कॉपी छुपा लो पीछे वाला देख रहा है?
पप्पू ; देखने दो सर मैं अकेला फेल नहीं होना चाहता

रूपाली सोलोमन,
सहायक अध्यापिका
छावनी बोर्ड जूनियर हाई स्कूल,
आर.ए. बाजार, तोपखाना
मेरठ छावनी

गाँव में नीम कम हो रहे हैं, परंतु कड़वाहट बढ़ रही है।

हमारा देश भारत गाँवों का देश है। यहाँ की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में ही निवास करती है। भारत के विकास में कुटीर उद्योग, पशुधन, वन, मौसमी फल एवं सब्जियों इत्यादि इन सब के योगदान की अनदेखी नहीं की जा सकती। महात्मा गांधी जी ने भी कहा है कि भारत की आत्मा उसके गाँवों में बस्ती है। वैसे भी यदि देश का वास्तविक रूप देखना है तो गाँवों में ही इसे देखा जा सकता है। गाँवों में मेहनतकश किसान सूरज निकलने से पहले खेतों की ओर निकल पड़ते हैं। मौसम के हिसाब से बोई गई फसल की निराई, गुड़ाई कर दोपहर में घर लौटते हैं। दोपहर का भोजन कर फिर वह खेतों की ओर निकाल पड़ते हैं। सूरज डूबते ही वे अपने घर की ओर रुख करते हैं।

“कागज के जहाज व नीम की छाँव में ठहरा था,
भाग्यशाली है हम जो बालपन गाँव में गुजरा था।”

संबंधों में अपनेपन की भावना से ही व्यक्ति एक दूसरे पर मर मिटने को तैयार हो जाते हैं। मनोवैज्ञानिक पीटर एम. नार्डी भी यह मानते हैं कि अकेले व्यक्ति को भौतिक, भावनात्मक, मानसिक व आर्थिक सहयोग नहीं मिल पाता। रिश्तेदार व संबंधी बुरे समय में साथ खड़े होते हैं, कैलिफोर्निया के एक प्रांत में हुए एक शोध के अनुसार जिन लोगों का पारिवारिक या सामाजिक जुड़ाव कम होता है। उनमें दिल की बीमारियों और रक्त संचरण की समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। यदि संबंध मधुर हों तो जीवन खुशहाल व सुखमय बन जाता है।

रिश्तों में खटास आते ही व्यक्ति भी टूट जाता है। संबंध आखिर बिगड़ता क्यों है? इसके पीछे व्यक्ति का अहं, सोच व व्यवहार ही जिम्मेदार होता है। मशहूर स्पीच थेरेपिस्ट बिल बाल्टन का मानना है कि संबंधों को बिगाड़ने में 50 फीसदी से ज्यादा कारण अंसयमित भाषा होती है। अध्यात्म और शांति के साथ कार्य करने वाले व्यक्तियों के संबंध बेहद सफल होते हैं, रिश्ता निभाना समझौते का दूसरा नाम है।

एक समय हुआ करता था जब गाँवों के सभी पुरुष व स्त्री अपना-अपना काम पूरा करके गाँव के नीम के पेड़ों के नीचे मिलकर अपनी सुख-दुख बतलाया करते थे। परंतु आज का मनुष्य आधुनिकता तथा दिखावे में ऐसा उलझ गया है कि वह अपने संबंधों के महत्व को ही भूल गया है। जिसके कारण वह अकेलेपन तथा मानसिक रोगों में फसता चला जा रहा है।

सोशल मीडिया एक बड़ी वजह बनकर सामने आया है। जी हाँजिस सोशल मीडिया में व्यक्ति अपने साथी से हमेशा जुड़ा हुआ महसूस करता है, वही उसके सम्बन्धों में दूरियाँ बढ़ा रहा है। लोग इस से अंजान हैं कि आज अच्छा और प्यारा लग रहा सोचल मीडिया रिश्तों में दूरियाँ और कड़वाहट भरने में अहम भूमिका निभा रहा है। सोशल मीडिया का ज्यादा इस्तेमाल करने से रिश्तों की अहम बातों जैसे विश्वास, निजी राज और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता में कमी आती है। निजी चैट संबंधों को खत्म करने वाली साबित होती है। सोशल साइटों के उपयोगकर्ता सोशल साइटों पर मौजूद अन्य लोगों की जोड़ी स अपनी जोड़ी की तुलना करते हैं। जिससे आपस में हीन भावना उत्पन्न होती है। इस समस्या को स्मार्ट फोन ने बढ़ा दिया है।

“मकान पक्के हो रहे, परंतु रिश्ते कच्चे होते जा रहे।”

गाँवों के कच्चे मिट्टी के मकान अब कंक्रीट के ऊंचे – ऊंचे बनते जा रहे हैं और संबंधों में अपनापन छोटा होता जा रहा है। अब खेतों खलियानों में बड़े-बड़े फ्लैट दिखने लगे हैं। जहाँ पर धोती, कुर्ता, टोपी, साड़ी गाँवों की पोशाक हुआ करती थी, वही अब इसकी जगह जींस, टॉप शर्ट ने ले ली है। जहाँ आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी संस्कृति को पीछे छोड़कर पाश्चात्य शैली को अपनाते जा रहे हैं। जहाँ हमारे गाँवों में हमेशा से संयुक्त परिवार रहा करते थे, अब विदेशी संस्कृति की तरह एकल परिवार में रहना पसंद कर रहे हैं। पाश्चात्य संस्कृति हमारी भारतीय संस्कृति को खोखला करती जा रही है।

भौतिकता के इस युग में हम इतना भी गुम न हो जाए कि अपनी संस्कृति बिसार दें। जरूरत इसे बचाने की नहीं अपितु इसे आगे बढ़ाने की है। जब तक हम संस्कृति की मूल जड़ों को पकड़ कर नहीं रखेंगे, पाश्चात्य संस्कृति की चका-चौंध में फंसे रहेंगे तब तक हम गाँवों में नीम के पेड़ों के नीचे सजती चौपाल को भूल एक दूसरे के प्रति कड़वाहट से ही भरे रहेंगे। बात सिर्फ एहसास करने, सामंजस्य बैठाने और थोड़ा अपनत्व दर्शाने की है। इसी से बड़े-बड़े मसले सुलझ सकते हैं, इसमें दो राय नहीं।

नीलेश साहू
स्वच्छता अधीक्षक
छावनी बोर्ड, रुड़की

समस्याएँ

किसी भी बाधा को दूर करने के लिए हमें आगे बढ़ते रहना जरूरी है, अगर रुक जाएंगे तो कभी भी लक्ष्य तक नहीं सकते हैं। इस संबंध में एक लोक कथा प्रचलित है। कथा के अनुसार एक व्यक्ति के जीवन में समस्याएँ बहुत अधिक थीं। बचपन से ही उसे परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। बड़े होने पर व्यक्ति का विवाह हुआ, लेकिन शादी के बाद उसकी समस्याएँ और अधिक बढ़ गईं। उसके जीवन में एक परेशानी खत्म होती, तो दूसरी आ जाती थी। एक दिन वह प्रसिद्ध संत के पास गया।

व्यक्ति ने संत से कहा कि 'मुझे अपना शिष्य बना लें। मैं परेशान हो गया हूँ, बहुत दुखी हूँ'। संत ने कहा कि ठीक तुम मेरे शिष्य बन जाओ। मुझे बताओ क्या परेशानी है?

शिष्य ने कहा कि गुरुजी एक समस्या खत्म नहीं होती और दूसरी सामने आ जाती है, इस कारण मैं बहुत दुखी रहता हूँ। किसी भी काम में सफलता नहीं मिल रही है।

गुरु जी ने कहा कि ठीक हैं, मैं तुम्हारी समस्याओं का हल बता दूंगा। अभी तुम मेरे साथ चलो। गुरु ने शिष्य को लेकर नदी किनारे गए। किनारे पर पहुँचकर गुरु ने कहा कि हमें ये नदी पार करनी है। ये बोलकर वहीं खड़े हो गए। शिष्य भी गुरु के साथ खड़ा हो गया।

कुछ देर बाद शिष्य ने कहा कि गुरुदेव हमें नदी पार करनी है तो हम यहाँ क्यों खड़े हैं?

गुरु जी ने जवाब दिया कि हम इस नदी के सूखने का इंतजार कर रहे हैं, जब ये सूखेगी हम इसे आसानी से पार कर लेंगे?

शिष्य को आश्चर्य हुआ वह बोला गुरुजी ये कैसी बात कर रहे हैं? नदी का पानी कैसे और कब सूखेगा, हमें नदी को इसी समय पार कर लेना चाहिए। संत ने कहा कि मैं तुम्हें यही बात समझाना चाहता हूँ। जीवन में भी समस्याएँ तो आती ही रहेगी। हमें रुकना नहीं है, लगातार आगे बढ़ते रहना है। तभी तो हम उन्हें हल कर पाएंगे। आगे बढ़ते रहेंगे तो समस्याओं के हल मिलते जाएंगे। अगर रुक जाएंगे तो एक भी नदी पार नहीं हो पाएगी। शिष्य को गुरु की बात समझ आ गई और उस दिन के बाद उसकी सोच बदल गई।

सूरज सैनी
लिपिक
छावनी बोर्ड स्कूल, रूड़की

माँ वैष्णो देवी की प्रथम यात्रा और अनुभव

मुझे याद है कि जब मैं पहली बार माँ वैष्णो देवी के दर्शन के लिए गई। कानपुर से जम्मू तक तथा उसके आगे कटरा भी ट्रेन से ही गई अपने परिवार के साथ पहली बार किसी तीर्थ स्थान के लिए इतनी लंबी यात्रा की, बहुत अच्छा लगा। पहाड़ों के बीच ट्रेन से जाने का मेरा पहला अनुभव रहा। प्राकृतिक दृश्य इतने सुंदर लग रहे थे कि सारी थकान ही मिट गई। फिर हम सब एक जगह ठहरने के लिए रुके। अपना सारा सामान बैग वगैरह सब होटल के कमरे में रख हम माँ वैष्णो देवी के दर्शन के लिए निकल पड़े। माता के दरबार के बाहर जो अनुभव हुआ वह एक चमत्कार जैसा था।

मेरे मन में माँ को चुनरी चढ़ाने के लिए अंदर से एक भावना उत्पन्न हुई। मेरे पति प्रसाद लेने के लिए जा चुके थे। मेरे बेटे ने कहा माँ अब पापा से न कहना नहीं तो वो गुस्सा करेंगे। मैंने माँ से हाथ जोड़कर वहीं से विनती की कि माँ मेरा मन आपको चुनरी चढ़ाने का है पर मैं अगली बार अपने हाथों से बनाकर लाऊँगी। लेकिन यहाँ उतनी ही देर में पूरी लाइन खाली थी न मेरे आगे कोई था न पीछे। हम अपने बेटे के साथ खड़े थे। इतनी देर में एक महिला आई। बहुत सुंदर लंबी सी साथ में वर्दीधारी कर्मी था। हाथ में बड़ा सा फोन लेकर कहने लगी सुनिए मेरी चुनरी रह गई है आप चढ़ा देंगी। मेरे पास फोन आया हमने इधर-उधर देखा उन्होंने कहा , "हम आपसे ही कह रहे हैं" हमने सिर हिलाकर हां कहा, उन्होंने हमें चुनरी दी और हम माँ के दरबार तक चुनरी ले गए। पंडित जी ने चुनरी माँ वैष्णो देवी को चढ़ाने के बाद हमें वापस कर दी। हमने वापस आकर जब चुनरी देखी तो हैरान रह गई तीन पगड़ी रूपी माँ दुर्गा की फोटो छपी थी यह अनुभव तो भूलते नहीं बनता।

जय माँ वैष्णो देवी!

पूनम रस्तोगी
सहायक अध्यापिका
कैंट बोर्ड स्कूल बी.
आई. बाजार (बालक)
लालकुर्ती, कानपुर

आश्रित जिंदगी का कोई अस्तित्व नहीं होता

'आश्रित जिंदगी का कोई अस्तित्व नहीं होता' यह कहानी एक बहुत बड़ी बात की ओर इशारा करती है और जब तक आप योग्य नहीं हैं तब तक अगर आप किसी पर आश्रित होने में कोई गलती नहीं हैं लेकिन अगर आपने योग्य होने के बावजूद किसी पर आश्रित होना अपना अधिकार मान लिया है और अब आप उससे मांग करने लगे है तो यह उस मदद की तौहीन है।

आप अपने में झांक कर देखें और अपने आपका अवलोकन करे कि क्या आप ऐसा ही कुछ कर रहे हैं ? अगर ऐसा है तो समय रहते अपनी आदतों को बदले।

एक बार एक चिड़ियाँ अपना खाना चोंच में दबाकर ले जा रही थी तभी उसकी चोंच से पीपल के पेड़ का बीज नीम के तने में गिर गया। उस बीज को नीम से भरपूर पोषक तत्व, पानी और मिट्टी मिल गया गई और वो पीपल का बीज पनपने लगा और नीम के आश्रय में बड़ा होने लगा। चूंकि वह नीम पर आश्रित था इसलिए उसे फलने फूलने एवं उसकी जड़ों को पर्याप्त जगह नहीं मिल रही थी। उसका विकास ठीक से नहीं हो पा रहा था।

एक दिन पीपल को गुस्सा आया और उसने नीम से लड़ने की ठानी और बोला – ऐ! दुष्ट तू खुद तो फैलता ही जा रहा है। तेरा कद गगन छू रहा है और जड़े फैले जा रही हैं और मुझे तू जरा भी पनपने नहीं दे रहा। मुझे भी जगह और खनिज दे वरना तेरे लिए अच्छा नहीं होगा।

उसकी बात खत्म होने पर नीम ने हँसकर उत्तर दिया हे मित्र ! दूसरों की दया पर इतना ही विकास संभव है और अगर अधिक की अपेक्षा है तो स्वयं का भार खुद वहन करो, अपनी नींव बनाओ अपने पैरों पर खड़े हो। यह सुनकर पीपल को बहुत गुस्सा आया पर बात सच थी इसलिए वो बस नीम को कोसने में लगा रहा।

एक दिन, बहुत आँधी तूफान आया। नीम का वृक्ष तो ज्यों का त्यों खड़ा रहा लेकिन वह आश्रित पीपल अपनी कमजोरी के कारण धराशायी हो गया और जमीन चटाने लगा और उसका क्षण का अस्तित्व भी खत्म हो गया। तभी दूर से एक बुजुर्ग यह सभी देख रहे थे। उन्होंने यह देख कर कहा – जो दूसरों के बल पर अपना आशियाना बनाते हैं वो इसी तरह मुंह के बल गिरते हैं।

शिक्षा

कभी-कभी परिस्थिति वश हमें दूसरों पर आश्रित होना पड़ता है लेकिन अगर हम उसे अपना हक मानने लगे तो गलत है क्योंकि किसी की योग्यता का पता तब ही चलता है जब वह स्वयं के बल पर कुछ करता है।

संजय कुमार ओझा,
उ. श्रे. लि.
छावनी परिषद, बैरकपुर

दुनिया का आठवां खूबसूरत आश्चर्य : भारतीय लोकतंत्र

विंस्टन चर्चिल, जान स्टेची, रोबर्ट डल, डॉन टेलर, रूडयार्ड किपलिंग ये वे नाम है जिन्होंने भारतीय लोकतंत्र की महत्ता को बड़े हल्के में लिया। इनके अनुसार, भारतीय चार हजार साल के पिछड़े लोग थे जो शासन संभालने योग्य ही नहीं थे। स्टेची ने बताया कि भारत के दो प्रान्तों के बीच जितनी विविधता है उतना यूरोप के दो देशों के बीच भी नहीं हैं, यहाँ लोकतंत्र असंभव है। उसने यह भविष्यवाणी की थी कि अगर अंग्रेज़ भारत छोड़ देते है तो भारतीय हजारों साल पीछे बर्बरता और लूट-खसोट के युग में लौट जाएंगे, लोकतंत्र तो दूर की बात है।

काश ! काश कि ये लोग आज जिंदा होते तो इन्हें हम अपनी आजादी की बीते 75वें वर्षगांठ पर मुख्य अतिथि के रूप में बुलाते। उन्हें दिखाते कि हाँ, भारत में तमिलनाडु के लोग उत्तर प्रदेश की भाषा नहीं समझते, हाँ, उत्तर प्रदेश के लोग अरुणाचल प्रदेश के निवासी जैसे नहीं दिखते, हाँ, अरुणाचल प्रदेश के लोग गुजराती व्यंजनों के संबंध में नहीं जानते, हाँ, गुजरात के लोग नागालैंड के निवासी जैसी पोशाक नहीं पहनते, हाँ, एक संविधान होने के बावजूद हम सब अलग-अलग धर्म संहिताएँ पालन करते है, सब..... सबकुछ होने के बावजूद ये सब अपने आपको सिर्फ भारतीय कहते है। यहाँ अलगाववादी आंदोलनों के समर्थकों से ज्यादा उनके विरोधी मिलेंगे। यह भारत का एक मजबूत लोकतांत्रिक देश के रूप में ही परिचय कराता है क्योंकि एक मजबूत लोकतांत्रिक देश वही हो सकता है जहां कि जनता को अपनी मर्जी के अनुसार जीवन जीने, धर्म पालन करने और स्वतंत्र अभिव्यक्ति का अधिकार हो। यह भारत में ही संभव है कि हजारों विभिन्नताओं के बावजूद लोग स्वयं को सिर्फ भारतीय कहते हैं और यहीं पर आंदोलन करने के लिए वे स्वतंत्र भी हैं, लेकिन अलगाववाद में किसी को समर्थन नहीं मिलता।

हम उन्हें यह भी बताएं कि जिस लोकतंत्र की वो बात कर रहे हैं वो उनके यहाँ नया नवेला होगा, हमारे देश में तो उसकी नींव सैकड़ों वर्षों पहले ही पड़ गई थी। दुनिया का प्रथम गणराज्य प्राचीन भारत का वैशाली राज्य था, जिसे कई पाश्चात्य विद्वान भी मान चुके हैं।

प्रसिद्ध इतिहासकार रामचंद्र गुहा की पुस्तक 'भारत गांधी के बाद की निम्नलिखित पंक्तियाँ लोकतंत्र को नए रूप में समझाती है:-

“आजाद भारत के इतिहास और इस पुस्तक (भारत गांधी के बाद) की विषय वस्तु के संक्षिप्तीकरण करने का एक तरीका संघर्ष के मानचित्रों का प्रदर्शन भी हो सकता है। हर एक दशक के हिसाब से अलग-अलग तरीके से भारत का नक्शा दिखाया जा सकता है जिसमें हुए संघर्षों को उनकी तीव्रता के हिसाब से अलग-अलग रंगों से रंगा जा सकता है। उदाहरण के लिए किसी खास समूह द्वारा लोकतान्त्रिक प्रगति में दिलचस्पी लेने को नीले रंग से, अहिंसक लेकिन आक्रामक रूप से परिवर्तन की मांग करने करने वालों को लाल रंग से और भारतीय राज्य को सशस्त्र विद्रोह द्वारा नष्ट करने की कोशिश करने वालों को काले रंग से रंगा जा सकता है। अगर इस नक्शे का सिलसिलेवार ढंग से अध्ययन किया जाए तो कई दशकों में फैले इन संघर्षों में कई व्यापक विविधता देखने को मिलेगी। ऐसा लगेगा कि लाल रंग से रंगे इलाके काले में तब्दील हो रहे है काले रंग से रंगे इलाके लाल में बदल रहे हैं और नीले और लाल इलाके सफ़ेद इलाके में बदल रहे हैं। सफ़ेद रंग उन इलाकों का प्रतिनिधित्व कर सकता है जहां कोई बड़ा संघर्ष मौजूद नहीं है। यह नक्शे सतत बदलते हुए रंगों का एक विविध रेखाचित्र प्रस्तुत करेंगे लेकिन इन तमाम परिवर्तनों के बावजूद एक सजग पर्यवेक्षक यह जरूर महसूस करेगा कि दो बातें सदा स्थिर रही है। पहली देश के नक्शे का स्वरूप इन तमाम आंतरिक परिवर्तनों के बावजूद नहीं बदला है। ऐसा इसलिए क्योंकि हिंदुस्तान पिछले दशकों में लगातार एक रहा है और इसका कोई भी इलाका इसे छोड़कर अलग नहीं हो पाया है। दूसरी बात यह कि किसी भी एक वक्त में एक साथ नीले, काले और लाल इलाके मिलकर इतने बड़े नहीं हुए है कि वह सफ़ेद इलाके से बड़े हो सके। जिन दशकों को एक जमाने में 'खतरनाक दशक' के नाम से जाना जाता था उस वक्त भी पचास फीसदी से ज्यादा भारत का हिस्सा शांतिपूर्वक देश की व्यवस्था के अधीन काम करता रहा।”

यानि, बंधु ! सब चीजों से पहले ये देश बड़ा हैं, कुछ रहे न रहे, ये देश हमेशा रहेगा।

आराधना साव
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी प्रधान निदेशालय,
रक्षा सम्पदा, पूर्वी कमान कोलकाता

अभिव्यक्ति

जैसे ही मैं आई थी,
वो दौड़ कर आया था,
फिर वो देख मेरी तरफ मुस्कुराया था,
फिर उसने अपने हाथों में छुपाए हुए
गुलाब को मेरी ओर बढ़ाया था,
मैंने भी मुस्कुरा कर उस गुलाब को अपने बालों में सजाया था,
फिर मैं भी मुस्कुराई थी वो भी मुस्कुराया था
जैसे ही मैं आगे बढ़ी उसने फिर
मेरा आँचल पकड़ हिलाया था।
जैसे ही मैं पीछे मुड़ी फिर वो मुझे देख मुस्कुराया था
वो कोई नहीं मेरी कक्षा का नन्हा सा बालक था,
जो अभी ठीक से बोल भी नहीं पाता था
वो गुलाब का फूल उसके प्रेम की अभिव्यक्ति थी,
जिसे सोच मेरा हृदय ममता से भर आया था।

अचला शोरी
शिक्षिका
छावनी परिषद उच्च प्राथमिक विद्यालय
गोलाघाट छावनी कानपुर

ठंडी छाँव

मैं दिखती हूँ माँ जैसी सब कहते है,
पर मैं हूँ अपने पापा की बेटी
माँ मेरी जीवन की नैया तो पापा पतवार है,
चलना है मिलकर तभी तो नैया लगती पार है,
माँ मेरी शाम की ठंडक तो पापा दोपहर की छाँव हैं,
उन्हीं के कंधों पर बैठकर मैंने सीखा जीवन का सार है
इतना सब सीखाकर न जाने कहाँ चले गए
जब याद आपकी आई माँ और भाई-बहनों से छुप कर रो लिए
अब तो जीवन में बहुत कठिनाई है,
पापा ये तो मंजिल घर चल के आई है,
ये कैसा नाता तोड़ दिया
लगता है डर सबसे
पग – पग पर अकेले चलना छोड़ दिया,
कैसे बैठू काम करूँ, जिसके कंधे पे बैठकर सीखा जीवन का सार था।
आज उन्होंने ही पल भर में छोड़ दिया हाथ है,
माँ रोती है, चुप कराती हूँ,
भाई-बहनों की ज़िम्मेदारी बड़े होने के नाते कर्तव्य से निभाती हूँ,
पर जब बारी मेरी आती है, तो छुप छुप के आँसू बहाती हूँ
ऐसे कोई जाता है क्या? मन को बार बार समझाती हूँ,
तभी फिर सोचती हूँ, माँ जैसी दिखने वाली पापा की बेटी कहलाती हूँ।

पूजा पांडे
सहायक अध्यापक
छावनी परिषद हाई स्कूल
बी.आई.बाजार लाल कुर्ती कानपुर

उदयपुर की यात्रा

भारत ! एक ऐसा देश, जहां उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक विविध रंग देखने को मिलते हैं। भारत के किसी भी कोने में चले जाएं, एक अलग संस्कृति, अलग इतिहास, अलग कहानी, अलग खान-पान और अलग परम्पराएँ देखने को मिलेंगी, फिर भी एक अपनापन, अपनी ही मिट्टी अपने ही लोग होने का एहसास भी होगा। इसलिए तो सदियों से विभिन्न सभ्यताओं एवं संस्कृति के लोग यहाँ आए और यहीं के होकर रह गए। तो इस प्रकार विविधता में एकता लिए भारत की सैर करना भी अपने आप में अनुभव होता है। और इस बार इसी अनुभव को और विस्तृत करने के हम चले उदयपुर की यात्रा पर।

उदयपुर, राजस्थान राज्य का एक शहर है। यह शहर सन् 1559 में सिसोदिया राजवंश के वंशज महाराणा उदय सिंह ने स्थापित किया था। उदयपुर एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है जो अपने इतिहास, संस्कृति एवं अपने आकर्षक स्थलों के लिए मशहूर है। अपनी प्रसिद्ध झीलों के कारण यह शहर 'झीलों की नगरी' के नाम से भी जाना जाता है।

उदयपुर के एयरपोर्ट से हम पिछोला झील के किनारे स्थित अपने होटल पहुंचे। रास्ते में ही शहर की खूबसूरती ने हमारा मन मोह लिया। होटल में हमारे मैनेजर ने हमको उदयपुर के इतिहास के विषय में बताया। उदयपुर को बनास नदी पर, नागदा के दक्षिण पश्चिम में उपजाऊ पवित्र गिरवा घाटी में महाराणा सिंह द्वितीय ने 1559 में स्थापित किया था।

अगले दिन हम उदयपुर की सैर पर निकले। यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थल यहाँ के शासकों द्वारा बनवाए गए महल, झीलें, बगीचे तथा स्मारक हैं। ये सभी स्थान सिसोदिया राजपूत शासकों के सद्गुण, विजय तथा स्वतन्त्रता की याद दिलाते हैं। आपको उदयपुर घूमने के लिए कम-से कम तीन दिन का समय चाहिए।

उदयपुर की झीलें

उदयपुर के शासक जल के महत्व को समझते थे। इसलिए उन्होंने कई डैम तथा जलकुंड बनवाए थे। ये कुंड उस समय की विकसित इंजीनियरिंग का सबूत हैं। पिछोला, दूध तलाई, गोवर्धन सागर, कुमारी तालाब, रंगसागर, स्वरूप सागर तथा फतेह सागर यहाँ की सात प्रमुख झीलें हैं। इन्हें सामूहिक रूप से उदयपुर की सात बहनों के नाम से भी जाना जाता है। ये झीले कई शताब्दियों से उदयपुर की जीवनरेखा हैं। ये झीले एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। एक झील में पानी अधिक होने पर उसका पानी अपने आप दूसरी झील में चला जाता है।

फतेह सागर

महाराणा जय सिंह द्वारा निर्मित यह झील बाढ़ के कारण नष्ट हो गई थी, बाद में महाराणा फतेह सिंह ने इसका पुनर्निर्माण करवाया, झील के बीचों-बीच एक बगीचा, नेहरू गार्डन स्थित है। आप बोट अथवा ऑटो द्वारा झील तक पहुंच सकते हैं।

पिछोला झील

महाराणा उदय सिंह द्वितीय ने इस झील का विस्तार कराया था। झील में दो द्वीप हैं और दोनों पर महल बने हुए हैं। एक है जग निवास, जो अब लेक पैलेस होटल बन चुका है और दूसरा है जग मंदिर। दोनों ही महल राजस्थानी शिल्पकला के बेहतरीन नमूने हैं, बोट द्वारा जाकर इन्हें देखा जा सकता है।

सिटी पैलेस कॉम्प्लेक्स

सिटी पैलेस की स्थापना 16वीं शताब्दी में आरंभ हुई। इसे स्थापित करने का विचार एक संत ने राजा उदय सिंह को दिया था। इस प्रकार यह परिसर 400 वर्षों में बने भवनों का समूह है। यह एक भव्य परिसर है। इसे बनाने में 22 राजाओं का योगदान था। इस परिसर में प्रवेश के लिए टिकट लगता है। बादी पॉल से टिकट लेकर आप इस परिसर में प्रवेश कर सकते हैं। परिसर में प्रवेश करते ही आपको भव्य त्रिपोलिया गेट दिखेगा, इसमें सात आर्क हैं। ये आर्क उन सात स्मरणोत्सवों का प्रतीक है जब राजा को सोने और चाँदी से तौला गया था तथा उनके वजन के बराबर सोना-चाँदी को गरीबों में बाँट दिया गया था। इसके सामने की दीवार अगद कहलाती है। यहाँ पर हथियों की लड़ाई का खेल होता था। इस परिसर में एक जगदीश मंदिर भी है। इसी परिसर का एक भाग सिटी पैलेस संग्रहालय घोषित कर दिया गया है। वर्तमान में शंभुक निवास राजपरिवार का निवास स्थान है। इससे आगे दक्षिण दिशा में फतेह प्रकाश भवन तथा शिव निवास भवन

है। वर्तमान में दोनों को होटल में परिवर्तित कर दिया गया है।

काँच गैलेरी

यह गैलेरी धन के अपव्यय को दर्शाती है। राणा सज्जन सिंह ने 1877 ई. में इंग्लैंड के एफ़ एंड एस ओसलर एंड कंपनी से काँच के इस सामानों की थी। इन सामानों से काँच की कुर्सी, बेड, सोफा, डिनर सेट आदि शामिल थे। बाद के शासकों ने इन सामानों को सुरक्षित रखा। अब इन सामानों को फतह प्रकाश भवन के दरबार हॉल में पर्यटकों को देखने के लिए रखा गया है।

जगदीश मंदिर

इस मंदिर की स्थापना 1651 ई. में हुई थी। यह मंदिर इंडो-आर्यन शैली में बना हुआ था। इस मंदिर में भगवान विष्णु तथा जगन्नाथ की मूर्ति स्थापित है।

बागोर की हवेली-

यह पहले उदयपुर के प्रधानमंत्री का निवास स्थान था। यह हवेली पिछोला झील के सामने है। इस हवेली का निर्माण 18वीं सदी में हुआ था। इस हवेली में 138 कमरे हैं। इस हवेली में हर शाम को 7 बजे मेवाड़ी तथा राजस्थानी नृत्य का आयोजन किया जाता है। इस आयोजन को देखना अपने आप में अत्यंत रोमांचकारी अनुभव है। आयोजन में किए जाने वाले विभिन्न नृत्य एवं कलाएं देख आप दांतों तले उंगली दबा लेंगे।

सज्जनगढ़ (मानसून पैलेस)

उदयपुर सहहर के दक्षिण में अरावली पर्वतमाला के एक पहाड़ की चोटी पर स्थित इस महल का निर्माण महाराजा सज्जन सिंह ने करवाया था। यहाँ गर्मियों में भी अच्छी ठंडी हवा चलती है। सज्जनगढ़ से उदयपुर शहर और इसकी झीलों का सुंदर नजारा दिखता है। पहाड़ की तलहटी में अभयारण्य है। सांयकाल में यह महल रोशनी से जगमगा उठता है, जो देखने में बहुत सुंदर दिखाई पड़ता है।

जग मंदिर

पिछोला झील पर बना एक अन्य द्वीप पैलेस। यह महल महाराजा करण सिंह द्वारा बनवाया गया था। महाराजा जगत सिंह ने इसका विस्तार कराया। महल से बहुत शानदार दृश्य दिखाई देते हैं, गोल्डन महल की सुंदरता दुर्लभ और भव्य है।

शिल्पग्राम, उदयपुर

यह एक शिल्पग्राम है जहाँ गोवा, गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र के पारंपरिक घरों को दिखाया गया है। यहाँ इन राज्यों के शास्त्रीय संगीत और नृत्य भी प्रदर्शित किए जाते हैं।

मोती मगरी

यहाँ प्रसिद्ध राजपूत राजा महारणा प्रताप की मूर्ति है। मोती मगरी फतेहसागर के पास की पहाड़ी पर स्थित है। मूर्ति तक जाने वाले रस्तों के आसपास सुंदर बगीचे हैं, विशेषकर जापानी रॉक गार्डन दर्शनीय है।

सहेलियों की बाड़ी

सहेलियों की बाड़ी/ दासियों के सम्मान में बना बाग एक सजा – धजा बाग है। इसमें, कमाल के तालाब, फव्वारे,

संगमरमर के हाथी और कियोस्क बने हुए हैं।

करणि माता मंदिर

करणि माता मंदिर पहाड़ के ऊपर बना हुआ है। यहाँ पहुँचने के लिए रोप वे की सुविधा उपलब्ध है। मंदिर दर्शनीय है एवं मंदिर के पास से उदयपुर की झीलों का अविस्मरणीय नजारा दिखता है।

इस प्रकार उदयपुर की यात्रा करते हुए तीन दिन कैसे बीत गए, पता ही नहीं चला और उदयपुर की ये यात्रा हमको दे गयी भारतवंशी होने पर गर्व करने का और अपनी संस्कृति एवं इतिहास समझने का एक और मौका।

नरेश कुमार
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
प्रधान निदेशालय, रक्षा सम्पदा,
दक्षिण-पश्चिमी कमान,
जयपुर

प्रेरक प्रसंग

कुछ फकीर एक साथ यात्रा कर रहे थे। उनमें एक सूफी फकीर, एक योगी और एक भक्त था। वे एक गाँव में ठहरे और गाँव में उन्होंने भीख मांगी और फिर उस सूफी को कहा कि तुम जाओ और बाजार से भोजन ले आओ। वह बाजार से हलवा ले आया। पैसे कम होने के कारण, हलवा थोड़ा ही खरीदा गया। पर आदमी ज्यादा थे तो उन सबने दावा करना शुरू कर दिया कि हलवे पर सबसे पहला हक उसका है।

क्योंकि मैं भगवान का सबसे बड़ा भक्त हूँ। और भगवान मुझे अक्सर बांसुरी बजाते हुए दिखाई पड़ते हैं। इसलिए हलवा पहले मुझे मिलना चाहिए। सूफी फकीर ने कहा। क्या बातचीत लगा रखी है। मेरी ज़िंदगी गुजर गई शीर्षासन करते हुए। मुझ से ज्यादा उल्टा अब तक कोई आदमी नहीं खड़ा रहा। योग की मुझे सिद्धि है। हलवा मैं लूँगा' ने कहा। और उन सब में विवाद हो गया। पर कुछ तय न हो सका। सूरज ढल गया। हलवा थोड़ा था। कोई राजी न था, पहले हक किसका है।

आखिर उस सूफी फकीर ने कहा, एक काम करो, हम सो जाँएँ। रात को जो सबसे अच्छा सपना देखे, सुबह हमें अपने सपने बताएं। जिसका सपना सबसे अच्छा हो, वह हलवे का मालिक हो जाएगा। रात को वे सो गए। निश्चित ही उन सबने अच्छे सपने देखे होंगे। अब सपने पर किसी का बस तो नहीं है। हो सकता है किसी को कोई सपना आया ही न हो लेकिन सपने सबने गढ़े।

सुबह उठकर वे सब अपने सपने बताने लगे। एक भक्त ने कहा "भगवान प्रकट हुए और उन्होंने कहा कि तू मेरा सबसे बड़ा भक्त है। तुझसे बड़ा मेरा कोई भक्त नहीं। अतः हलवे का हकदार मैं हूँ। योगी ने कहा, ' मैं समाधि में चला गया, मोक्ष तक पहुँच गया। परम आनंद का अनुभव किया। हलवे का हकदार मैं हूँ। और सबने अपने अपने दावे किए। आखिर में उस सूफी फकीर से पूछा गया 'तुम्हारा क्या ख्याल है'। उसने कहा, मैं बड़ी मुश्किल में हूँ। क्योंकि मैंने एक सपना देखा कि भगवान कह रहे हैं कि उठ और हलवा खा। मैं उठा और हलवा खा गया। क्योंकि आज्ञा नहीं टाली जा सकती थी। आज्ञा कैसे टाल सकता था ?

इसलिए इस कहानी से हमें अपने जीवन में यह सीख मिलती है कि जो सजग होकर काम करते हैं हलवा रूपी लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं और जो कल-कल कहते हैं अर्थात् अपने काम को कल पर टालते हैं अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते।

तेजिंदर दत्त फुलारा
प्रवर श्रेणी लिपिक (यूडीसी)
रक्षा सम्पदा कार्यालय,
देहरादून

समय सेहत और संबंध

इन तीन चमत्कारिक शब्दों का महत्व इनको खोने के बाद महसूस होता है पहला सुख निरोगी काया जिसके लिए दुख देने वाले इस कारणों को छोड़ देना चाहिए। जिसमें रात को देर से सोना परिणामस्वरूप देर से ही जागना, निष्क्रिय जीवन जीना, गलत आहार, योग ना करना, हमारी 80% सेहत इन सब कारणों से खराब होती है। योग शरीर को स्वस्थ रखने के साथ-साथ हमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के पथ पर भी ले जाता है। योगासन में आहार का बहुत बड़ा योगदान होता है, गीता में भगवान श्री कृष्ण ने भी सात्विक आहार के महत्व पर ज़ोर दिया है, सात्विक आहार और योग से शरीर के समस्त रोगों को दूर कर मस्तिष्क को तनाव मुक्त कर, आत्मा का ईश्वर के साथ एकरूप करते हैं। इनसे हमारी सोच सकारात्मक होती है और विचार शुद्ध और परहित सोचने की प्रेरणा देते हैं। जीवन जीने का सबसे सर्वोत्तम तरीका योग तथा सात्विक आहार ही है।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू समय है समय बहुत कीमती है और हमें इसे किसी भी तरह से बर्बाद नहीं करना चाहिए। इसी तरह, हम जो पैसे खर्च करते हैं, उसे कमा सकते हैं, लेकिन हम अपने खोए हुए समय को वापस नहीं पा सकते। तो, यह समय को पैसे से अधिक मूल्यवान बनाता है। इसीलिए, हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए।

समय दुनिया की सबसे मूल्यवान और कीमती चीज़ है। विद्यार्थी जीवन में समय का सही उपयोग किया जाए तो जीवन में सफलता अवश्य प्राप्त होती है। इसके विपरीत जो विद्यार्थी कर लेंगे या पढ़ लेंगे का दृष्टिकोण रखते हैं, वे असफलता का मुंह देखते हैं। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे अपना हर कार्य निर्धारित समय पर या उसके पूर्व ही समाप्त कर लें। जिससे बचे हुए समय में दूसरे कामों को करने की रूपरेखा बनायी जा सके। फिर लौट कभी भी न आए समय ईश्वर का सबसे बड़ा उपहार है।

मनुष्य जीवन रिश्तों में जुड़ा हुआ है। रिश्तों के कारण ही मनुष्य जीवन में आगे बढ़ने की, सफलता पाने की, शिक्षित होने की, कार्य करने की इच्छा रखता है। यदि रिश्ते मधुर हो तो जीवन सुखमय व खुशहाल बन जाता है, किंतु रिश्तों में खटास आते ही व्यक्ति भी टूट जाता है। रिश्ता आखिर बिगड़ता क्यों है ? इसके पीछे व्यक्ति का कहना, सोच व उसका व्यवहार भी ज़िम्मेदार होता है। मशहूर स्पीच थैरेपिस्ट बिल वाल्टन का मानना है कि रिश्तों को बिगाड़ने में 50% से ज्यादा कारण असंयमित भाषा होती है। अध्यात्म और शांति के साथ कार्य करने वाले व्यक्तियों के रिश्ते बेहतर सफल होते हैं। रिश्ते निभाना भी समझौतों का ही दूसरा नाम है रिश्ते केवल खून के ही नहीं होते, भावनात्मक भी होते हैं। कई बार भावनात्मक रिश्ते अटूट बन जाते हैं, क्योंकि उनमें प्रेम, सामंजस्य, धैर्य, ईमानदारी का साथ होता है कहने का तात्पर्य है कि समय, सेहत, संबंध इन तीनों का आपस में अंत संबंध है इसीलिए इनका बनाये रखना ही हमारे सफल जीवन जीने की निशानी है।

समय तो होता है बलवान
चलते रहना इसका काम
समय रहते जो इसे जाने इसे
वही बन जाए भाग्यवान
चाहे जो परिस्थिति आए
या आलस तुम्हें बहकाए
लेना समझदारी से काम
समय से करना सारे काम
हर वस्तु पैसे से मिल जाए
है समय ही जो ना ले पाए
एक बार हाथ से जो निकले
फिर लौट कभी भी न पाए

कविता (एस.डी.ओ-1)
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

नारी सशक्तिकरण

स्वामी विवेकानंद आधुनिक भारत के शिल्पी अर्थात् निर्माता थे इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। दुनिया में हिंदू धर्म और भारत की प्रतिष्ठा स्थापित करने वाले स्वामी विवेकानंद ने एक आध्यात्मिक स्तंभ होने के साथ-साथ नारी सशक्तिकरण की दिशा में कार्य करते हुए अपनी प्रेरणा से युवाओं के दिलों में अमिट छाप छोड़ेंगे।

स्वामी जी का मानना था कि महिलाएं परिवार और समाज का आधार होती हैं जो स्वयं को प्राथमिकता न देते हुए सदैव परिवार तथा समाज के हित को महत्व देती हैं उनके कथानुसार यह विश्वास एक दिन एक महीने अथवा एक साल का नहीं बल्कि आदिकालीन है।

नारी को समझ में बंधक के रूप में देख कर स्वामी जी को बहुत दुख होता था। नारी की सामाजिक दशा देखकर उनका चिंतन नारी सशक्तिकरण के स्रोत के रूप में सामने आया। उनका मानना था कि नारी केवल एक शब्द नहीं है बल्कि उसमें जीवन की वह भावना समाहित है जो स्नेह, धैर्य, विश्वास, तपस्या, त्याग रूप में सभी जगह व्याप्त है।

स्वामी का शैक्षिक चिंतन बड़ा व्यापक था। उन्होंने धर्म शिक्षा, नारी शिक्षा तथा जन शिक्षा पर विशेष बल दिया। बालिका शिक्षा के महत्व को प्रतिवादित करते हुए उनका मानना था कि स्त्री जाति के उत्थान के बिना भारत का विकास कभी संभव नहीं हो सकता। स्वामी जी का कहना था कि देश तथा राष्ट्र को महान बनाने के लिए नारी जाति का सम्मान तथा उसका शिक्षित होना अति आवश्यक है जिस देश तथा राष्ट्र में नारी का अपमान हो और आज अशिक्षा के बंधन से मुक्ति न हो वह कभी विकास नहीं कर सकता। उसके महान बनने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

वर्तमान में जहाँ चारों ओर स्वतंत्रता, सामाजिक समरसता, लैंगिक असमानता, नस्ली भेदभाव, क्षेत्रवाद, प्रांतवाद, जातिवाद अमीरी और गरीबी सर्वधर्म समभाव तथा अन्य बहुत सी समस्याओं पर चर्चा हो रही है वही आज से नब्बे सौ वर्ष पूर्व स्वामी जी ने नारी मुक्ति तथा सांस्कृतिक जागरण की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया था। स्वामी जी का कहना था कि वास्तव में शिक्षा ही है जो नारी में आत्मबल तथा आत्मरक्षा उत्पन्न कर सकती है स्वामी जी चाहते थे कि भारत में नारी को ऐसी शिक्षा दी जाए जिससे वह निर्भर होकर भारत के प्रति अपना कर्तव्य निभा सके और संघमित्रा अहिल्याबाई जीजाबाई और मीराबाई जैसी भारत की महान देवियों द्वारा चलाई गई परंपराओं को आगे बढ़ा सके।

स्वामी विवेकानंद जी के विचारों के वशीभूत हो आज का भारत नारी सशक्तिकरण की दिशा में व्यापक रूप से आगे बढ़ रहा है। नारी सशक्तिकरण स्रोत स्वामी विवेकानंद जी को शत-शत नमन।

राजकुमार (डाटा एंट्री ऑपरेटर)
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

धरती का जन्मत - कश्मीर

बहुत पहले से मन में एक तमन्ना थी कि मैं कश्मीर की सैर में जाऊं। मसूरी, दार्जिलिंग और शिमला तो मैं पहले ही देख चुकी थी। मित्रों एवं अन्य लोगों से सुना था कि कश्मीर बहुत सुंदर है जब भी आपको मौका मिले एक बार कश्मीर जरूर घूमना। कहा भी गया था कि धरती पर अगर कहीं स्वर्ग है तो वह कश्मीर है। कश्मीर अपनी सुंदरता, प्राकृतिक दृश्यों, डल लेक, शिकारा, पश्मीना कपड़ों के लिए विख्यात है।

कोरोना महामारी की समाप्ति के बाद जब स्थिति सामान्य हो गई तो मैंने प्लान किया कि मैं कश्मीर जाऊं। मैं अपने पति और पुत्र के साथ वर्ष 2023 के मार्च महीने में कश्मीर के लिए निकल पड़ी। कोलकाता से दिल्ली और दिल्ली से श्रीनगर के लिए फ्लाइट ली। दिल्ली से उड़ान भरने के घंटे भर बाद जो दृश्य दिखा उसे मैं कभी नहीं भुला पाऊंगी। वह तस्वीर थी सुंदर चमचमाती सफ़ेद बर्फ से ढकी पर्वत श्रृंखलाओं की जो, मेरे मन में बैठ गई हैं।

श्रीनगर एयरपोर्ट से उतरकर करीब दोपहर तीन बजे जब बाहर निकली तो जैकेट पहन लिया क्योंकि मार्च का महीना था और वहाँ ठंडक थी। वहाँ से सीधे जम्मू कश्मीर टूरिज़्म डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन के होटल पहुंची जो डल लेक के पास ही स्थित था। होटल की बालकनी से डल झील दिखाई दी जो बहुत ही सुंदर थी और उसमें तैरती हुई शिकारा अत्यंत सुंदर लग रही थी मानो वे शिकारा न होकर बड़े-बड़े हंस हो।

थोड़ा आराम करने के बाद मुझसे रहा नहीं गया और शाम पाँच बजे तैयार हो कर अपने परिवार के साथ डल झील देखने के लिए निकल पड़ी। सभी घाटों पर शिकारा लगी हुई थी और लोग आकर पूछ रहे थे - "चलिए मैडम, चलिए मैडम घूमा देते हैं। एक बार जरूर शिकारा की सैर कीजिए आपको बहुत अच्छा लगेगा।"

हमसे भी रहा नहीं गया और हम निकल पड़े अपने शिकारा सैर पर। बीच झील में शिकारा में सैर करना मुझे एक अलग लोक में पहुंचा रहा था। इसी दौरान दूसरे शिकारा वाले हमारे शिकारा के पास आते और पूछते मैडम कहवा चाहिए, मैडम कबाब चाहिए, मैडम फोटो खिंचवाना है कश्मीरी कपड़ा पहने हुए। बेटे ने कबाब की डिमांड की और हमने कबाब खाया जो कि बहुत ही लजीज था। इसके बाद हमने कहवा पिया जो वाकई बहुत टेस्टी था।

इसी बीच शिकारा वाले ने शिकारा को एक दुकान में रोका। वह दुकान बीच झील में ही बनी हुई थी। हमने कपड़े देखे खासकर सूट पीस कढ़ाई किए हुए। चूंकि हमें कीमत का अंदाजा नहीं था इसलिए हमने कहा कि हम दूसरे दिन आएंगे और वहाँ से रवाना हो गए। करीब आधे घंटे और सैर करने के बाद शिकारा वाले ने हमारे होटल के समीप वाले घाट नंबर 4 पर उतार दिया। अब तो इंतजार था अगले दिन का, मौसम साफ था और हमे जाना था बर्फ से ढके क्षेत्र - गुलमर्ग में। सुबह 8:30 बजे ही हम गुलमर्ग के लिए निकल पड़े और करीब 45 मिनट बाद हम गुलमर्ग पहुंचे। सुबह का समय था भीड़ कम थी। वहाँ पहुंचते ही 15-20 गाइड वाले हमारे आगे पीछे आ गए एवं गाइड लेने की जिद करने लगे। हमने कहा हमे गाइड नहीं चाहिए। थोड़ी दूर चलने के बाद हमे एक वृद्ध सज्जन मिले जो कहने लगे- "मैडम आप गाइड ले लीजिए" उन्होंने अपना पास दिखाया और कहा मैडम - "हम रजिस्टर्ड हैं, डरने की कोई बात नहीं। आप 500 ही दे दीजिए।" हम भी उनकी सज्जनता देखकर राजी हो गए। उन्होंने हमारे बच्चे का हाथ पकड़ा और कहा चलिए मैडम मेरे पीछे-पीछे आइए। हम गंडोला राइड के गेट की तरफ जा रहे थे। हमारा स्लॉट 11:45 से 1:45 का था लेकिन हमने पहले ही ऑनलाइन बुकिंग करा लिया था क्योंकि जाने के बाद टिकट नहीं मिलती है। उन्होंने कहा 'आप चिंता न करे चलिए मैं आपको ले चलता हूँ।' रास्ते में चारों बर्फ जमी हुई थी और हम बर्फ पर चलते, फिसलते हुए ही गोंडा द्वार तक पहुंचे। टिकट दिखा कर गोंडोला राइड पर चढ़े और पहले पड़ाव पर गुलमर्ग फेज 1 पर उतर गए। नीचे उतरने के बाद वह दृश्य ऐसा था जैसा फिल्मों में होता है। आज वास्तविक रूप में वह दृश्य हमारे सामने मौजूद था। यह बताना जरूरी है कि रास्ते में गुलमर्ग पहुंचने से पहले हमने जैकेट और जूते भाड़े पर ले लिए थे। हालांकि जूते ही की आवश्यकता थी।

वहाँ काफी भीड़ थी। सभी लोग मस्ती में घूम रहे थे मानो पिकनिक मनाने आए हों। वहाँ स्केटिंग प्रतियोगिता का आयोजन भी चल रहा था। काफी इधर-उधर घूमने फोटो खिंचवाने और स्केटिंग करने के बाद हम लोग एक शॉप पहुंचे। वहाँ हमने मैगी खाई और काफी पी।

मेरे बेटे की इच्छा थी कि वह बर्फ में स्नो मैन बनाएँ और उसने अपनी इच्छा वहाँ पर पूरी की। 3 घंटे बर्फ में समय बिताने के बाद हम वापस लौट पड़े, पुनः गंडोला में चढ़े और रास्ते में ड्राइवर ने वहाँ की एक स्पेशल डिश हरिशा के बारे में बताया जो कि मटन से ही बनाई जाती है। वे हमें एक होटल में ले गए जहा हरिशा मौजूद था। हमने हरिशा का भरपूर आनंद उठाया। यह वाकई में बहुत ही स्वादिष्ट व्यंजन था जिसे रोटी के साथ खाया जाता है।

होटल लौट कर हमने आराम किया और अब तीसरे दिन सुबह बारी थी सोनमर्ग जाने की। विगत दिन की तरह हम प्रातः 8:30 बजे ही होटल से निकल गए सोनमर्ग जाने के लिए।

उस दिन शबे - बारात था और पहले हम हजरतबल मस्जिद देखने पहुंचे। यहाँ हमने कुछ समय बिताया। यह हमारे लिए भी सौभाग्य की बात थी कि इस पवित्र दिन हम हजरत बल में उपस्थित थे। इस मस्जिद के बारे में कहा जाता है कि यहाँ हजरत मोहम्मद साहब के पवित्र बाल रखे हैं।

वहाँ से करीब 1 घंटे की यात्रा करने के बाद हम पहुंचे सोनमर्ग रास्ते के दोनों तरफ बर्फ जमी हुई थी। जहां ड्राइवर ने हमें ड्रॉप किया यहाँ पर भी हमें गाइड मिला और उसने हमें जूते और जैकेट लेने को कहा। लेकिन हमें सिर्फ जूते ही लिए क्योंकि यहाँ बर्फ गुलमर्ग के मुकाबले गीली थी। इंका चार्ज 500 रू पड़ा। वहाँ पर भी हमें काफी मोलभाव करना पड़ा। स्लेज से ऊपर जाएँ या मोटर स्कूटर से जाएँ। हमने मोटर स्कूटर चुना और लगभग डेढ़ हजार रूपए प्रति हेड हमें देने पड़े। एक पड़ाव पहुँचने के बाद मोटर स्कूटर ने हमें वहाँ उतार दिया और बताया गया कि अगर आपको आगे जाना है तो अप स्लेज के जरिए ही जा सकते हैं और जब भी आप घूम ले, आप हमारे साथ पुनः नीचे जाएंगे। यह बताना जरूरी है कि चारों ओर हम बर्फ से घिरे थे लेकिन हमें ठंड नहीं लग रही थी। ज्यादातर लोगों को यहाँ स्किन प्रोब्लम भी होता है तो यह जरूरी है कि जो यहाँ पर जाएँ अपना सन स्क्रीन वगैरह मुंह पर जरूर लगाकर जाए वरना स्किन जल जाती है। साथ ही सन ग्लास भी जरूर अपने साथ लाएँ।

हम सोनमर्ग क्लब के पास में ही बैठे थे और आगे जाने की इच्छा नहीं थी लेकिन वहाँ पर भी स्लेज वाले हमारे पीछे पढ़ गए और कहने लगे दीदी हमारा नंबर दो-तीन दिन में ही आता है। हम आज आएँ हैं फिर 3 दिन बाद आएंगे। इसलिए आप हमारे साथ एक बार घूम लें। हमारे न कहने के बाद भी वे नहीं माने और काफी कहने के बाद हमें भी तैयार होना पड़ा और हमने उस ट्रिप के लिए 1600 रू दिए। स्लेज के जरिए वो हमें आगे तक ले गए और वे जगहें दिखाई जहाँ 'सत्ते पे सत्ता' फिल्म और बजरंगी भाईजान फिल्म की शूटिंग हुई थी। ये सारा क्षेत्र इस समय बर्फ से ढका हुआ था। वहाँ कुछ देर बिताने और फोटो खिचवाने के बाद हम वापस सोनमर्ग क्लब तक आए। कुछ देर इंतजार करने के बाद हम मोटर स्कूटर में बैठे और नीचे आ गए।

पुनः हमने होटल का रुख किया और शाम 5:30 - 6:00 बजे तक हम पहुँच भी गए। यह बताना जरूरी है कि हम रास्ते में एक दुकान पर रुके जहां ड्राइवर हमें लेकर गया था। हमने वहाँ से कुछ सामान भी खरीदा - शाल, स्वेटर, साड़ी आदि।

अब अगले दिन बारी थी पहलगाम जाने की। हम लोग सुबह जल्दी उठे और फिर 8:30 तक हम पहलगाम के लिए निकल पड़े। श्रीनगर से पहलगाम जाने में लगभग 3 घंटे का समय लगता है। डेढ़ घंटे की ड्राइव के बाद ड्राइवर हमें एक दुकान पर ले गया जो रास्ते में थी। वहाँ हमें वैलकम ड्रिंक के रूप में स्पेशल कहवा पिलाया गया। वहाँ से हमने शुद्ध केसर भी खरीदा। साथ ही अखरोट, ड्राई फ्रूट्स, राजमा और रोज वाटर भी खरीदा।

उसके बाद हम सीधे पहलगाम पहुंचे। वहाँ हमने अपने होटल में चेक इन किया। वहाँ हमें पुनः कहवा पिलाया गया। अच्छा लगा कि चलो ठंड में यहाँ चाय की बजाय हमें कहवा तो मिल रहा है। चारों ओर का प्राकृतिक नजारा बड़ा सुंदर था। चारों ओर पहाड़ियाँ पेड़ से भरी और उसमें से पिघलता बर्फ। मेरा बेटा भी वहाँ प्रांगण में खेल रहा था। वह छोटी-छोटी लकड़ियाँ चुनकर अपने लिए कुछ बना रहा था। वहाँ हमें लंच किया और तुरंत बिना समय गवाएँ एक गाड़ी बुलाई जो हमें आरू वैली और बेताब वैली ले गई। गाड़ी के लिए हमने 1900 रू चुकाए। पहले हम आरू वैली गए। वह स्थान भी चारों ओर पर्वतों से घिरा था और पहाड़ों में अभी भी बर्फ जमा हुआ था। सिर्फ ऊपर ही नहीं जमीन में घास में भी बर्फ जमा हुआ था। लगभग एक घंटा यहा बिताने के बाद हम वापस बेताब वैली की ओर चल पड़े। जी हाँ यह वही जगह है जहाँ हिन्दी फिल्म बेताब की शूटिंग हुई थी। करीब 1 घंटा वहाँ गुजारने के बाद हम वापिस लौटे अपने होटल की ओर। रास्ते में लिद्धर नदी दिखी जिसकी आवाज दूर तक सुनाई देती है। शाम को हम थोड़ी देर के लिए पहलगाम मार्केट गए और वहाँ का लुत्फ उठाया। यह बताया गया कि यहाँ मशहूर फिल्म 'रोटी' का गीत फिल्माया गया था।

चूँकि हमें अगली सुबह श्रीनगर रवाना होना था इसलिए हमने रात को जल्दी खाना खाया और सोने चले गए।

हम श्रीनगर पहुँच चुके थे और हमने चुके थे और हमने अपने हाउसबोट में चेक इन किया जिसकी बुकिंग हमने पहले से ही करा रखी थी।

एक शिकारा हमें अपने हाउसबोट तक ले गया। जब हम वहाँ पहुंचे तो वहाँ भी हमारा स्वागत कहवा पिलाकर ही किया गया। दिन में हमने हाउसबोट में ही आराम किया। वहाँ किसी प्रकार की हमें असुविधा नहीं हुई

रात के समय का नजारा अत्यंत मनोरम था सामने पहाड़ पर जलती हुई लाइटें साथ ही दूसरे हाउसबोट की लाइटें बड़ी मनोरम लग रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो तारे आज सब जमीन पर उतार आए हैं। अगले दिन सुबह ब्रेकफ़ास्ट करके और थोड़ी देर आराम करने के बाद हम अपने होटल, जिसमें हम पहले दिन आकर रुके थे उस तरफ चल पड़े जो

कि डल लेक के पास था। एक शिकारा हमें घूमता हुआ घाट तक छोड़ गया।

यहाँ भी दिन में आराम करने के बाद शाम को हम मुगल गार्डन देखने निकाल पड़े। मुगल गार्डन के अंदर जाने के लिए टिकट लिया वहाँ कई तरह के फूल थे। भिन्न भिन्न प्रकार की क्यारियाँ लगाई हुई थी, झरने थे बाहर निकल कर हम लोगों ने आइस्क्रीम खाई थोड़ी शॉपिंग की।

अगले दिन सुबह हम होटल से तैयार होकर एयरपोर्ट के लिए 4 घंटे पहले ही निकल गए। दोपहर 1 बजे हमने श्रीनगर से फ्लाइट ली दिल्ली के लिए। जब कश्मीर से लौट रही तो यह बात मेरे मन में थी कि क्यों लोग कश्मीर को जन्नत कहते हैं। वाकई जो कश्मीर में देखा, वह जन्नत से कम ना था° यह दृश्य विदेश में जाकर भी देखे जाते हैं पर अपने देश की बात ही अलग हैं। अपने जीवन में एक बार फिर में कश्मीर घूमने जरूर जाऊँगी। बहुत ही सुंदर है कश्मीर।

साहिना खातून
असिस्टेंट टीचर
छावनी परिषद बैरकपुर

“मुस्कुराता हुआ हर चेहरा”

मुस्कुराता हुआ हर चेहरा अच्छा लगता है।
चेहरे का नूर ही कुछ अलग सा लगता है।

लोग कहते हैं की मुस्कान हर दर्द को छिपा लेती है।
वही मुस्कुराहट किसी की खुशी की वजह बन जाती है।

किसी के जीवन में नई आशाओं का संचार करती है।
किसी के जीवन से दुखों का नाश करती है।

चेहरे पर मुस्कान की खासियत ही यही है।
अपनों के चेहरे की मुस्कान सुकून देती है।

चिंताओं से मुक्ति का एहसास देती है।
पूछ ले जरा कोई मुस्कान के साथ तकलीफ आपकी,

तो उस मायूसी से भरे संसार में नए हौसलों को उड़ान देती है।
किसी मासूम बच्चे के चेहरे की मुस्कान,

दिल में जीने की नई उमंग जगाती है।
कह दे कोई मुस्कुराकर साथ हूँ मैं तेरे हर पल,
तो वो मुस्कान अकेलेपन के दर्द को भी दूर कर जाती है।

विपिन कुमार
कनिष्ठ लिपिक
छावनी बोर्ड, रुड़की

बस इतना ही काफी है

बैचैनी क्यों हर पल है,
जाने ये कैसा दौर है,
जिसको भी देखो व्यस्त है
जो होना होगा कल है,
जिंदगी की इस मोड़ पर थोड़ा रुकना चाहती हूँ
मन की दबी भावनाओं को बाहर निकालना चाहती हूँ।
अपनी अतीत की यादों को सँजोकर रखना चाहती हूँ
मेरे ज्ञानदान के क्षेत्र की स्मृतियाँ की गाँठे बांधना चाहती हूँ
जीवन प्रयास में ...
हे पल,
मुझे पता है तू रुकेगा नहीं
फिर भी
सिर पर छत है मेहनत की कमाई है, स्कूल में बच्चों को पढ़ने का सुकून
है, मेरे अपने बच्चे उच्चशिक्षित होकर अपनी नौकरी में व्यस्त है,
“बस मेरे लिए इतना ही काफी है”
मेरे करीबी रिश्तेदार है मोबाइल पर संपर्क है,
पास होकर भी रिश्तों में मीलों की दूरियाँ है।
लेकिन त्योहारों, खुशी के मौकों पर एक साथ मिलकर एक दूसरे के दिल
में रहते है
“बस मेरे लिए इतना ही काफी है” आँखों के सामने बीते पल की यादें
अनुबंधित है।
अंतकरण में यादों की पोटली है।
खुशी, ज्ञान मिले अवसर से जीवन सुंदर और सफल हो गया है।
अनुबंध अपनेपन का हिफाजत में सुरक्षित है।
“बस मेरे लिए इतना ही काफी है” आशा करती हूँ
भविष्य की यात्रा में हर शाम सुनने को मिले कुछ खूबसूरत सुंदर संगीत की धुने।
जीवन किताबों स्वर्ण अक्षरों से लिखे कुछ यादों के पन्ने।
बदलते रहते है सारे दौर
हमने है ये माना
स्वस्थ और सुखमय हो सबका जीवन यही है कामना।
यही है कामना

राजश्री रसाल
घोरपड़ी गाँव हाईस्कूल एवं जूनियर कॉलेज
पुणे छावनी बोर्ड

बचपन की वो यादें

बचपन की वो यादें
एक सुंदर पिटारा थी
यादों का वो पिटारा
देखो उतना कम था।

वो छोटी - छोटी शरारते
वो मासूम - सा भोलापन
मानो ज़िंदगी में कोई
गम ही नहीं था ।

पुराने दोस्तों की तो
बात ही अलग थी
कुछ खट्टी मिट्टी यादें
जो उनके साथ जुड़ी थीं।

दुनियादारी की न समझ थी
न दुनिया के लोगों की
अपनी दुनिया में ही
खुश हम रहते थे।

देखे हमने बचपन में
बड़े होने के खूब सपने
अब बूढ़े हो कर लगता है
बचपन ही कितना अच्छा था।
यादों का वो बचपन
कितना सुंदर पिटारा था।
कितना सुंदर पिटारा था

संजय शंकर चौरे
दफ्तरी
छावनी बोर्ड अहमदनगर

मसालों की दुनिया

(स्वाद से सेहत तक)

रसोई के मसालों को सिर्फ रसोई तक ही सीमित नहीं समझना चाहिए। मसालों की दुनिया बहुत ही विस्तृत है। इन मसालों में सेहत का खजाना है। हम आगे जानेंगे कि कैसे इन मसालों की सहायता से हम अपनी सेहत को दुरुस्त कर सकते हैं परंतु उससे पहले हमें मसालों का इतिहास जानना होगा।

भारत में मसालों का प्रयोग सिंधु घाटी सभ्यता से हो रहा है, जिसके उदाहरण हमें समय-समय पर मिलते रहे हैं। इस प्राचीन सभ्यता से पता चलता है कि मसालों का प्रयोग पाक कला एवं औषधि बनाने के लिए हमेशा से ही किया जाता रहा है। मसाले सदियों से पारंपरिक भारतीय, आयुर्वेद का अभिन्न अंग रहे हैं। मसालों में अनेक औषधिय गुण होते हैं जिनकी सहायता से शारीरिक उपचार किया जा सकता है।

प्राचीन और मध्य कालीन युगों में भी भारतीय मसालों ने भारत की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मसालों का मुख्य प्रदेश केरल, उत्तर प्रदेश, पंजाब, मणिपुर, मिजोरम, गुजरात इत्यादि हैं। यहाँ मसालों का प्रयोग खाने को स्वादिष्ट बनाने एवं इत्र, सौन्दर्य प्रसाधन आदि अनेक कार्यों के लिए किया जाता रहा है।

कुछ मसाले पीसकर उपयोग में लाये जाते हैं एवं कुछ मसाले सूखे बीज, छाल, जड़, फूल, फलों के रूप में उपयोग में लाए जाते हैं। इन मसालों को कई प्रकार से वर्गीकृत किया गया है, जिनका संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है:-

बीज वाले मसाले :- अजवाइन, अनारदाना, सौंफ, धनिया, जीरा, मेथी, खसखस आदि।

पत्ती वाले मसाले :- तुलसी, तेजपत्ता, कढ़ीपत्ता, धनिया पत्ते, पुदीना, रोजमेरी लीव्स आदि।

फूल/फूलों वाले मसालों :- जायफल, रोज, वेनिल इत्यादि।

मूल/जड़ वाले मसाले :- प्याज, अदरक, लहसुन, हल्दी इत्यादि।

इसके अतिरिक्त कुछ और मसाले भी हैं, जो बीज, फल इत्यादि किसी भी श्रेणी में नहीं आते, जैसे काली मिर्च, लौंग, अमचूर, हींग, इत्यादि।

कुछ भारतीय मसालों का संक्षिप्त विवरण निम्न है :-

हल्दी :- हल्दी को हरिद्रा भी कहते हैं। हल्दी गुणों का खजाना है। हल्दी प्रत्येक घर में पाई जाती है। हल्दी को घर में ही उगाया जा सकता है। हल्दी का पौधा सदाबहार होता है। इसके पत्ते, तना और कंद सभी का प्रयोग खाने और औषधि बनाने में किया जाता है।

हल्दी वात और कफ दोषों को दूर करने में मदद करती है। यह एक एंटीऑक्सीडेंट है इससे एलर्जी, गठिया, मधुमेह आदि कई बीमारियों का इलाज किया जाता है।

धनिया :- धनिया पाउडर के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसकी खुशबू तेज होती है। अतः यह सभी दालों, सुखी सब्जियों, कढ़ी एवं सभी अचारों में इस्तेमाल किया जाता है। अन्य मसाले इसके साथ उपयोग नहीं होते।

काली मिर्च :- काली मिर्च सदियों में दवाइयों में और खाने की वस्तुओं में प्रयोग में लाई जाती है। यह एक पौधे का फल है जो गुच्छों में उगते हैं। काली मिर्च का फल हरा होता है और पक जाने पर लाल रंग का हो जाता है। फिर इसे तोड़कर सुखाया जाता है। काली मिर्च को तोड़ने पर इसका रंग हल्का सफ़ेद होता है।

काली मिर्च में रोगनाशक, एंटीऑक्सीडेंट तथा गेस्ट्रो से सुरक्षा देने वाले गुण होते हैं। सह सर्दी और खांसी को ठीक कर गले को भी सुरक्षा प्रदान करता है। आयुर्वेद के अनुसार काली मिर्च का सेवन श्वसन संक्रमण से तुरंत राहत देता है।

सफ़ेद मिर्च :- सफ़ेद मिर्च का प्रयोग हल्के रंग के व्यंजनों जैसे सूप, सलाद, ठंडाई, वैज रेसिपी इत्यादि में होता है। सफ़ेद मिर्च और काली मिर्च एक ही पौधे के फल हैं।

जीरा :- जीरा प्रत्येक घर की रसोई में मिलने वाला एक अति आवश्यक मसाला है। जीरे को भून कर और पीसकर दही के व्यंजनों, पेय, चटनी, चाट इसके साथ ही दालों, कढ़ी, अचार, इत्यादि में किया जाता है। जीरे को भून एवं पीसकर डिब्बे

में रखकर आसानी से इस्तेमाल किया जा सकता है।

काला जीरा :- काला जीरा उत्तर भारत में अधिक प्रयोग किया जाता है एव रोज इस्तेमाल में आने वाले जीरे से पूर्णतः अलग है। काले जीरे का प्रयोग गरम मसाला में किया जाता है।

हींग :- हींग बहुत लाभकारी पाचक है। हींग की महक बहुत तेज होती है खाने में यह थोड़ी कड़वी होती है। छोटे बच्चों को जब भी पेट दर्द होता है तो हींग को पानी में घोल पेट पर बाहर से लगाने से तत्काल राहत मिलती है। शुद्ध हींग पानी में घोलने पर सफ़ेद रंग की हो जाती है। हींग को गरम घी/तेल में भुना जाता है।

हरड़:- हरड़ एक खड़ा मसाला है और इसका प्रयोग आमतौर पर अमचूर, अचार, इत्यादि में होता है। यह पेट के लिए भी बहुत लाभदायक होता है।

मेथी :- मेथी एक औषधीय पौधा है। जिसका उपयोग पेट की बीमारियों से लेकर मधुमेह के बचाव में किया जाता है। मेथी का पौधा सदाबहार होता है जिसे आसानी से घर में उगाया जा सकता है। मेथी के दानों का प्रयोग मसाले के रूप में होता है और मेथी की पत्तियों का प्रयोग पराँठे, सब्जी, कढ़ी इत्यादि में किया जाता है।

मेथी रोग प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करती है यह एक एंटीऑक्सीडेंट भी है। यह लीवर के लिए फायदेमंद होती है। मेथी का साग बनता है एवं सूखा कर इसका इस्तेमाल खाद्य पदार्थों में किया जाता है।

अजवाइन :- अजवाइन का प्रयोग सदियों से आयुर्वेद में होता आ रहा है इसे अच्छा पाचक माना जाता रहा है। अजवाइन के दाने बहुत खुशबूदार होते हैं। इसका प्रयोग छाँक के अलावा, चूरन, चाट, मसाला, अचार, कढ़ी और बहुत सारी चीजों में किया जाता है।

अदरक :- अदरक एक गुणकारी मसाला है जो कि सुगमता से प्राप्त हो जाता है। इसका इस्तेमाल खाने को स्वादिष्ट बनाता है। अदरक वाली चाय सभी घरों में बनती है। इसका सेवन स्वाद के साथ-साथ सेहत को भी बढ़ाता है। अदरक शरीर को डिटोक्सिफ़ाई करने का भी कार्य करता है। इंप्लुएंजा एवं निमोनिया में इससे राहत मिलती है।

सरसों और राई :- सरसों का पौधा बहुपयोगी होता है। सरसों कई रंग की होती है लेकिन काली सरसों आसानी से मिल जाती है। सरसों की पत्तियाँ का साग एवं भुर्जी, इत्यादि बनाए जाते हैं, और सरसों के दानों का प्रयोग तड़के, अचार में और अनेक खानों में होता है। पश्चिम में सरसों का इस्तेमाल साँस बनाने में भी किया जाता है।

जायफल :- जायफल गोल या अंडाकार होता है। यह बीज लाल रंग से ढका रहता है जिसे 'जावित्री' के नाम से भी जानते हैं। जायफल एव जावित्री दोनों ही मसाले प्राचीन काल से इस्तेमाल होते आ रहे हैं। इनका उपयोग आयुर्वेद में भी किया जाता है। भारत में घरेलू इलाज के रूप में जायफल को ठंड लग जाने पर पीस कर दूध के साथ बच्चों को दिया जाता है।

अनारदाना :- अनार के दानों को सूखा कर तैयार किया गया मसाला है। इस मसाले का प्रयोग खाने में खट्टा स्वाद लाने के लिए किया जाता है। अनारदाने से भिन्न प्रकार के स्वादिष्ट चूरन भी बनते हैं।

सफ़ेद तिल :- तिल में बहुतायत मात्रा में कैल्शियम के साथ- साथ फास्फोरस और कई प्रकार के विटामिन भी होते हैं। स्वास्थ्य की दृष्टि से छिलके वाला तिल अति उत्तम है। तिल से कई प्रकार की मिठाइयाँ, नमकीन, करी एवं कई प्रकार की ब्रेड बनाई जाती है। सफ़ेद तिल दो प्रकार के होते हैं एक महीन छिलके वाला जो हल्के गुलाबी-भूरे रंग का होता है और एक बिना छिलके वाला बिलकुल सफ़ेद होता है।

केसर :- केसर को "ज़ाफ़रान" भी बोलते हैं। केसर सबसे महंगा मसाला है। इसका प्रयोग मिठाइयों, पुलाव इत्यादि में होता है। केसर के धागे दूध या पानी में भिगोने पर केसरिया रंग देते हैं। केसर को कम मात्रा में ही इस्तेमाल किया जाता है जिससे इसका स्वाद और खुशबू बढ़ जाती है।

दालचीनी:- दालचीनी में कई औषधीय गुण होते हैं। दालचीनी की विशिष्ट गंध और स्वाद इसे भोजन का खास अंग बना देते हैं। दालचीनी में सिनामाइल्डहाइड नामक यौगिक पाए जाते हैं। सिनामाइल्डहाइड एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-फंगल गुणों के लिए जाना जाता है। दालचीनी रोग प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाने वाली औषधि मानी जाती है।

लौंग :- लौंग में एंटीओक्सीडेंट भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं, इसलिए लौंग को अच्छा प्रतिरोधक माना जाता है। लौंग खांसी और गले की तकलीफ को कम करती है।

भारत के मसाले सिर्फ अपने देश में ही नहीं अपितु विश्व भर में प्रसिद्ध हैं। स्वाद और गुणवत्ता से भरपूर ये मसाले हमेशा से ही भारतीय रसोई के अंग रहे हैं। चाहे कुछ मसाले जिनकी जमीन भारत न भी रहा हो, यहाँ की संस्कृति में घुलकर यही

के हो गए है। भारत विश्व का सबसे बड़ा मसाला उत्पादक होने के साथ-साथ सबसे बड़ा उपभोक्ता और निर्यातक भी है। पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न मसालों का उत्पादन तेजी से बढ़ा है।

भारत का खाना मसालों के बगैर अधूरा है। मसाले भारतीय संस्कृति को दर्शाते हैं और सेहतमंद भी रखते हैं। खुले मसाले नहीं लेने चाहिए क्योंकि खुले मसालों में मिलावट होती है। अतः मसाले या तो स्वयं घर में ही पीस ले अन्यथा बंद पैकेट के मसाले ही लें।

मसालों का प्रयोग उचित मात्रा में करें और स्वादिष्ट खाने के साथ-साथ सेहत का भी रखें ख्याल।

सीमा बक्शी
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

बच्चों के लिए स्मार्ट फोन एक अभिशाप

वर्तमान युग में मोबाइल फोन एक मूलभूत आवश्यकता बन गयी है। हर व्यक्ति मोबाइल फोन को छठी इंद्रि समझने लगा। घर, बाहर, ऑफिस आते - जाते सबके हाथ में मोबाइल रहता है मनुष्य हर समय मोबाइल में व्यस्त रहता है। इसका सीधा असर बच्चों पर पड़ रहा है। बच्चे भी बड़ों की तरह मोबाइल पर गेम खेलते रहते हैं। यह जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। इसका कोई मानक भी तय नहीं किया गया कि किस उम्र के बच्चों को मोबाइल का इस्तेमाल करना चाहिए। छोटे बच्चे मोबाइल पर कार्टून देखकर खाना खाते हैं। बड़े बच्चे गेम खेलते हैं कभी -कभी वे खतरनाक गेम भी खेलते हैं जैसे -ब्लू व्हेल चैलेंज। इस तरह से वे मोबाइल (स्मार्ट फोन) का इस्तेमाल करते रहे तो आने वाले 20 वर्षों में हर घर में एक मानसिक रोगी होगा। बच्चे जब मोबाइल में व्यस्त रहते हैं तो वे अपनी शारीरिक व मानसिक क्षमता को भूल जाते हैं। वे किसी के साथ मिलना -जुलना नहीं चाहते जिससे उनका सामाजिक विकास भी नहीं हो पाता है। चार से पांच वर्ष के बच्चों को चश्मा लग रहा है यदि उनके माता -पिता से पूछा जाता है तो वे उसका कारण मोबाइल फोन बताते हैं। यदि हम समय पर सचेत नहीं हुए तो आने वाले समय में हमारे बच्चे मानसिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे।

मधुलिका श्रीवास्तव
(सहायक अध्यापिका)
कैंट बोर्ड स्कूल
बी आई बाजार
लालकुर्ती कानपुर

ज़िंदगी की रफ्तार

ज़िंदगी की तेज रफ्तार में,
रफ़ता रफ़ता बीते जा रहे हैं,
साल, महीने और हफ़्ते,
महीने अब पलों के जैसे हैं लगते
दिमाग ही लगाता जा रहा हूँ और,
दिल को लगाना भूल सा रहा हूँ।
समझदार ही बनता जा रहा हूँ और
दीवाना बनना भूल सा गया हूँ।
ऐसी समझदारी भी किस काम की,
कि अपनों से दूर होता जा रहा हूँ।
दुनियादारी की उलझने,
मेरी शरारते कम कर रही हैं।
स्वाद और चस्के ले रहा हूँ।
पर दिल से हँसना भूल रहा हूँ।
मालिक की दी हुई आँखों के बावजूद,
दुनिया को किसी और की नज़र से देखे जा रहा हूँ।
खुद की नज़र की तलाश में।
परेशान भटकता सा जा रहा हूँ।
बाहर दोस्तों के साथ मस्ती नहीं करता,
और फेसबुक पे अपनी दुनिया टूट रहा हूँ।
एक जुनून सा दिमाग पे छाया रहता है,
लेकिन ये सुकून जहां से गायब क्यों रहता है।
तरक्की थोड़ी बहुत हो रही है,
पर खुशी उससे कहीं ज्यादा खो रही है,
दुविधा अपनी उम्र के बारे में बढ़ती जा रही है,
क्योंकि मेरे समय की हीरोइन भाभी के रोल में बॉलीवुड में आ रही हैं।
वो मीठी गुड़गुड़ी नहीं होती जहां में आजकल,
क्योंकि वहाँ रहती अब रफ़्तार है।

ईशा सरीन डडवाल
कार्यालय अधीक्षक
निदेशालय, रक्षा सम्पदा
पश्चिमी कमान, चंडीगढ़

लघु कहानी (प्रेम से बड़ा कोई नहीं)

एक औरत ने तीन संतों को अपने घर के सामने देख। वह उन्हें जानती नहीं थीं।

औरत ने कहा - "कृपया भीतर आइये और भोजन करिए।"

संत बोले - "क्या तुम्हारे पति घर पर है?"

औरत - "नहीं, वे अभी बाहर गए हैं।"

संत - "हम तभी भीतर आएं जब वह घर पर हों।" शाम को उस औरत का पति घर आया और औरत ने उसे यह सब बताया।

पति - "जाओ और उनसे कहो कि मैं घर आ गया हूँ और उनको आदर सहित बुलाओं।" औरत बाहर गई और उनको भीतर आने के लिए कहा।

संत बोले - "हम अब किसी भी घर में एक साथ नहीं जाते।"

"पर क्यों?" - औरत ने पूछा।

उनमें से एक संत ने कहा - "मेरा नाम धन है।"

फिर दूसरे संतों की ओर इशारा कर के कहा - "इन दोनों के नाम सफलता और प्रेम हैं। हम में से कोई एक ही भीतर आ सकता है। आप घर के अन्य सदस्यों से मिलकर तय कर लें भीतर किसे आमंत्रित करना है।"

औरत ने भीतर जाकर अपने पति को यह सब बताया। उसका पति बहुत प्रसन्न हो गया और बोला - "यदि ऐसा है तो हमें धन को आमंत्रित करना चाहिए। हमारा घर खुशियों से भर जाएगा।"

पत्नी - "मुझे लगता है कि हमें सफलता को आमंत्रित करना चाहिए।"

उनकी बेटी दूसरे कमरे से यह सब बातें सुन रही थीं।

वह उनके पास आई और बोली - "मुझे लगता है कि हमें प्रेम को आमंत्रित करना चाहिए। माँ, इस संसार में प्रेम से बढ़कर कुछ भी नहीं है।"

"तुम ठीक कहती हो, हमें प्रेम को ही बुलाना चाहिए" - उसके माता - पिता ने कहा।

औरत घर के बाहर गई और उसने संतों से पूछा - "आप में से जिनका नाम प्रेम है वे कृपया घर में प्रवेश कर भोजन ग्रहण करें।"

प्रेम घर की ओर बढ़ चले। बाकी के दो संत भी उनके पीछे चलने लगे।

औरत ने आश्चर्य से उन दोनों से पूछा - "मैंने तो सिर्फ प्रेम को आमंत्रित किया था। आप लोग भीतर क्यों आ रहे हैं?"

उनमें से एक ने कहा - "यदि आपने धन और सफलता में से किसी एक को आमंत्रित किया होता तो केवल वही भीतर जाता। आपने प्रेम को आमंत्रित किया है। प्रेम कभी अकेला नहीं जाता। प्रेम जहाँ-जहाँ जाता है, धन और सफलता उसके पीछे जाते हैं। इसलिए प्रेम से बड़ा कोई धर्म नहीं है।"

सुजाता चट्टोपाध्याय
हिन्दी टंकक
कार्यालय प्रधान निदेशालय रक्षा सम्पदा
पूर्वी कमान कोलकाता

एवरेस्ट बेस कैंप में बिताए हुए कुछ दिनों का अनुभव

कई दिनों से मैंने दुनिया की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट के बेस कैंप को अपनी आँखों से देखने की उम्मीद की थी। इसके लिए तैयारी मैंने अक्टूबर 2010 से ही शुरू कर दी थी। मैंने शारीरिक और मानसिक दोनों ही तरह से खुद को इसके लिए तैयार करना शुरू किया। यह तय हुआ कि नेपाल के रास्ते हम बेस कैंप पहुंचेंगे। नेपाल के लोग एवरेस्ट को "steps of heaven" यानि स्वर्ग जाने का रास्ता के नाम से पुकारते हैं। इसके पीछे अवश्य ही कोई कारण रहा होगा। इसकी खोज करना हमारे इस अभियान का मूल उद्देश्य था। इंडियन माउंटनियरिंग फाउंडेशन, नई दिल्ली से हमें इस अभियान की अनुमति जून 2011 को मिली। हमारे इस अभियान के लिए कुल 08 लोगों का एक दल गठित हुआ।

हावड़ा से ट्रेन लेकर रक्सौल (बिहार) के रास्ते काठमांडू पहुंचे। काठमांडू से हम लुकला हवाई अड्डे पहुंचे। एवरेस्ट बेस कैंप पहुंचने के लिए लुकला जाना होता है और इसके अलावा नेपाल से इस स्थान तक पहुंचने का कोई और रास्ता नहीं है। हमारी इस यात्रा की सुविधा के लिए हमने दिसंबर 2010 में पहले ही कोलकाता से अपनी यातायात की टिकट निश्चित करवा ली थी। लुकला हवाई अड्डा विश्व के अत्यंत दुर्गम एवं खतरनाक हवाई अड्डों में से एक है। परमात्मा के आशीर्वाद से हमने सीता एयरलाइंस के विमान में यह यात्रा काठमाण्डू से शुरू की जिसमें कुल 22 यात्री सवार थे। विमान में यात्रियों के साथ कुछ भेड़, हरी सब्जियाँ और गैस सिलेन्डर भी चढ़ाए गए। सुबह 8.20 मिनट में हमारे विमान ने लुकला तेनजिंग हिलेरी एयरपोर्ट पर लैंडिंग की की। एवरेस्ट बेस कैंप ट्रेक को पूरा करने में कुल समय 12 दिन और 11 रातों का समय लगता है।

विश्राम स्थल पर कुछ देर विश्राम करने के बाद हमने एक लोडर का इंतजाम कर यात्रा को पुनः शुरू किया। अब हमारा गंतव्य स्थान था फकडिंग। ऊपर से नीचे की ओर बहती हुई दुधकाली नदी को साथ लेकर हम फकडिंग पहुंचे दोपहर के 3 बजे। पूरी यात्रा में भोजन और रहने यानी विश्राम की अच्छी व्यवस्था है।

इस अभियान के दूसरे दिन हम पहुंचे नामचा बाजार गाँव में। यह गाँव 3440 मीटर की ऊंचाई पर अवस्थित है और एक ऐतिहासिक व्यावसायिक केंद्र है। इस छोटे से गाँव में शायद ही ऐसी कोई वस्तु है जो न मिलती हो। इस स्थान पर कई विदेशी पर्यटक आते हैं। Manjo Village में सिविलियन चेकपोस्ट पर इनर परमिट जमा करना होता है। भारतीयों के लिए यह राशि 1500 रूपए (नेपाली मुद्रा) और विदेश से आए पर्यटकों के लिए यह 3000 रूपए (नेपाली मुद्रा) शुल्क अदा करने पर दिया जाता है।

अगले दिन भी हमने यही विश्राम किया। प्रातः काल हम निकल पड़े वहाँ के जनजीवन और प्राकृतिक मनोरम सुंदरता को और करीब से देखने के लिए। नामचा बाजार गाँव कुम्भ अंचल की राजधानी है। यहीं से हमें पहली बार एवरेस्ट श्रृंग के दर्शन हुए। ऐसा लगा कि हाथ बढ़ाने पर ही हम इसे छू सकते हैं। यहीं से अनेक चोटियों के दर्शन भी संभव हुए जैसे कोंगदिरी और थमसर्क।

आगे बढ़ने पर तेंगबोचे पहुंचे। तेंगबोचे एक छोटी सी अल्पाइन घाटी से घिरा हुआ गाँव है जो की 3867 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यहाँ एक बहुत बड़ी बौद्ध मठ (मोनेस्ट्री) है जिसे देखकर अंतर्आत्मा को अद्भुत शांति का अनुभव हुआ। इस स्थान से थमसेरको (6,608 मी), कोटेंगा (6,982 मी), अमां दब्लम (6,913 मी) और लोहत्सा (8,416 मी) श्रृंग अत्यन्त दर्शनीय थे।

दोपहर के 11 बजते - बजते रहम गोरखा शोप (एवरेस्ट बेस कैंप का अंतिम चरण) पहुँच गए। यहाँ तापमान -6 डिग्री था। कुछ देर वहीं विश्राम करने के बाद यात्रा को पुनः शुरू किया क्योंकि हमारा लक्ष्य एवरेस्ट बेस कैंप पहुँचना था। अब यह केवल 3 किमी की दूरी पर था। एवरेस्ट बेस कैंप पहुँचना था। अब यह केवल 3 कि.मी. की दूरी पर था। एवरेस्ट पर चढ़ने का अभियान शुरू होता है। चूंकि हमारे पास इसके पार जाने की अनुमति नहीं थी अतः हमने वहीं पर रहकर वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य को जी भर देखा। शाम होने से पहले हम यात्रीनिवास पर वापस आ गए। इस ऊंचाई पर केवल एक ही यात्रीनिवास है जहाँ 30 यात्रियों के रहने की व्यवस्था उपलब्ध है।

वापसी यात्रा में अगले दिन सुबह 10.30 बजे विमान में बैठकर काठमांडू एयरपोर्ट पहुँच गए।

इस यात्रा के दौरान कम से कम 150 से भी अधिक देशों से आए पर्यटकों से मेरा परिचय हुआ। इनमें से कई ऐसे थे जिन्होंने 02 महीने से भी अधिक समय से यहीं पर ठहरने की अनुमति एजेंसी से ली हुई थी। चूंकि मेरे पास वक्त और संसाधन सीमित थे इसलिए मुझे यह यात्रा यही पर समाप्त करनी पड़ी पर उन दिनों की अविस्मरणीय यात्रा को भुलाया नहीं जा सकता।

के. आर. दत्ता
कार्यालय अधीक्षक
छावनी परिषद, बैरकपुर

हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह की झलकियाँ



हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह की झलकियाँ



भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र : एक चिंतन

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए 2047 तक लक्षित किया गया है। देर-सवेर ही सही एक लक्ष्मण रेखा तो इस रूप में खींची दी गयी है जिसे हर हाल में पार करना है तब जाकर हम गर्व से कह सकते हैं:- अपना भारत, विकसित भारत। भारत को विकसित बनाने की दिशा में अनेक उपाय किए जाने चाहिए, जिनमें प्रमुख हैं:-

शिक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा। इस देश को विज्ञान, तकनीक, गणित और प्रौद्योगिकी पर आधारित क्षेत्रों में मान्यता प्राप्त क्षमता हासिल करने के लिए शिक्षा पर ध्यान देना होगा।

सरकार को बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूत बनाने के लिए निवेश करने होंगे जिससे स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हो सके और जनता को उच्च गुणवत्ता वाली मेडिकल सुविधाएं आसानी से मिल सके।

सामरिक रूप से, भारत को अपने रक्षा ऊर्जा क्षेत्र में महत्वपूर्ण विकास करने होंगे, नवीनतम हथियारों, सैन्य प्रणालियों और सैन्य तकनीक के उपयोग से भारत को अपनी सुरक्षा क्षमता को बहुत मजबूत करना होगा।

जनसंख्या नियंत्रण, स्वास्थ्य और शिक्षा सेवाओं के लिए विशेष महत्वपूर्ण कार्य करने होंगे। जिससे सुदूर क्षेत्रों तक के वर्गों को विकास की ओर समर्पित कर, सबके लिए समान और सुगम जीवन को सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक न्याय को बढ़ावा दिया जाना संभव हो सकेगा।

जल संसाधनों को सुरक्षित और व्यवस्थित प्रबंधन के लिए भारत को गंभीर ध्यान देने होंगे। नदी निर्माण, जल संरक्षण और जल संचय के लिए प्रोग्राम और प्रक्रियाओं की स्थापना तीव्रगामी गति से करनी होगी।

भारत को डिजिटल युग में विश्व नेतृत्व करने के लिए नवाचार ओपन डिजिटलीकरण को प्रोत्साहित करना होगा।

आठवां, भारत को विदेशी नीति में मजबूती से खड़ा रहना पड़ेगा और अपने अंतरराष्ट्रीय संबंध मजबूत बनाने होंगे। विश्व स्तर पर व्यापार, विदेशी निवेश और विदेशी टूरिज़म के लिए उद्योगों को प्रोत्साहित करना होगा।

नवां, विकसित भारत में महिलाओं का स्थान सर्वोपरि है। सरकार को महिलाओं और युवाओं के सशक्तिकरण को मजबूत करने की दिशा में प्रयास करने होंगे। उच्च शिक्षा, कौशल विकास और उद्यमिता के माध्यम से महिलाओं और युवाओं को समान अवसर प्रदान करने पड़ेंगे। साथ ही महिला सुरक्षा, स्त्री सशक्तिकरण और सामाजिक समानता के माध्यम से भारतीय समाज में एक न्यायपूर्ण और सुरक्षित माहौल को नींव देनी पड़ेगी। तब जाकर हम सारे भारतवासी एक साथ कह सकते हैं कि:-

“अपना भारत , विकसित भारत”

अशोक पासवान
हिन्दी टंकक
कार्यालय प्रधान निदेशालय रक्षा सम्पदा

गुड़िया मेरी तुम सुरक्षित हो...

स्कूल भेजते हो जिसे अच्छे – बुरे स्पर्श की समझ देनी पड़ती हो
फिर भी गुड़िया मेरी तुम बिलकुल सुरक्षित हो...
जिसके घर आने तक पिता के आँखों में हमेशा चिंता रहती हो
फिर भी गुड़िया मेरी तुम बिलकुल सुरक्षित हो...
दोस्त, पड़ोसी रिश्तेदार किसी न किसी से कभी हाथों से
कभी नजरों से तो कभी शब्दों से नोची जाती हों
फिर भी गुड़िया मेरी तुम बिलकुल सुरक्षित हो...
अन्याय हो भी जाए तुम्हारे साथ फिर भी क्यों तुम चीखती रहती हो,
जिसके आँखों पर है पट्टी उनसे कैसा न्याय मांगती रहती हो...
क्या क्या बताएं किस्से किस-किस की सुनाऊँ दास्तान,
अब तक तो कदम भी पड़े नहीं हैं तुम्हारे यहाँ ...
इस दुनिया से ऐसी ही तुम दूर अच्छी हो, कोख में हो मेरी तब तक ही गुड़िया तुम सुरक्षित हो,
आस लगाए बैठी है बाहर दुनिया की तुम गुड्डा हो, ...
पता चला इन्हें अगर की तुम गुड़िया हो तो सोच में है तुम्हारी माँ
कि क्या कोख में भी गुड़िया तुम सच में सुरक्षित हों...?????

अश्विनी शामगीर गोसावी
कनिष्ठ लिपिक
छावनी बोर्ड अहमदनगर

यारों हम मार्केट में जाएंगे

यारों हम मार्केट जाएंगे
मिलकर जंक फूड खाएँगे,

डॉक्टर की सलाह पर
कभी नहीं हम जाएंगे,

पिज्जा बर्गर चिली पेटेटों
मोमोस चाउमीन खाएँगे

यारो हम मार्केट में जाएंगे
मिलकर जंक फूड खाएँगे

कोई मित्र बीमार पड़ा तो
अस्पताल में मिलने जाएंगे

खान पान सेहत को लेकर
एक लंबा भाषण सुनाएंगे

मैदा चीनी और नमक का
परहेज समझाकर आएंगे

डॉक्टर की डाइट लिस्ट के
फायदे गिनवाकर आएंगे

यारो हम फिर मार्केट में
मिलकर जंक फूड खाएँगे

सेहत को लेकर डॉक्टर की सलाह
पर कभी नहीं हम जाएंगे

एक दिन प्यारे मित्रो हम
लंबे बीमार, पड़ जाएंगे

अपने सारे मित्रों को
अस्पताल में मिलने बुलाएँगे

फिर सारे मित्रगण हमे
जंक फूड के नुकसान गिनवाएंगे

इस बार दबी सी जुबान में हम वादा करेंगे
यारो हम कभी जंक फूड नहीं खाएँगे

डिजिटल दुनिया में खोया परिवार

क्या आप जानते हैं कि आजकल लोग मोबाइल में इतने पागल हो गए हैं कि उन्हें अपने परिवार की याद तक नहीं रहती? यह एक गंभीर समस्या है जो हमारे रिश्तों और स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल रही है।

मोबाइल की आदत से हमें कई समस्याएँ हो रही हैं। हम अपने परिवार के साथ कम समय बिताते हैं, हमें अपने बच्चों के साथ खेलने का समय नहीं मिलता, हम अपनी पत्नी के साथ बात नहीं कर पाते। इसके अलावा, मोबाइल की आदत से हमें स्वास्थ्य समस्याएँ भी हो रही हैं।

मोबाइल की आदत से हमें मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ भी हो रही हैं। हम तनाव, चिंता और अकेलापन जैसी समस्याओं से पीड़ित हैं। हम अपने परिवार के साथ जुड़ने की जरूरत महसूस नहीं करते, हम अपने दोस्तों के साथ बात नहीं करते।

इस समस्या का समाधान करना जरूरी है। हमें अपने मोबाइल की आदत को कम करना होगा, हमें अपने परिवार के साथ ज्यादा समय बिताना होगा। हम अपने बच्चों के साथ खेलना होगा, हम अपनी पत्नी के साथ बात करनी होगी। हमें अपने दोस्तों के साथ बात करनी होगी।

सरकार और समाज को भी इस समस्या पर ध्यान देना चाहिए। यह सिर्फ व्यक्ति समस्या नहीं है। समाज और राजनीतिक धरातल पर भी ठोस उपाए किए जाने आवश्यक है। सरकारें डाटा प्रयोग को नियमों में आबद्ध कर इस दिशा में प्रयास कर सकती हैं और सामाजिक रूप से स्कूल, अभिभावक मोबाइल प्रयोग के घंटे घटाने पर विचार कर सकते हैं। हाल ही में एक देश ने तो बच्चों की उम्र निर्धारित करते हुए उस उम्र तक स्क्रीन देखने पर रोक लगा दी है। उल्लंघन की स्थिति में माता-पिता से पूछा जा सकता है। शायद भारत में भी यही करने का समय आ गया है।

वर्तमान परिपेक्ष्य में मोबाइल फोन के सहयोग की लत अति विकराल समस्या का रूप ले चुकी है। हमें इस आदत से छुटकारा पाने के लिए हर समय मोबाइल से चिपके नहीं रहना चाहिए। अति जरूरी होने पर ही फोन का प्रयोग करें। मोबाइल नोटिफिकेशन व्हाटसप मैसेज को ऑफ रखें जिससे बार-बार आपका ध्यान फोन पर न जाएँ। ये छोटे उपाय निश्चय ही कारगर होंगे।

प्रगति पोरवाल
भूमि
रक्षा सम्पदा महानिदेशालय

महाराणा संग्राम सिंह : मेवाड़ का शेर

राजस्थान के सबसे साहसी शूरवीरों में से एक महाराणा सांगा, आज भी उनकी वीरता और बलिदान के लिए याद किये जाते हैं। राणा सांगा मेवाड़ के पूर्व शासक एवं महाराणा प्रताप के पूर्वज थे। उन्होंने मेवाड़ पर साल 1509 से 1528 तक शासन किया। विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध राणा सांगा ने सभी राजपूतों को एकजुट किया। राणा सांगा को एक बहादुर योद्धा व शासक होने के साथ ही वीरता और उदारता के लिये भी जाना जाता है।

प्रारंभिक जीवन

चित्तौड़, राजस्थान के राजा राणा रायमल के यहां 12 अप्रैल 1482 में महाराणा संग्राम सिंह यानी की राणा सांगा का जन्म हुआ। राणा सांगा अपने भाइयों में सबसे छोटे थे।

इतिहासविदों द्वारा बताया जाता है कि एक भविष्यकर्ता द्वारा सांगा को मेवाड़ का आगामी शासक बताया गया, जिसके बाद सांगा के बड़े भाइयों, कुंवर पृथ्वीराज व जयमल ने अपनी तलवारों से मौत के घाट उतारने के लिए उनपर वार किया। संग्रामसिंह ने बचाव तो किया लेकिन उनकी एक आंख फूट गई। तभी उनके काका सूरजमल वहां आ गए और संग्रामसिंह बच गए।

जिसके बाद वह मेवाड़ छोड़कर अजमेर पलायन कर गए और वहां पर कर्मचन्द पंवार की पनाह ली। वहां पर वे कुछ समय तक अज्ञातवास में रहे और इसी बीच अपनी शक्ति को भी संगठित किया। इस दौरान पृथ्वीराज की भी मृत्यु हो गई और जयमल भी सोलंकिओं के साथ युद्ध में मारे गए। इसके अतिरिक्त सूरजमल की भी हत्या पृथ्वीराज के द्वारा कर दी गई। इस प्रकार संग्राम सिंह के लिए रास्ता पूरी तरीके से साफ हो गया तथा 1509 ई में मेवाड़ वापसी पर उनका राजतिलक हुआ। राणा सांगा ने अपने अदम्य साहस, सैनिकों की कमान और कूटनीतिक रणनीतियों के माध्यम से मेवाड़ की समृद्धि और आधिपत्य को बहाल किया। राणा सांगा की पत्नी का नाम कर्णावती था। जिनसे उनको 4 पुत्र हुए, जिनके नाम नाम रतन सिंह द्वितीय, उदय सिंह द्वितीय, भोज राज और विक्रमादित्य सिंह थे।

सैन्य वृत्ति

कहा जाता है कि कि सांगा ने 100 लड़ाइयाँ लड़ीं और सिर्फ एक में हारे। अलग-अलग लड़ाइयों के दौरान, उन्होंने अपनी कलाई खो दी और उनके पैर में लकवा मार गया। सांगा ने दिल्ली, मालवा और गुजरात के सुल्तानों के साथ 18 युद्ध लड़े और आधुनिक राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा, गुजरात के उत्तरी हिस्से और अमरकोट, सिंध के कुछ हिस्सों पर विजय प्राप्त करके अपने राज्य का विस्तार किया।

1305 ई. में परमार साम्राज्य के पतन के बाद, उन्होंने पहली बार मालवा में राजपूत सत्ता को फिर से स्थापित किया। उन्होंने जजिया कर को भी समाप्त कर दिया, जिसे पहले मुस्लिम शासकों द्वारा हिंदुओं पर लगाया जाता था। वह उत्तरी भारत के अंतिम स्वायत्त हिंदू राजा थे जिन्होंने एक बड़े क्षेत्र को नियंत्रित किया और उन्हें कुछ समकालीन साहित्य में हिंदू सम्राट के रूप में संदर्भित किया गया है।

शासन

सिटी पैलेस उदयपुर में राणा सांगा की प्रतिमा।

महाराणा सांगा ने सभी राजपूत राज्यों को संगठित किया और सभी राजपूत राज्य को एक छत्र के नीचे लाएं। उन्होंने सभी राजपूत राज्यों से संधी की और इस प्रकार महाराणा सांगा ने अपना साम्राज्य उत्तर में पंजाब सतलुज नदी से लेकर दक्षिण में मालवा को जीतकर नर्मदा नदी तक कर दिया। पश्चिम में में सिंधु नदी से लेकर पूर्व में बयाना भरतपुर ग्वालियर तक अपना राज्य विस्तार किया इस प्रकार मुस्लिम सुल्तानों की डेढ़ सौ वर्ष की सत्ता के पश्चात इतने बड़े क्षेत्रफल हिंदू साम्राज्य कायम हुआ इतने बड़े क्षेत्र वाला हिंदू सम्राज्य दक्षिण में विजयनगर सम्राज्य ही था। दिल्ली सुल्तान इब्राहिम लोदी को खातोली व बाड़ी के युद्ध में 2 बार परास्त किया और और गुजरात के सुल्तान को हराया व मेवाड़ की तरफ बढ़ने से रोक दिया। बाबर को बयाना के युद्ध में पूरी तरह से राणा ने परास्त किया और बाबर से बयाना का दुर्ग जीत लिया। इस प्रकार राणा सांगा ने भारतीय इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ दी। 16वीं शताब्दी के सबसे शक्तिशाली शासक थे इनके शरीर पर 80 घाव थे। इनको हिंदुपत की उपाधि दी गयी थी। इतिहास में इनकी गिनती महानायक तथा वीर के रूप में की जाती है।

गुजरात पर विजय

गुजरात के सुल्तान मुजफ्फर से राणा सांगा का युद्ध ईडर के चलते हुआ। ईडर के राव भाण के 2 पुत्र सूर्यमल और भीम थे। सूर्यमल के बाद उनका बेटा रायमल ईडर का उत्तराधिकारी बन कर गद्दी पर बैठा। लेकिन इसी दौरान रायमल के चाचा भीम ने गद्दी पर कब्जा कर लिया। जिसके बाद रायमल ने मेवाड़ के महाराणा सांगा से शरण मांगी। राणा सांगा ने रायमल के साथ अपनी पुत्री की सगाई कर दी। रायमल को उसकी गद्दी वापस दिलाने के लिए 1517 में महाराणा सांगा ने भीम के पुत्र भारमल को हटाकर ईडर का शासक पुनः रायमल को बनाया।

राणा सांगा द्वारा रायमल की मदद किए जाने पर गुजरात का सुल्तान मुजफ्फर उन पर भड़क गया और अहमदनगर में जागीरदार निजामुद्दीन को युद्ध के लिए भेजा। लेकिन यहां पर निजामुद्दीन को हार का सामना करना पड़ा था। इसके बाद गुजरात के सुल्तान ने मुवारिजुल्मुल्क को भेजा। लेकिन सभी को हार मिली। 1520 में सुल्तान ने मलिक अयाज तथा किवामुल्मुल्क के नेतृत्व में अलग-अलग सेनाएं मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिए भेजी। लेकिन किन्हीं कारणों से उनकी सेना आगे नहीं बढ़ सकी और उन्हें वापस लौटना पड़ा। कई लड़ाइयों के बाद, सांगा ने सफलतापूर्वक उत्तरी गुजरात पर कब्जा कर लिया और अपने एक जागीरदार को शासक बना दिया।

मालवा पर विजय

1519 में गुजरात और मालवा की संयुक्त मुस्लिम सेनाओं के बीच राजस्थान में गागरोन के निकट राणा सांगा के नेतृत्व में गागरोन की लड़ाई लड़ी गई थी। राजपूत संघ की जीत ने उन्हें चंदेरी किले के साथ-साथ मालवा के अधिकांश हिस्सों पर अधिकार कर लिया। मालवा के सिलहदी और मेदिनी राय जैसे शक्तिशाली राजपूत नेताओं के समर्थन के कारण मालवा की विजय राणा सांगा के लिए आसान हो गई। जब युद्ध में मालवा का सुल्तान महमूद द्वितीय घायल होकर रणक्षेत्र में गिर गया तो राजपूतों ने उसे उठाकर महाराणा के पास पहुंचाया। महाराणा सम्मान के साथ उसे पालकी में बिठाकर चित्तौड़ ले आए, वहां उसका इलाज करवाया और कुछ रोज बाद उसे फौज का खर्च और जड़ाऊ ताज देकर एक हज़ार राजपूतों के साथ इज्जत से उसकी राजधानी माण्डू पहुंचा दिया। उसका राज्य भी उसे वापस कर दिया। पराजित शत्रु के साथ ऐसा व्यवहार भारत के इतिहास में शायद ही कहीं देखा गया है। इसके बाद मेदिनी राय ने चंदेरी को अपनी राजधानी बनाया और राणा सांगा का एक विश्वसनीय जागीरदार बन गया। इस युद्ध में विजय प्राप्त करने से चंदेरी के किले के अलावा मालवा के अधिकांश हिस्सों पर राणा का कब्जा हो गया। मालवा में अपनी सत्ता स्थापित करने के बाद राणा सांगा ने मेदिनी राय को हिंदुओं पर लगाए जा रहे जज़िया कर को खत्म करने का आदेश दिया।

लोदी पर विजय

खतोली का युद्ध

इब्राहिम लोदी ने, अपने क्षेत्र पर संघ द्वारा अतिक्रमण की खबरें सुनने के बाद, एक सेना तैयार की और 1517 में मेवाड़ के खिलाफ तीस हज़ार अश्वारोही और तीन सौ हाथी के साथ आक्रमण किया। राणा अपनी सेना के साथ राणा लोदी की सीमाओं पर खतोली में लोदी से मिले और खतोली में आगामी लड़ाई में, लोदी सेना को गंभीर चोट लगी। लोदी सेना बुरी तरह परास्त होकर भाग गई। एक लोदी राजकुमार को पकड़ लिया गया और कैद कर लिया गया। कहा जाता है कि इस युद्ध में राणा सांगा का बायां हाथ कट गया था और उनके घुटने में तीर लगने के कारण वह लंगड़े हो गए थे।

धौलपुर का युद्ध

इब्राहिम लोदी ने हार का बदला लेने के लिए, अपने सेनापति मियां माखन के तहत एक सेना सांगा के खिलाफ भेजी। राणा ने फिर से बाड़ी धौलपुर के पास बाड़ी युद्ध 1518 ई को लोदी सेना को परास्त किया और लोदी को बयाना तक पीछा किया। इन विजयों के बाद, सांगा ने आगरा की लोदी राजधानी के भीतर, फतेहपुर सीकरी तक का इलाका खाली कर दिया। इन विजयों के परिणामस्वरूप राणा संग्रामसिंह के राज्य की सीमा आगरा के पास तक पहुंच गई। इब्राहिम लोदी का मानमर्दन करने से राणा सांगा की विजय गाथा की चर्चा सारे उत्तरी भारत में हुई।

16वीं शताब्दी के एक ग्रंथ "पार्श्वनाथ-श्रवण-सत्तवीसी" के अनुसार, राणा सांगा ने मंदसौर की घेराबंदी के बाद रणथंभौर में भी इब्राहिम लोदी को हराया।

मुगलों से संघर्ष

बाबर अपने संस्मरण 'बाबरनामा' में राणा सांगा को सबसे शक्तिशाली शासक बताता है जिसने अपनी तलवार के बल पर ऊंचा स्थान हासिल किया था। कर्नल टाड के अनुसार, उनके पास 80 हज़ार घोड़े, ऊंचे दर्जे के सात राजा, 9 राव और 104 रावल थे। 500 हाथी उनकी सेना में थे। मारवाड़ और आम्बेर उन्हें सम्मान देते थे और ग्वालियर, अजमेर, सीकरी, रायसेन, कालपी, चंदेरी, बूंदी, गागरौन, रामपुरा और आबू के राजा उन्हें अपना अधिपति मानते थे।

जब राणा सांगा की आभा से उत्तर भारत आलोकित हो रहा था, तभी भारत की उत्तरी सीमा से होकर ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर नाम का आक्रांता काबुल तक आ चुका था और पंजाब में क़दम रखकर दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम लोदी पर आक्रमण करने की योजना बना रहा था। बाबर अपनी आत्मकथा 'बाबरनामा' में लिखता है- 'जब मैं काबुल में था, तो मेरे पास राणा सांगा का राजदूत आया था। उसके साथ यह तय हुआ था कि राणा सांगा अपनी सेना के साथ दिल्ली की ओर चढ़ें और इधर से मैं आगरे की तरफ़ चढ़ाई करूंगा। लेकिन मैंने लोदी को जीतकर दिल्ली व आगरे पर अधिकार कर लिया, तो भी वह नहीं आया।' उधर राणा सांगा ने बाबर पर आरोप लगाया कि उसने कालपी, धोलपुर और बयाना पर क़ब्ज़ा कर लिया, जबकि समझौते की शर्तों के अनुसार ये स्थान उन्हें मिलने चाहिए थे। हो सकता है कि राणा सांगा ने सोचा होगा कि बाबर पहले के आक्रमणकारियों की तरह माल लूटकर वापस चला जाएगा, लेकिन यह उनका भ्रम निकला। जब उन्होंने देखा कि बाबर ने तो राज करना तय कर लिया है तो इस ख़तरे से वो सचेत हो गए होंगे और फिर बाबर की सहायता करना मुनासिब नहीं समझा होगा।

21 अप्रैल 1526 को, तैमूरिद राजा बाबर ने पांचवीं बार भारत पर आक्रमण किया। खानवा की ओर जो भी हो, बाबर ने अपनी कम सेना के बावजूद पानीपत के पहले युद्ध में दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम लोदी की विशाल सेना को पराजित किया और दिल्ली-आगरा पर क़ब्ज़ा कर लिया। राणा सांगा जैसे वीर और महत्वाकांक्षी योद्धा ने इस विदेशी आक्रांता को देश के बाहर निकालने का संकल्प किया और सभी राजपूतों के सहयोग से एक लाख राजपूतों शक्तिशाली सेना जुटाई और आगरा के लिए उन्नत किया।

बयाना का युद्ध

मुगलों ने बयाना किले पर क़ब्ज़ा कर लिया जो सांगा के साम्राज्य का हिस्सा था इसलिए फरवरी 1527 में राणा ने बयाना पर आक्रमण किया और वहां के गवर्नर मेहदी ख्वाज़ा को हराकर बयाना के क़िले में बंद रहने के लिए मजबूर कर दिया। राणा के साथ बहुत-से शक्तिशाली सरदार हो लिए, जिनमें रायसेन का सिलहदी, हसन खां मेवाती और इब्राहीम लोदी का भाई महमूद लोदी भी था। राणा ने मान लिया कि बाबर पर विजय हासिल करने के बाद महमूद लोदी को दिल्ली का सिंहासन सौंप दिया जाएगा। अब बाबर ने एक सैनिक टुकड़ी बयाना की सहायता के लिए भेजी, लेकिन वहां के दुर्ग रक्षकों से मुठभेड़ में बाबर की सेना कामयाब न हो सकी और घबराकर भाग खड़ी हुई। पराजित सैनिकों ने वापस लौटने पर राजपूतों के शौर्य, साहस और वीरता के क्रिस्से बाबर को सुनाए। इस समय तक बाबर सीकरी पहुंच चुका था, जहां राणा सांगा पहले ही खानवा के पास एक पहाड़ी तक चढ़ आए थे। खानवा वर्तमान भरतपुर राज्य का एक गांव था। यह आगरा के पश्चिम में 37 मील और सीकरी से 10 मील दूर था। बाबर ने 1,500 सैनिकों का एक दल शत्रु की स्थिति का निरीक्षण करने के लिए भेज दिया। ये भी बुरी तरह पराजित हुए और वहां से खदेड़ दिए गए। अब बाबर एक अत्यंत विषम स्थिति में पड़ गया था। उसकी सेना घबरा गई थी और राजपूतों के पराक्रम से भयभीत होने लगी थी। इसी बीच काबुल के ज्योतिषी मुहम्मद शरीफ़ ने बाबर को बताया कि मंगल का तारा सामने है, इसलिए बाबर की फ़ौज की ज़रूर हार होगी। इससे मुगल सेना और घबरा गई और वापस लौटने की बात करने लगी।

खानवा का युद्ध

बाबर के लिए यह ज़रूरी हो गया था कि वह किसी तरह अपने साथियों का साहस बढ़ाए। वो मदिरापान का बहुत शौकीन था लेकिन अब उसने मदिरापान छोड़ने की घोषणा करते हुए अपने अधिकारियों तथा सैन्य समूहों के सामने क़ीमती मदिरा धरती पर उड़ेल दी और मदिरा के क़ीमती पात्रों को तोड़-फोड़ डाला। इसके अलावा उसने मुसलमानों पर से तमगा नामक कर हटा दिया, जिसे मुसलमान बहुत नापसंद करते थे। इतने पर भी उसके साथियों की हिम्मत नहीं बढ़ी। इस पर उसने अपने फ़ौजी साथियों की एक सभा आयोजित की और उन्हें संबोधित करते हुए वचन दिया कि विजय के बाद जो कोई अपने घर जाना चाहेगा, उसको जाने की अनुमति दे दी जाएगी। उसने राणा सांगा के खिलाफ़ जिहाद तो पहले ही घोषित कर दिया था। बाबर की ये युक्तियां कारगर साबित हुईं और सैनिकों में उत्साह का संचार हुआ। इसी बीच बाबर के कुछ सैनिकों ने आगे बढ़कर राणा की सेना के कुछ भटके हुए इक्का-दुक्का लोगों पर आक्रमण कर दिया और उनके सिर काटकर सेना के सामने ले आए। इससे मुगल सेना की हिम्मत बढ़ने में और सहायता मिली।

राणा सांगा और मुगल बादशाह बाबर के बीच 1527 में खानवा का युद्ध हुआ था। बाबर और राणा की सेना लगभग एक सामान थी। लेकिन फर्क इतना था कि मुगल बादशाह बाबर के पास गोला-बारुद थे और महाराणा सांगा के पास साहस और वीरता थी। लगभग इसी समय, रायसेन की सिल्हदी ने राणा की सेना को छोड़ दिया और बाबर के पास चला गया। सिल्हदी के दलबदल ने राणा को अपनी योजनाओं को बदलने और नए आदेश जारी करने के लिए मजबूर किया।

बाबर ने अपनी व्यूह रचना कुछ संशोधनों के साथ पानीपत के युद्ध जैसी ही की। राजपूतों के लिए मुगलों का तोपखाना भयंकर सिद्ध हुआ। वे इसका अधिक समय तक सामना न कर सके और उनका साहस टूटने लगा। बाबर की सेना के पीछे स्थित तुलगमा के घुड़सवारों ने इसके बाद इस प्रकार धावा किया कि राजपूत बिखर गए।

जिसके बाद बाबर से युद्ध करते हुए राणा सांगा की आंख में तीर लगा, लेकिन इसके बाद भी वह युद्ध करते रहे। इसी युद्ध में महाराणा सांगा को 80 घाव आए थे। राणा की बहादुरी देख मुगल बादशाह बाबर के भी होश उड़ गए थे। बहादुरी और वीरता से लड़ने वाले राणा सांगा को इस 20 घंटे चले युद्ध में हार का सामना करना पड़ा।

मृत्यु और उत्तराधिकार

राणा सांगा घायल हो गए और उनके अनुगामी उन्हें बसवा नामक सुरक्षित स्थान पर ले गए। राणा सांगा के सहयोगी हसन मेवाती और अन्य प्रमुख सरदार वीरगति को प्राप्त हुए, लेकिन महमूद लोदी साफ़ बचकर निकल गया।

जब गंभीर रूप से घायल राणा सांगा की चेतना लौटी तो उन्हें बहुत निराशा हुई और उन्होंने खुद को रणथम्भौर के महल में बंद कर लिया। एक भाट बहुत कठिनाई से राणा के पास पहुंचा। वह हिंदू पुराणों के वीरों की असफलताओं के बाद सफलताओं के जोशीले दृष्टांत प्रस्तुत करके राणा में उत्साह का संचार करने में कामयाब हुआ। उस समय बाबर ने खानवा से चलकर चंदेरी पर घेरा डाल रखा था।

राणा सांगा ने तय किया कि वे बाबर से मुक़ाबला करने चंदेरी रवाना होंगे। लेकिन राणा के साथी सरदार अब युद्ध के लिए तैयार नहीं थे और उन्होंने युद्ध से बचने के लिए राणा सांगा को ज़हर दे दिया। इसी ज़हर से 30 जनवरी, 1528 को राणा का निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार माण्डलगढ़ में हुआ। उधर बाबर ने राणा के निधन के एक दिन पहले ही चंदेरी के क़िले पर अधिकार कर लिया था।

जनवरी 1528 या 20 मई, 1528 को कालपी में उनकी मृत्यु के बाद रतन सिंह द्वितीय ने उनका स्थान लिया। सांगा की हार के बाद, उनके जागीरदार मेदिनी राय को चंदेरी की घेराबंदी के दौरान बाबर ने हराया और बाबर ने राय साम्राज्य की राजधानी चंदेरी पर विजय प्राप्त की। मेदिनी को चंदेरी के बजाय शम्शाबाद की पेशकश की गई क्योंकि यह मालवा की विजय में ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण था, लेकिन राय ने मना कर दिया और लड़ते हुए मरने का विकल्प चुना। बाबर की सेना से अपने सम्मान को बचाने के लिए, राजपूत महिलाओं और बच्चों ने आत्मदाह कर लिया। अपनी जीत के बाद, बाबर ने मालवा और चंदेरी पर कब्ज़ा कर लिया, जो पहले राय द्वारा शासित थे।

मुगल विजय को उत्तर भारत की मुगल विजय में एक महत्वपूर्ण क्षण के रूप में देखा जाता है, क्योंकि यह संघर्ष पानीपत की तुलना में अधिक ऐतिहासिक और घटनापूर्ण साबित हुआ, क्योंकि इसने खतरनाक और पुनर्जीवित राजपूत शक्तियों को कुचलते हुए बाबर को उत्तर भारत के निर्विवाद स्वामी के रूप में स्थापित किया।

अक्षुण्ण रहा गौरव

राणा सांगा का तो अंत हो गया लेकिन राजपूतों के शौर्य ने बाद में भी एकाधिक बार शत्रुओं को चुनौती दी। राजपूत कुछ साल में फिर उठ खड़े हुए और गुजरात के बहादुरशाह तथा दिल्ली के शेरशाह को उनसे मुक़ाबला करना पड़ा। जोधपुर के घेरे में तो राजपूतों ने शेरशाह से हुए युद्ध में इतनी वीरता प्रदर्शित की कि शेरशाह को लगा वह हार जाएगा और साम्राज्य उसके हाथ से निकल जाएगा। उस समय का इतिहासकार अब्बास सरवानी अपनी किताब 'तारीखे शेरशाही' में लिखता है कि ऐसे समय शेरशाह के मुंह से निकला- 'बराए एक मुश्त ए बाजरा, बादशाही हिंदुस्तान रा बरबाद ददाह बूदम' यानी एक मुट्ठी बाजरे के लिए मैंने हिंदुस्तान के साम्राज्य को संकट में डाल दिया था। यह भी उल्लेखनीय है कि राणा सांगा पर विजय हासिल करने के बाद भी बाबर की हिम्मत राजस्थान पर आक्रमण करने या बहादुर राजपूतों को नाराज़ करने की नहीं हुई।

कविता संग्रह

कवि परिचय दुष्यंत कुमार हिन्दी की क्रांतिकारी कवियों में एक मूर्धन्य नाम है। आपकी कविताएं हमेशा से समसामयिक रही हैं, हालांकि कविताएं विरोध के स्वर से भरी हैं किन्तु रचनात्मक स्तर पर कहीं न कहीं कवि का विरोध व्यवस्था से अधिक अपने आप से है। और यही इनकी कविताओं में भी परिलक्षित होता है।

आग जलती रहे

एक तीखी आँच ने
इस जन्म का हर पल छुआ,
आता हुआ दिन छुआ
हाथों से गुजरता कल छुआ
हर बीज, अंकुआ, पेड़ पौधा,
फूल-पत्ती, फल छुआ
जो मुझे छुने चली
हर उस हवा का आँचल छुआ !

...प्रहर कोई भी नहीं बीता छूता
आग के सम्पर्क से
दिवस, मासों और वर्षों के कड़ाहों में
मैं उबलता रहा पानी-सा
परे हर तर्क से।

एक चौथाई उमर
यों खौलते बीती बिना अवकाश
सुख कहाँ
यों भाप बन-बनकर चुका,

रीता,
भटकता -
छानता आकाश!

आह! कैसा कठिन
...कैसा पोच मेरा भाग!
आग, चारों ओर मेरे
आग केवल भाग!

सुख नहीं यों खौलने में सुख नहीं कोई,
पर अभी जागी नहीं वह चेतना सोयी -;
वह, समय की प्रतिज्ञा में है, जगेगी आप
ज्यों कि लहराती हुई ढकनें उठाती भाप!

अभी तो यह आग जलती रहे, जलती रहे
ज़िंदगी यों ही कड़ाहों में उबलती रहे।

परम्परा-वियुक्त

दुनिया की चारदीवारी में
ये हम जो सुनते हैं आवाजें
ये सब माँ से बिछुड़े बालक हैं:

आँगन में लोट रहे, चीख रहे
माथे को पीट-पीट
पांवों को पटक रहे
बालों को नोच रहे
ये सब माँ से बिछुड़े बालक हैं:

मेले में भटके होते तो
कोई घर पहुँचा जाता
ये घर में भटके हैं :

मैंने तो कई बार समझाया इन्हें
कहा - 'सुख लो परिस्थिति से,
घर की स्वतन्त्रता से,
ड्राइंग-रूम में जाकर बैठो
सोफ़ों पर कूदो
पर्दे झिझोड़ दो,

जिन्हें मना करती थी माँ
वे प्लेटे, वे प्याले तोड़ दो;
घर को इस चारदीवारी को
खेल-खेल में ही
तूफान से भर दो,
चमकदार सीमेंटेड दीवारें
माथों से फोड़ दो,
काली कर दो।'

पर ये नहीं माने, रोते रहे।
मेरे समझाने पर
और भी अधिक विहल होते रहे।

तब मैंने कहा-
'लो, तुम्हारी माँ अब आयी,
मार्केट तक गई है
खिलौने लायेगी
चुप हो जाओ तो
अभी लोट आयेगी।'

मगर नहीं

प्रकट की अनास्था
हर खेल हर खिलौने पर
अविश्वास मेरे आश्वासन पर
स्वर में आशंकाऔ भय भरकर
केवल यही पूछा –
माँ कब तक आयेगी?

वर्षों से बिछुड़े
ये सब बालक
अब तक भी रोते हैं
मेरे समझाने पर
और भी अधिक विहल होते हैं।

अब इनको कोई तो समझाये
अपने आशीष छोड़
हर माँ मर जाती है
केवल मँडराते रह जाते हैं कुछ साये।

एक मित्र के नाम

मैं भी तो भोक्ता हूँ
इस परिस्थिति का मित्र!
मेरे भी माथे पर
हैं दुख के मानचित्र।

मैंने न समझा तो
और कौन समझेगा?
मौन जो रहा है खुद
वही मौन समझेगा

अर्थ मैं समझता हूँ
इन बुझी निगाहों का
जी रहा ठहाकों पर
पुंज हूँ व्यथाओं का।

कई रास्तों पर बस
दृष्टि फेंक सकता हूँ,
प्राप्त कर नहीं सकता
स्वप्न देख सकता हूँ।

संकट में घिरे हुए
वचन-बद्ध यौद्धा-सा
शस्त्रों को छू भी लूँ
तो चला नहीं सकता

अनजानी लगती है
अपनी ही हर पुकार
छू-छूकर लौट-लौट आती
हर गली-द्वार।

अनुभव की वंशी में
बिधा पड़ा है जीवन
क्षण-भर का पागलपन
पूरा यौवन उन्मन

लगता है तुमको भी
शूल चुभा है कोई।
किशती से अनदेखा
कूल चुभा है कोई!
जौवन के सागर में
यौवन के घाट पर
चला गया लगता है
प्यार दर्द बाँट कर

पर अब तुम जियो
कहो – कोई तो बात नहीं!
रण में योद्धाओं की
हार-जीत हाथ नहीं!

एक दांव हारे हैं
एक जीत जायेंगे,
जीवन के कै दिन हैं
अभी बीत जायेंगे।

राजभाषा अनुभाग

हिन्दी पखवाड़ा - 2023 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेता

नोटिंग ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता

1. मुनेश कुमार मीना, एएसओ, समन्वय (प्रथम)
2. प्रिंस आर के, कार्यालय अधीक्षक, इन्फ्रा, (द्वितीय)
3. राजीव कुमार गुप्ता, एसडीओ-1, भूमि, (तृतीय)
4. मुकेश कुमार सिन्हा, उच्च श्रेणी लिपिक, भूमि, (सांत्वना)

हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

1. राजीव कुमार गुप्ता, एसडीओ-1, भूमि, (प्रथम)
2. सुनील तंवर, एसडीओ-1, सर्वेक्षण, (द्वितीय)
3. राहुल कुमार, ए एस ओ, समन्वय, (तृतीय)
4. सचिन, वैयक्तिक सहायक, अधिग्रहण, (सांत्वना)

श्रुतलेख प्रतियोगिता (केवल डाटा एंट्री ऑपरेटर एवं एमटीएस हेतु)

1. प्रिया, डाटा एंट्री ऑपरेटर, भूमि, (प्रथम)
2. आकाश, डाटा एंट्री ऑपरेटर, समन्वय (द्वितीय)
3. रचना, डाटा एंट्री ऑपरेटर, प्रशासन, (तृतीय)
4. मंजिल, डाटा एंट्री ऑपरेटर, इन्फ्रा, (सांत्वना)

शब्द वाक्यांश एवं अनुवाद

1. मुनेश कुमार मीना, ए एस ओ, समन्वय, (प्रथम)
2. विनोद कुमार, वैयक्तिक सहायक, प्रशासन, (द्वितीय)
3. धर्मराज जाट, एसडीओ-II, समन्वय, (तृतीय)
4. रूपेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक, प्रशासन, (सांत्वना)

आजादी का अमृत महोत्सव

1. विक्रम सिंह राजपूत, आशुलिपिक, प्रशासन, (प्रथम)
2. दिनेश कुमार, एसडीओ-1, सर्वे, (द्वितीय)
3. प्रभात कुमार, ए एस ओ, समन्वय, (तृतीय)
4. सोनू पाल, कार्यालय अधीक्षक, अधिग्रहण, (सांत्वना)

हिन्दी प्रश्नोत्तरी (केवल डाटा एंट्री ऑपरेटर एवं एम टी एस स्टाफ हेतु)

1. (टीम-A), (प्रथम)

कपिल सिंह यादव, प्रोग्रामर, आई टी
दीपक कुमार तिवारी, डाटा एंट्री ऑपरेटर, रजिस्ट्री
अंकित आहुजा, प्रोग्रामर, आई टी
मुकेश खोत, डाटा एंट्री ऑपरेटर, प्रशासन

रचना, डाटा एंटी ऑपरेटर, प्रशासन
वन्दना, डाटा एंटी ऑपरेटर, भूमि
आकांक्षा, डाटा एंटी ऑपरेटर, सतर्कता

2. (टीम-ए), (द्वितीय)

मुनेश कुमार मीना, ए एस ओ, समन्वय
कविता, उप मंडल अधिकारी-1, भूमि
धीरेन्द्र तिवारी, कंप्यूटर प्रोग्रामर, आई टी
राजीव कुमार गुप्ता, एसडीओ-1, भूमि
शालिनी, डाटा एंटी ऑपरेटर, भूमि
प्रगति पोरवाल, डाटा एंटी ऑपरेटर, भूमि
नितिन, डाटा एंटी ऑपरेटर, सतर्कता

3. (टीम-0), (तृतीय)

रूपेश कुमार, कार्यालय अधीक्षक, प्रशासन
बबलू कुमार सैनी, कनि. सचि. सहायक, समन्वय
लोकेश कुमार मीना, ए एस ओ, भूमि
पवन कुमार तिवारी, डाटा एंटी ऑपरेटर, आई टी
नरेन्द्र चौहान, एम टी एस, भूमि
राजेश कुमार, डाटा एंटी ऑपरेटर, एसएडीजी सचिवालय
जितेन्द्र, डाटा एंटी ऑपरेटर, अधिग्रहण

4. (टीम-8), (सांत्वना)

आकाश, डाटा एंटी ऑपरेटर, समन्वय
जितेन्द्र डडवाल, प्रोग्रामर, आई टी
निशा, एम टी एस, भूमि
सुषमा, डाटा एंटी ऑपरेटर, अधिग्रहण
सिमरन, डाटा एंटी ऑपरेटर, अधिग्रहण-1
प्रदीप मिश्र, प्रोग्रामर, आई टी
कुसुमलता, डाटा एंटी ऑपरेटर, अधिग्रहण-1

वाद-विवाद प्रतियोगिता

1. सतेन्द्र कुमार यादव, अनुभाग अधिकारी, सतर्कता, (प्रथम)
2. कपिल सिंह यादव, प्रोग्रामर, आई टी, (द्वितीय)
3. मयंक शर्मा, प्रोग्रामर, आई टी, (तृतीय)
4. दिनेश कुमार, एसडीओ-1, सर्वे, (सांत्वना)

काव्य पाठ प्रतियोगिता

1. कपिल सिंह यादव, प्रोग्रामर, आई टी, (प्रथम)
2. कविता, एसडीओ-1, भूमि, (द्वितीय)
3. भावनाबाई माहुले, एसडीओ-1। अधिग्रहण (तृतीय)
4. सोनू पाल, कार्यालय अधीक्षक, अधिग्रहण, (सांत्वना)

राजभाषा अनुभाग के कार्यकलाप

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय अर्थात रक्षा सम्पदा संगठन के मुख्यालय का राजभाषा अनुभाग संगठनात्मक स्तर पर संघ की राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की मॉनीटरिंग एवं संगठन के अधीनस्थ कार्यालयों में उसके कार्यान्वयन तथा प्रचार-प्रसार पर अपनी नजर बनाए रखता है। संघ की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करने की दृष्टि से केंद्र सरकार द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय को अनेक दायित्व सौंपे गए हैं जिनमें हिन्दी भाषा का प्रसार एवं उसका विकास सम्मिलित हैं जिससे कि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

राजभाषा अनुभाग संघ की राजभाषा नीति से संबंधित विशेष दायित्वों का निर्वहन करता है:-

(i) यह अनुभाग सुनिश्चित करता है कि राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले सभी कागजात द्विभाषी रूप में ही जारी हों। हालांकि कार्यालय प्रमुख भी यह सुनिश्चित करता है किन्तु राजभाषा अनुभाग इस कार्य में उनका सहयोग करता है।

(ii) राजभाषा अनुभाग ही मुख्यालय एवं अधीनस्थ कार्यालयी स्तर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा वार्षिक कार्यक्रम के अन्तर्गत राजभाषा हिन्दी से संबंधित निर्धारित लक्ष्यों का अनुपालन सुनिश्चित करता है।

(iii) महानिदेशालय में नियमित रूप से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों, हिन्दी कार्यशालाओं एवं हिन्दी पखवाड़े का आयोजन, अधीनस्थ कार्यालयों का राजभाषायी निरीक्षण, केंद्र सरकार द्वारा लाई जा रही विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं लागू करना इत्यादि कार्य भी राजभाषा अनुभाग द्वारा सफलतापूर्वक किए जाते हैं।

(iv) राजभाषा अनुभाग संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए जाने वाले निरीक्षणों के दौरान संबंधित अधीनस्थ कार्यालयों को मार्गदर्शन एवं समुचित सहायता भी प्रदान करता है।

उपर्युक्त के आलोक में रक्षा सम्पदा महानिदेशालय के राजभाषा अनुभाग द्वारा पिछले एक वर्ष के दौरान किए गए कामकाज का एक विस्तृत ब्यौरा निम्नानुसार है:-

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, दक्षिण दिल्ली-1 (कार्यालय) के 09 सदस्य कार्यालयों के समूह का नोडल कार्यालय है। नराकास बैठकों में नोडल कार्यालय के रूप में उत्कृष्ट कार्य करने पर महानिदेशालय और राजभाषा अनुभाग की कई बार सराहना की जा चुकी है। राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के साथ-साथ राजभाषा अनुभाग इस समूह के सदस्य कार्यालयों का उचित मार्गदर्शन भी करता है तथा आवश्यकतानुसार उनकी समुचित सहायता भी करता है।

रक्षा सम्पदा महानिदेशालय में 14 से 27 सितंबर, 2023 तक हिन्दी पखवाड़े का भव्य आयोजन किया गया। इस दौरान आयोजित विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/ कर्मचारियों ने बढ-चढकर भाग लिया। विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्कृत किया गया।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों, जिनमें राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की स्थिति का जायजा लेने के लिए समय-समय पर किए जाने वाले राजभाषायी निरीक्षण भी सम्मिलित हैं, के अनुसार मुख्यालय स्तर पर अपने न्यूनतम 25 प्रतिशत अधीनस्थ कार्यालयों (अर्थात रक्षा सम्पदा निदेशालय, निदेम, छावनी बोर्ड, और रक्षा सम्पदा कार्यालय) का राजभाषायी निरीक्षण किया जाता है।

रक्षा सम्पदा संगठन के सभी अधीनस्थ कार्यालयों में भी हिन्दी पखवाड़ा बड़ी धूमधाम से मनाया गया। विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और विजेताओं को प्रशस्ति-पत्र और नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। साथ ही लगभग सभी अधीनस्थ कार्यालयों में नियमित रूप से हिन्दी कार्यशालाएं आयोजित की गईं, जिनमें अधिकाधिक अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। इन कार्यशालाओं के आयोजन से कार्मिकों में हिन्दी में काम करने की झिझक दूर होती है तथा हिन्दी पत्राचार में भी वृद्धि देखने को मिलती है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा अनेक प्रोत्साहन योजनाएं परिचालित की जाती हैं जैसे वर्ष भर में हिन्दी में सर्वाधिक सरकारी कामकाज करने वाले अधिकारियों/कार्मिकों को नकद पुरस्कार से पुरस्कृत की जाने वाली प्रोत्साहन योजना आदि। महानिदेशालय में वर्ष 2022-23 के दौरान हिन्दी में सर्वाधिक काम करने के लिए निम्नलिखित अधिकारियों/ कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए :-

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	अनुभाग	पुरस्कार
1.	श्री मुनेश कुमार मीना, (सहा.अनु.अधि.)	समन्वय	प्रथम
2.	श्री महेंद्र सिंह मीना, अनुभाग अधिकारी	प्रशासन	प्रथम
3.	श्री सोनू पाल, उच्च श्रेणी लिपिक	अर्जन II	द्वितीय
4.	श्री राहुल कुमार, सहायक अनुभाग अधिकारी	समन्वय	द्वितीय
5.	श्री अक्षय कुमार सिंह, कनिष्ठ सचिवालय सहायक	प्रशासन	द्वितीय

महानिदेशालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "सम्पदा भारती" का प्रकाशन भी राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक उल्लेखनीय कदम है। इसमें प्रकाशित लेख, कहानी, कविता, यात्रा-वृत्तांत एवं संस्मरण इत्यादि कार्मिकों की रचना-त्मक प्रतिभा को उजागर करने का एक सार्थक एवं सक्रिय मंच है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी आदेशों के अनुपालन में "सम्पदा भारती" में प्रकाशित रचनाओं के रचनाकारों (प्रत्येक रचनाकार की केवल एक रचना) को गुणवत्ता के आधार पर पारिश्रमिक भी प्रदान किया जाता है।

संक्षेप में, रक्षा सम्पदा संगठन के मुख्यालय का राजभाषा अनुभाग हिन्दी के प्रति अपने कर्तव्यों के निर्वहन को लेकर काफी गंभीर है। सदैव यह प्रयास रहता है कि सौंपे गए दायित्व को सजगता एवं सावधानी के साथ समयबद्ध तरीके से पूरा किया जाए। इस कार्य में महानिदेशक महोदय के मार्गदर्शन में संबंधित उच्च अधिकारियों के बहुमूल्य सुझावों से राजभाषा हिन्दी के प्रोत्साहन संबंधी सभी नीतिगत निर्णयों का सुचारु रूप से कार्यान्वयन संभव हो पाता है।

